



हर-हर महादेव

हमारा देश



MPHIN36951

कुल पृष्ठ : 44, मूल्य : 50 रुपए

वर्ष 01, अंक 04 मासिक पत्रिका

अक्टूबर 2021

# हमारा अभिमान



दीप सभ्यता और संस्कृति की अलौकिकता का प्रतीक

## दीपावली

# गणपति वंदना



जय-जय-जय गणपति मुनिनायक  
गजबदन, गणेश, सिद्धिविनायक ।  
विद्या बुद्धि के हे फल दाता,  
दीन-हीन सब तुम्हरो यश गाता,  
रिद्धि सिद्धि के तुम ही सुख दाता,  
वर माँगा जो जन सब पाता,  
तुम ही हो देवों मे बलिहारी,  
पितु शंकर हैं, भवानी महतारी,  
मातु पिता के आज्ञाकारी,  
पावन दृष्टि, त्रैलोक्य-छवि इनमे ही निहारी,  
असुरों के तुम ही संहारक,  
ऋषि मुनियों के आश्रयदायक,  
सुन लो प्रभु अब अरज हमारी,  
मैं तो हूँ अज्ञानी, अभिचारी,  
कुमति निवारि सुमति बतलाओ,  
भटके राही को राह दिखलाओ ।  
मन कुंठित है, तन है मैला,  
सर पर रखा है, वजनी थैला,  
कैसे मैं तुझको ध्याऊँ,  
अन्तर्मन मे तुझे बसाऊँ,  
ऐसी मुझको युक्ति बताओ,  
सोई आत्मा को झकझोर जगाओ,  
तुझमे ही मैं ध्यान लगाता,  
अपने मे तुझको ही पाता,  
जग से न हो, मेरा कोई नाता  
तेरे शिवाय और न कोई भाता ।  
तुम तो हो जग के स्वामी,  
बना लो मुझको अपना अनुगामी ।  
अक्षर-अक्षर मे आ जाओ,  
रस्वामी' की रचना बन जाओ ।  
शेष मे भी तुम ही अशेष,  
अब तो 'हाँ' कह दो गौरी गणेश ।  
जय-जय-जय गणपति मुनि नायक  
गजबदन, गणेश, सिद्ध विनायक ।।

## वरिष्ठ संरक्षक मंडल

- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी श्री धूमेश्वर धाम
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

## संरक्षक मंडल

- श्री लोकेश चतुर्वेदी • श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन • श्री अरुण कांत शर्मा
- विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
- श्री मनोज भारद्वाज, अनिल जैन, निर्मल वासवानी, महेश

## संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित : प्रमुख परामर्शदाता

## विशेष संवाददाता

- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

## कानूनी सलाहकार

एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता  
ग्वालियर हाईकोर्ट  
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर हाई कोर्ट

## ब्यूरो : अविनाश (उज्जैन संभाग)

## छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चोरे

## मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)

सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

## ब्यूरो राजस्थान

सुभाष सोरल ( फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन- साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन  
संवाददाता इंदौर

## संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

## सलाहकार

- डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- डॉ. मुकेश चतुर्वेदी, • डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
- अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी • सुरेश शर्मा
- नारायणदास गुप्ता, • पीयूष

## मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

## मार्केटिंग मैनेजर

- सुनील • हरशूल • संजू

## डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन  
ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं.  
0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली  
नं. 4, रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर,  
(मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी।  
(सभी चिवादी का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

## विवरणिका

संपादकीय	02
शुभाशीष	03
कवर स्टोरी	04-05
	06-07
समर्पण	8
देश	9
आंदोलन	10-11
अपराध	12
राजनीति	13
पर्यावरण	14
इतिहास	16
परदेस	17
पर्व	18-19
पर्यटन	20-21
स्वास्थ्य	23
डिश	24-25
कोरोना काल	30
जीवनशैली	31
महिला	33
स्वास्थ्य	34-35
ग्लेमर	39-40



संपादकीय

## ‘प्राकृतिक संसाधन कभी खत्म नहीं होंगे’

ग्रीन हाउस प्रभाव- सूर्य की किरणें, कुछ गैसों और वायुमण्डल में उपस्थित कुछ कणों से मिलकर होने की जटिल प्रक्रिया है। कुछ सूर्य की ऊष्मा वायुमण्डल से परावर्तित होकर बाहर चली जाती है। लेकिन कुछ ग्रीन हाउस गैसों के द्वारा बनाई हुई परत के कारण बाहर नहीं जाती हैं। करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी एक तपता (आग) हुआ गोला थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया तपते हुए गोले से सागर, महाद्वीपों आदि का निर्माण हुआ। पृथ्वी पर अनुकूल जलवायु ने मानव जीवन तथा अन्य जीव सृष्टि को जीवन दिया जिससे इन सबका जीवन-अस्तित्व कायम रखने वाली प्रकृति का निर्माण हुआ। मानव प्रकृति का हिस्सा है। प्रकृति व मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति के बिना मानव की परिकल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति दो शब्दों से मिलकर बनी है- प्र और कृति। प्र अर्थात् प्रकृष्टि (श्रेष्ठ/उत्तम) और कृति का अर्थ है रचना। कहने का तात्पर्य प्रकृति के द्वारा ही समूचे ब्रह्माण्ड की रचना की गई है। प्रकृति दो प्रकार की होती है- प्राकृतिक प्रकृति और मानव प्रकृति। प्राकृतिक प्रकृति में पांच तत्व- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश शामिल हैं। मानव प्रकृति में मन, बुद्धि और अहंकार शामिल हैं। प्रकृति और मनुष्य के बीच बहुत गहरा संबंध है। मनुष्य के लिए प्रकृति से अच्छा गुरु नहीं है। प्रकृति की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह अपनी चीजों का उपभोग स्वयं नहीं करती। जैसे- नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती, पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते, फूल अपनी खुशबू पूरे वातावरण में फैला देते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि प्रकृति किसी के साथ भेदभाव या पक्षपात नहीं करती, लेकिन मनुष्य जब प्रकृति से अनावश्यक खिलवाड़ करता है तब उसे गुस्सा आता है। जिसे वह समय-समय पर सूखा, बाढ़, सैलाब, तूफान के रूप में व्यक्त करते हुए मनुष्य को सचेत करती है।

मनोज चतुर्वेदी  
संपादक

# == शुभाशीष ==



## बढ़ रही है सनातन धर्म की स्वीकार्यता

दीपावली के पावन पर्व पर अभी हाल ही में दो समाचारों ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। एक समाचार के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका की संसद में एक बिल लाया जा रहा है जिसके पास होने के उपरांत दीपावली के पावन पर्व पर अमेरिका में भी राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा की जा सकेगी। अतः दीपावली के दिन अमेरिका में भी राष्ट्रीय अवकाश रहेगा, जिस प्रकार आज भारत में रहता है। भारत से हजारों मील दूर, सात समुद्र पार, भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिक एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के 33 करोड़ से अधिक नागरिक अब राष्ट्रीय अवकाश के दिन दीपावली के पावन पर्व को मना सकेंगे। इतिहास पर यदि नजर डालें तो आप पायेंगे कि इसके पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अमेरिका के राष्ट्रपति भवन, “वाइट हाउस” में दीपावली के दिन, दीप जलाए जाने की परम्परा को प्रारम्भ किया था जिसे राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने भी जारी रखा। अमेरिका के पास ही बसे कनाडा में भी वहां के राष्ट्रपति जस्टिन ट्रूडो ने दीपावली के पावन पर्व पर दीप प्रज्वलित किया है।

इसके साथ ही इंडोनेशिया के बाली द्वीप, मारिशस के द्वीपों एवं कम्बोडिया के मंदिरों में भी दीपावली का पावन पर्व बड़ी ही श्रद्धा एवं उमंग के साथ मनाया गया है। फीजी एवं मलेशिया में तो इस दिन राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया। श्रीलंका में भी दीपावली का पावन पर्व वहां मनाए जाने वाले महत्वपूर्ण त्योहारों में शामिल है। नेपाल में दीपावली पर्व के दिन जानवरों की पूजा अर्चना बड़ी ही श्रद्धा के साथ की जाती है। यहां, भारत में भी हम दीपावली के महान पर्व को “तमसोमा ज्योतिर्गमय” के वाक्य को चरितार्थ करते हुए मनाते हैं अर्थात् दीपों का यह महान उत्सव हम सभी के लिए ज्ञान के चक्षु खोले एवं अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करे।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा  
संरक्षक

# दीप सभ्यता और संस्कृति की

दीपक हमारे अन्तःचक्षुओं का प्रतिबिम्ब भी है जो सतत हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक विभागों के मध्य समन्वय का सेतु बनने का कार्य करता है। दीप की सतत ज्वलित लौ, हमारी अन्तरात्मा के साथ सीधे सम्पर्क एवं साम्य स्थापित करने की अनुभूति प्रदान करती है। भारतीय धर्म-दर्शन में दीप का अपना अलग महत्व है। हमारे त्योहार, दैनन्दिनी, पूजा-पाठ सभी दीपक के साथ रीतिबद्ध रहते हैं। प्रत्येक शुभ कार्य के पूर्व दीप प्रज्वलन की अनूठी परम्परा सनातन काल से चली आ रही है, जिसमें सम्भवतः हमारे पूर्वजों का इस पद्धति के पीछे का यही उद्देश्य रहा होगा कि दीप के प्रकाश के साथ ही अन्धकार का हरण होता है।

अन्धकार के नाश के साथ ही नवोत्साह, नवचेतना का प्रारम्भ होता है तथा इसके साथ शुभ्रता के वातावरण में कार्यों के कुशल सम्पादन की आधारशिला रखी जाती है। दीप का अर्थ महज उसकी लौ से उत्पन्न प्रकाश से नहीं है, अपितु उसके पीछे हमारी अन्तश्चेतना की आत्मिक अनुभूति एवं भावात्मक लगाव भी जुड़ा हुआ है। चूँकि आधुनिक समय में प्रकाश के लिए विभिन्न तकनीकें उपलब्ध हो चुकी हैं जिससे किसी भी सीमा तक का प्रकाश विभिन्न आयामों में प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु क्या उससे 'दीप' का भाव कभी प्राप्त किया जा सकता है?

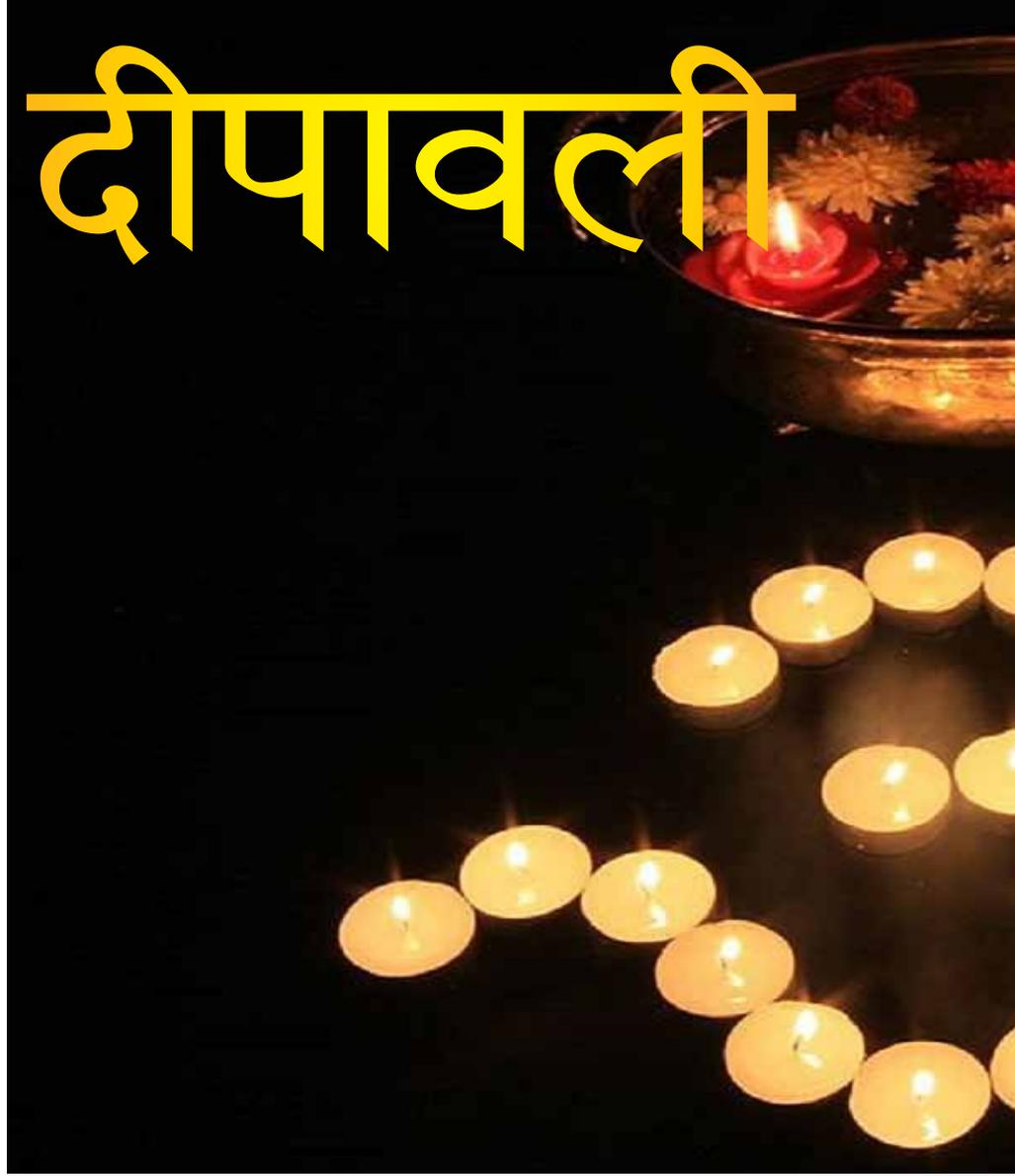
दीपक हमारे अन्तःचक्षुओं का प्रतिबिम्ब भी है जो सतत हमारे भौतिक एवं आध्यात्मिक विभागों के मध्य समन्वय का सेतु बनने का कार्य करता है। दीप की सतत ज्वलित लौ, हमारी अन्तरात्मा के साथ सीधे सम्पर्क एवं साम्य स्थापित करने की अनुभूति प्रदान करती है।

प्रत्येक शुभकार्य के साथ दीप प्रज्वलन की रीति लगभग यह सुनिश्चित कर देती है कि प्रारंभ किया गया कार्य कुशलतापूर्वक अपनी सम्पन्नता को प्राप्त करेगा व उसमें जीवन मूल्यों व संस्कारों के साथ आगे का पथ प्रशस्त होगा। 'दीप' क्या तेल-बाती एवं पात्र के संयोग की निष्पत्ति मात्र है? याकि इसके अलावा अन्य हेतु भी है जिसके कारण दीप ने अपनी यह महत्ता प्राप्त कर ली कि वह हमारे जीवन के सुख-दुःख दोनों में बराबर का सहभागी-मार्गदर्शक बनकर साहचर्यता के साथ प्रत्येक परिस्थिति में दृढ़तापूर्वक अपनी जलती हुई 'लौ' के साथ जीवन की राह दिखलाता और बतलाता है।

दीप का अपने समवेत ढँग से जलना एवं उसकी 'लौ' में उतार-चढ़ाव के साथ अनवरत अपने क्षेत्र में प्रकाश बिखेरना इस बात का द्योतक है कि जीवन के इस रणक्षेत्र में अपने मूलस्वरूप तथा स्वभाव के साथ जलते हुए सकारात्मकता तथा निःस्वार्थ भाव से समूचे संसार की भलाई करना ही ध्येय होना चाहिए। दीप यह भी प्रेरणा प्रदान करता है कि जीवन का अन्त सुनिश्चित है। इसलिए जब तक जीवन है तब तक भला करते रहिए व परहित की भावना को जीवन का ध्येय बनाकर चलते रहें।

दीपक अज्ञानता और अन्धकार के भय को नष्ट कर ज्ञान और प्रकाश पुञ्ज से सर्वत्र दीप्ति उत्पन्न कर सम्पूर्णता के आनन्द को प्रसारित करने का अमोघ अस्त्र है। दीप हमारे बिखरे जीवन को समेटने की युक्ति है तथा अदम्य साहस एवं कर्मठता की जिजीविषा का दर्शन है। दीप उन मूल्यों के सम्यक निर्वहन करने का श्रेष्ठतम मानक है जिनमें जीवन का अर्थ ही 'परोपकार' में जीवन की आहुति समर्पित करने से है।

## दीपावली



दीप, नैराश्य के समय आशा की किरण बनता है तो आह्लाद के समय उत्साह के साथ सर्वोत्कृष्ट करने का मार्गदर्शन प्रदान करता है। दीप के निर्माण एवं उसके गुणों के प्राकट्य तक में कई सारी संरचनाओं का संयोजन होता है जो जीवन को सुगठित करने में अपना योगदान देते हैं। वास्तव में दीप हमारे मनोमस्तिष्क के सम्पूर्ण तंत्र का एकाकार रूप है जिसमें हम अपने जीवन का निहितार्थ ढूँढ़ सकते हैं।

हमारी आद्य भारतीय सनातन वैदिक परम्परा की दैनन्दिनी में ही दीप प्रज्वलन- ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मांमृतं गमय।

अर्थात् हे! परब्रह्म परमात्मा हमको असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो। के मंत्र के साथ किया जाता है।

दीप की लौ के एकाकार दर्शन एवं उसमें ध्यानकेन्द्रित करने पर जो आत्मिक शान्ति का भाव प्राप्त होता है उसकी उपस्थिति में जीवन आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करता है। इस आध्यात्मिक भाव के साथ ही जीवन में बाह्य थपेड़ों/कारकों द्वारा निर्मित कलुषित एवं ध्वंसात्मक वृत्तियों का निर्मूलन होता है। दीप की लौ हमारे अन्तर्ज्ञान एवं स्थूल से लेकर सूक्ष्म विषयों के सद्-मार्ग तथा नवोन्मेष का पथप्रदर्शित करती है। हम दीपक की ज्योति को परब्रह्म का स्वरूप मानकर उसकी अर्चना करते हैं और अपने कुशलक्षेम का मनोरथ माँगते हैं, किन्तु यहाँ भी हम सभी के अन्दर सम्पूर्ण जगत के कल्याण की भावना निहित होती है।

दीपक जीवन में नीरसता से सरसता, अन्धकार से प्रकाश, दुःख से सुख, सुख से शान्ति, चिन्ता से मुक्ति और स्वयं को आहुत करते हुए सभी के लिए अपना जीवन

# अलौकिकता का प्रतीक है...



दान कर प्रसन्नता का पथ प्रशस्त करने की दिशा दिखलाता है। दीप प्रज्वलन का हमारे धर्मग्रन्थों में आध्यात्मिक एवं पौराणिक उल्लेख रहा है जो विभिन्न युगों के ईश्वरीय अवतारों के कालक्रम से लेकर वर्तमान समय तक उसी निष्ठा और भक्ति के साथ चलता आ रहा है। यह क्रम जीवन के सम्पूर्ण वाङ्मय के सम्-विषम परिस्थितियों में समन्वय तथा प्रकृति के अनुसार सञ्चालन का बोध स्पष्ट करता है।

क्या हमने कभी यह प्रयोग किया है कि- हम जब कभी भी गहरी निराशा के भँवर जाल में डूबे होते हैं, तथा उस समय हमारे मनोभावों में अशान्ति एवं अवसाद का स्तर लगभग अपने चरम पर होता है याकि हमारी मनोदशाओं को दिग्भ्रमित करता है। ठीक ऐसी ही परिस्थितियों याकि सामान्य परिस्थितियों में हम जब भी जीवन में निरुत्साहित महसूस करते हैं। उसी समय- पूजा का दीपक जलाकर

उसके समक्ष बैठने पर हमारे जीवन में निराशा का आवरण धीरे-धीरे छंटने लगता है तथा हम स्वयं में एक नई शक्ति का संचार अनुभव करते हैं।

आखिर ! यह चमत्कार कैसे हो जाता है? इस पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि कोई न कोई केन्द्र हमारी चेतना एवं 'दीप' के मध्य अवश्य है जो हमें क्षण भर में ही ऊर्जावान बना देता है। यह तो उसी दीप की शक्ति-सौन्दर्य का एक सामान्य सा उदाहरण है। दीप में निहित शक्तियाँ एवं भावों का क्षेत्र अनन्त व व्यापक है जिसे अन्तर्दीप एवं बाह्य-दीप के मध्य के केन्द्र का मिलान कर प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे जीवन का कोई भी ऐसा शुभकार्य नहीं होता है जो दीपप्रज्वलन के साथ शुरु न होता हो, दीपों की इसी पवित्रता, महत्ता, श्रेष्ठता के लिए हमारी संस्कृति में दीपोत्सव का अपने आप में अनूठा पावन पर्व 'दीपावली'

मनाया जाता है। यह पर्व राष्ट्र की संस्कृति के आधारस्तम्भ जगन्नियन्ता भगवान श्रीराम प्रभु के चौदह वर्ष के वनवास की समाप्ति पर उनके अयोध्या आगमन की प्रसन्नता में अयोध्यावासियों द्वारा किए गए दीप प्रज्वलन के साथ ही आर्यावर्त की जीवन पद्धति का अनिवार्य अङ्ग बन गया।

वहीं वैज्ञानिकीय दृष्टि से अवलोकन करें तो कार्तिक मास की अमावस्या यानि 'घोर अन्धकार' की तिथि को इस पर्व को मनाने की रीति 'अन्धकार' की पराजय एवं विपरीत परिस्थितियों में दृढ़ता के साथ प्रकाश रूपी लक्ष्य को प्राप्त करने का आधार है। यह पर्व इस बात का भी द्योतक है कि सद्प्रयासों से असत्य को पराजित कर सत्य की स्थापना की जा सकती है। इस प्रकार दीप प्रज्वलन के साथ हमारी उत्सवधर्मिता एवं मानवीय मूल्यों के साथ जीवन का पथानुगमन करने की अन्तःप्रेरणा व श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना का संकल्प है।

यदि इसे इस तर्क के साथ रखा जाए कि पूर्व के समय में केवल और केवल प्रकाश के लिए दीपक जलाया जाता था, तो यह तर्क असंगत माना जाएगा क्योंकि वर्तमान में प्रकाश के विभिन्न यन्त्रों के आ जाने के बाद भी दीप-प्रज्वलन की अपनी अनूठी पुण्य-पवित्र महत्ता है। चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थिति क्यों न हो, किन्तु हमारे - जीवन से मरणकाल एवं मरणोपरान्त तक दीपक की ज्योति तथा उसकी अनुभूति हमारे साथ सर्वदा रहती है।

ध्यान करिए कि चाहे जन्म काल में दीप जलाना हो या जीवन चक्र में पूजा-पाठ सहित हमारे षोडश संस्कारों में दीप प्रज्वलन का अपना अलग महत्व क्यों न हो। वहीं विषम परिस्थितियों में दीप हमारे जीवन में सचेतक एवं सहायक का सम्बन्ध निभाता है।

हमारे यहाँ किसी भी प्राणी की मृत्यु जैसी दुःख एवं शोक की असहनीय परिस्थिति में भी अग्निसंस्कार के समय दीपदान से लेकर वार्षिक श्राद्ध/तर्पण तक में प्रतिदिन सांध्यकाल में जीव के मोक्ष प्राप्ति के लिए दीप प्रज्वलित होना अपने आप में अनेकानेक प्रश्नों का उत्तर है। दीप इसका अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है कि परिस्थिति चाहे कैसी भी हो किन्तु सदाबहार तरीके से दीप अपनी उपस्थिति के माध्यम से जीवन का बोध स्पष्ट करता है। इस प्रकार यह सहज ही समझ लेना चाहिए कि दीप का जीवन में कितना अभिन्न योगदान है।

जीवन में प्रत्येक पर्व, कार्य, अनुष्ठान दीप के बिना अधूरा है। दीपक उत्साह- उल्लास, शान्ति सुख, समन्वय, आरोग्यता, स्नेह और आध्यात्मिक एवं आत्मिक शान्ति प्रदान तो करता ही इसके साथ ही सरसता, पवित्रता-पुण्यता के अक्षय कोष से जीवन को आप्लावित करता है।

जब सम्पूर्ण विश्व विभिन्न समस्याओं से त्राहिमाम कर रहा है, नित -नए संकट अपने विभिन्न स्वरूपों में आ रहें जिसकी निष्पत्ति मृत्यु, हताशा, अवसाद से घिरे हुए आवरण में हो रही है। उस समय सम्पूर्ण विश्व को भारत की सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न तत्व एक नई राह दिखला रहे हैं कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी दुस्कर क्यों न हों। हम आत्मतेज एवं अपने अदम्य साहस तथा धीरता के माध्यम से विजयी होंगे। दीप उसी अनूठी संस्कृति की अलौकिकता का प्रतीक है। जीवन के अन्धकार को नष्ट करने एवं उत्साह के सञ्चार के लिए राष्ट्र व वीर हुतात्माओं के नाम दीप प्रज्वलन अवश्य करें।

-साभार

भारतीय अर्थव्यवस्था को **बड़ा सहारा**

# इस बार की दीपावली पर्व



देश में आर्थिक गतिविधियों में लगातार हो रहे सुधार के कारण जीएसटी संग्रहण में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज हो रही है। मार्च 2021 में जीएसटी संग्रहण रिकार्ड 140,000 करोड़ रुपए का रहा था जो अक्टूबर 2021 में 130,000 करोड़ रुपए से अधिक का रहा है।

भारतीय संस्कृति में त्योहारों का विशेष महत्व है। दीपावली के त्योहार को तो भारत में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना गया है। देश में दीपावली पर्व के एक दो माह पूर्व ही सभी परिवारों द्वारा इसे मनाने की तैयारियां प्रारम्भ हो जाती हैं। देश के सभी नागरिक मिलकर वस्तुओं की खूब खरीदारी करते हैं जिसके कारण देश की अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। इस वर्ष की दीपावली भी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ी खुशखबरी लाई है। तीव्र गति से संकलित किए गए आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष दीपावली के दौरान देश में 125,000 करोड़ रुपए से अधिक का खुदरा व्यापार सम्पन्न हुआ है जो पिछले दस वर्षों की इसी अवधि के दौरान हुए खुदरा व्यापार में सबसे अधिक है।

नौकरी जॉबस्पीक द्वारा जारी एक प्रतिवेदन के अनुसार देश में अक्टूबर 2021 माह में रोजगार के अवसरों में 43 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सबसे अधिक मांग दृष्टिगोचर हुई है, इस क्षेत्र में अक्टूबर 2021 माह में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में रोजगार की मांग में 85 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। दीपावली के महान पर्व के दौरान

खुदरा व्यापार में हुई अतुलनीय वृद्धि के चलते सूचना प्रौद्योगिकी के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसरों में बहुत अच्छी वृद्धि दर्ज की गई है।

सबसे अच्छी खबर तो यह आई है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में, तेजी से औपचारीकरण हो रहा है। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा जारी एक प्रतिवेदन के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था में गैर-औपचारीकृत लेन-देनों का योगदान वर्ष 2018 में 52 प्रतिशत था अर्थात देश में लगभग आधी अर्थव्यवस्था गैर-औपचारीकृत रूप से कार्यरत थी परंतु अब यह योगदान घटकर लगभग 20 प्रतिशत हो गया है। किसी भी अर्थव्यवस्था का औपचारीकरण होने के कारण कर संग्रहण में वृद्धि होती है, विकास दर बढ़ती है एवं श्रमिकों के शोषण में कमी आती है। औपचारीकरण की प्रक्रिया में दरअसल सबसे अधिक लाभ तो श्रमिकों का होता है क्योंकि इससे उद्योग जगत एवं रोजगार प्रदाता द्वारा, सरकार द्वारा घोषित किए गए सभी प्रकार के लाभ एवं प्रोत्साहन, श्रमिकों को प्रदान किए जाने लगते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था के तेजी से हो रहे औपचारीकरण के पीछे डिजिटल लेन-देन का बहुत

अधिक योगदान रहा है। दीपावली एवं अन्य त्यौहारों के कारण अक्टूबर 2021 माह के दौरान यूनिफाईड पेमेंट इंटरफेस (UPI) पर 771,000 करोड़ रुपए के 421 करोड़ व्यवहार सम्पन्न हुए हैं, जो अपने आप में एक रिकार्ड है। UPI प्लेटफॉर्म का प्रारम्भ वर्ष 2016 में हुआ था एवं अक्टूबर 2019 में 100 करोड़ व्यवहार के स्तर को छुआ गया था तथा अक्टूबर 2020 में 200 करोड़ व्यवहार के स्तर को छुआ गया था, उसके बाद तो लगातार तेज गति से वृद्धि आंकी गई है।

देश में आर्थिक गतिविधियों में लगातार हो रहे सुधार के कारण जीएसटी संग्रहण में भी रिकार्ड वृद्धि दर्ज हो रही है। मार्च 2021 में जीएसटी संग्रहण रिकार्ड 140,000 करोड़ रुपए का रहा था जो अक्टूबर 2021 में 130,000 करोड़ रुपए से अधिक का रहा है। इस प्रकार जुलाई 2017 में जीएसटी प्रणाली के लागू किए जाने के बाद से यह रिकार्ड स्तर के मामले में दूसरे नम्बर पर है। अब तो औसत रूप से प्रत्येक माह जीएसटी संग्रहण एक लाख करोड़ रुपए से अधिक का ही हो रहा है। इसके साथ ही अंतरराज्यीय व्यापार के मामले में जारी किए जा रहे इवें बिलों की संख्या में भी लगातार बहुत अच्छी वृद्धि देखने में आ रही है।

प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों की वसूली में हो रही वृद्धि के चलते केंद्र सरकार के वित्तीय संतुलन में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान राजकोषीय घाटे के बारे में बजट में किए गए अनुमान के विरुद्ध केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा अप्रैल-सितम्बर 2021 की अवधि के दौरान केवल 35 प्रतिशत रहा है जो अप्रैल-सितम्बर 2020 की इसी अवधि के दौरान 115 प्रतिशत था। राजकोषीय घाटे का 526,000 करोड़ रुपए का स्तर पिछले 4 वर्ष के दौरान की इसी अवधि के स्तर से भी कम है। यह इसलिए सम्भव हो सका है क्योंकि देश में प्रत्यक्ष करों के संग्रहण में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है।

हर्ष का विषय यह भी है कि केंद्र सरकार द्वारा लगातार किए गए प्रयासों के कारण देश में खुदरा मुद्रास्फीति की दर में भी कमी आई है। सितम्बर 2021 माह में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 4.35 प्रतिशत रही है, यह पिछले 5 माह के दौरान खुदरा मुद्रास्फीति की दर में सबसे कम है। अगस्त 2021 माह में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 5.3 प्रतिशत एवं सितम्बर 2020 माह में 7.27 प्रतिशत थी। अभी हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा पेट्रोल एवं डीजल पर एक्साइज कर की दरों में की गई कमी एवं भाजपा और इसके सहयोगी दलों द्वारा शासित राज्यों द्वारा पेट्रोल एवं डीजल पर लागू VAT की दरों में की गई कमी के कारण पेट्रोल एवं डीजल के प्रति लीटर विक्रय मूल्य में लगभग 10 से 15 रुपए तक की कमी हुई है जिसके कारण भी खुदरा मुद्रास्फीति की दर और भी कम होने

की सम्भावना आगे आने वाले समय के लिए बढ़ गई है।

स्वाभाविक रूप से आर्थिक गतिविधियों में हो रहे लगातार सुधार के चलते बैंकों द्वारा प्रदान की जा रही ऋणराशि में भी तेजी देखने में आ रही है। विशेष रूप से त्यौहारों के मौसम में व्यक्तिगत ऋणराशि एवं कृषि के क्षेत्र में प्रदान की जाने वाली ऋणराशि में तेजी कुछ अधिक ही दिखाई दे रही है। सितम्बर 2021 माह में गृह ऋण, वाहन ऋण, क्रेडिट कार्ड आदि व्यक्तिगत ऋण के क्षेत्र में 12.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो सितम्बर 2020 माह में हुई 8.4 प्रतिशत की वृद्धि दर से कहीं अधिक है। इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में प्रदान की जा रही ऋणराशि में भी सितम्बर 2021 माह में 9.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है जो सितम्बर 2020 माह की वृद्धि दर 6.2 प्रतिशत से कहीं अधिक है। मध्यम उद्योग को प्रदान की गई ऋणराशि में सितम्बर 2021 माह में 49 प्रतिशत की आकर्षक वृद्धि देखने में आई है जो सितम्बर 2020 माह में 17.5 प्रतिशत ही रही थी। सूक्ष्म एवं लघु उद्योग को प्रदान की गई ऋणराशि में सितम्बर 2021 माह में 9.7 प्रतिशत की वृद्धि आंकी गई है जबकि सितम्बर 2020 माह में 0.1 प्रतिशत की कमी आंकी गई थी।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में विकास दर को गति प्रदान करने में विदेशी व्यापार का भी बहुत योगदान रहता है। दरअसल कई देशों यथा चीन जैसे देशों की विकास दर लगातार कुछ दशकों तक 10 प्रतिशत से अधिक इसी कारण से बनी रही है। अभी हाल ही के

समय में भारत से होने वाले निर्यात में भी भारी वृद्धि देखने में आ रही है। अक्टूबर 2021 माह में भारत से वस्तुओं के निर्यात में 42.33 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 3,547 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गए हैं। अक्टूबर 2020 माह में भारत से वस्तुओं के निर्यात 2,492 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रहे थे और अक्टूबर 2019 में 2,623 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रहे थे। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान भारत से वस्तुओं के निर्यात का स्तर 40,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से ऊपर रहने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय रेटिंग संस्थान मूडीज ने भारत की सार्वभौम (सोवरेन) रेटिंग दृष्टिकोण को ऋणात्मक (नेगेटिव) से स्थिर (स्टेबल) श्रेणी में ला दिया है। यह भी भारत में विशेष रूप से बैंकिंग एवं गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थानों में लगातार हो रहे सुधार के चलते सम्भव हो पाया है। केंद्र सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा लिए गए कई निर्णयों के चलते इन बैंकों में गैर निष्पादनकारी आस्तियों का प्रतिशत लगातार कम हो रहा है।

अब तो विदेशी वित्तीय संस्थान यथा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक आदि भी भारतीय अर्थव्यवस्था के वित्तीय वर्ष 2021-22 में दहाई के आंकड़े से आगे बढ़ने के बारे में सोचने लगे हैं। हालांकि अभी तक वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान 9.5 प्रतिशत के आसपास के विकास दर की भविष्यवाणी तो लगभग सभी वित्तीय संस्थानों ने की हुई है।



# पद की लालसा किये बगैर सदैव देशसेवा में लगी रहीं राजमाता विजयाराजे सिंधिया

बीजेपी संगठन के मंचों पर राजमाता के चित्र पर रस्मी माल्यार्पण के अलावा कोई विमर्श नवीसी का भाव नजर नहीं आता है। उनके परिवार के ताकतवर सदस्य भी सिर्फ उन्हें त्याग, तपस्या की देवी की तरह पूजने के कुछ लोगों के प्रायोजित और विचारशून्य उपक्रम से खुश रहते हैं। ग्वालियर के जिस जयविलास पैलेस को लोग दुनियाभर से देखने आते हैं उसे राजमाता विजयाराजे सिंधिया जीवाजी विश्वविद्यालय को दान करना चाहती थीं ताकि ग्वालियर रियासत के बच्चों को बेहतर उच्च शिक्षा मुहैया हो सके। जय विलास महल दुनिया के सबसे महंगे और आकर्षक महलों में एक है लेकिन राजमाता को इसके कंगूरे, परकोटा, ऐतिहासिक झूमर, डायनिंग टेबल पर चलती खाने की ट्रेन, घोड़े बग्गी, और शाही वैभव के दूसरे दस्तूर कतई प्रभावित नहीं करते थे। ऐसा लगता था कि राजमाता सिंधिया ने खुद को सांसारिक सुख सुविधाओं से काफी ऊपर उठा लिया था। राजमाता सिंधिया भारतीय जनता पार्टी की संस्थापक सदस्य थीं। उन्होंने मध्य प्रदेश में संघ और बीजेपी के विस्तार के लिये अपने शाही प्रभाव और ताकत का खुलकर उपयोग किया।



हमारे मौजूदा लोकतंत्र में उनके जैसे व्यक्तित्व बिरले ही हैं जिन्होंने पद की अभिलाषा को कभी भी खुद की मौलिकता पर हावी नहीं होने दिया। आज राजमाता विजयाराजे सिंधिया की राजनीतिक विरासत संभाल रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया, वसुंधरा राजे सिंधिया, यशोधरा राजे बीजेपी में ताकतवर नेताओं में शुमार हैं। लेकिन सवाल यह है कि भारतीय राजनीति में राजमाता का वैशिष्ट्य क्या ? क्यों केंद्र सरकार ने उनके जन्मशताब्दी वर्ष को सरकारी और पार्टी स्तर पर मनाया था पिछले साल। इसका जवाब बीजेपी में अटल, आडवाणी, जोशी, ठाकरे, प्यारेलाल युग के नेता बहुत ही प्रामाणिक तरीके से दे सकते हैं। इस पीढ़ी के नेताओं ने विजयाराजे सिंधिया को जनसंघ, बीजेपी और संघ के मामलों में अपना सब कुछ दांव पर लगाते हुए देखा है। इसलिये संभव है आज की पीढ़ी राजमाता को सिर्फ इतना भर जानती हो कि वे वसुंधरा राजे और स्व. माधवराव सिंधिया, यशोधरा राजे की मां हैं। लेकिन राजमाता के व्यक्तित्व का कैनवास बहुत बड़ा था। वे भारत में जेन्डर केस स्टडी भी हैं।

दुर्भाग्य से राजमाता सिंधिया को उनके राजनीतिक वारिसों ने एक सीमित दायरे में कैद कर दिया है। बीजेपी संगठन के मंचों पर राजमाता के चित्र पर रस्मी माल्यार्पण के अलावा पार्टी में राजमाता को लेकर कोई विमर्श नवीसी का भाव नजर नहीं आता है। उनके परिवार के ताकतवर सदस्य भी सिर्फ उन्हें त्याग, तपस्या की देवी की तरह पूजने के कुछ लोगों के प्रायोजित और विचारशून्य उपक्रम से खुश रहते हैं। हर साल एक टैग लाइन चला दी जाती है 'त्याग और वात्सल्य की मूर्ति- राजमाता। क्या राजमाता सिंधिया सिर्फ त्याग की और कतिपय वात्सल्य की मूर्ति थीं ? जैसा उनके कुछ अनुयायियों द्वारा दावा किया जाता है। हकीकत यह है कि राजमाता को लेकर यह उनका सतही मूल्यांकन है त्याग तो उन्होंने किया यह तथ्य है। वह चाहतीं तो 1967 में ही मप्र की मुख्यमंत्री बन सकती थीं, 1977, 1989 में फिर उनके पास यही अवसर विनय की मुद्रा लिए खड़े थे। 1996, 1998, 1999 में वह भी राष्ट्रपति भवन में मंत्री पद की शपथ ले सकती थीं। वह खुद भैरोंसिंह शेखावत की जगह उपराष्ट्रपति हो सकती थीं। बीजेपी की राष्ट्रीय अध्यक्ष तो जब चाहतीं तब बन सकती थीं। लेकिन राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने इन सभी अवसरों को दूसरों के लिये छोड़ दिया। यह उनके राजनीतिक त्याग की मिसाल ही है। वाकई आज की पीढ़ी में यह त्याग भाव

असंभव है। इसलिये इस त्याग भाव को केवल पूजने से काम नहीं चलेगा, आवश्यकता आज इस बात की है कि उनके इस त्याग भाव को समाज के सामान्य जनजीवन में स्थापित कैसे किया जाए ? इसे सोशल ट्रांसफॉर्मेशन की केस स्टडी बनाकर कैसे आगे बढ़ाया जाए ? क्योंकि इसी भावना के लोप ने आज की सियासत को गंदा कर दिया है। सवाल यह है कि राजमाता को क्या सिर्फ बीजेपी की एक दिग्गज नेत्री के रूप याद किया जाना चाहिये ? असल में राजमाता सिंधिया जम्हूरियत में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना, लोकशाही और राजशाही के बीच अद्भुत समन्वय थीं। शाही वैभव के बावजूद सत्ता से सदैव दूरी बनाने, पितृसत्ता को सफलतापूर्वक जमींदोज करने वाली शिष्टियत के रूप में उन्हें याद किया जाना चाहिये। राजमाता सिर्फ दूसरे राजाओं की तरह अपनी रियासतों और सुख सविधाओं को बचाने के लिये परकोटे से बाहर नहीं आई थीं उनका अपना सामाजिक राजनीतिक चिंतन था इसलिये वे राजनीति में नेहरू की पहल पर कांग्रेस में शामिल तो हुईं लेकिन सत्ता की हनक के आगे जब राजमाता ने आम आदमी खासकर अपनी पुरानी रियासत में (छात्र आंदोलन) दमनभाव को देखा तो भारत की राजनीति के सबसे मजबूत मुख्यमंत्री डीपी मिश्रा से भिड़ने में लेश मात्र संकोच नहीं किया। क्या आज के नेता यह साहस कर सकते हैं ?

भारत के संसदीय इतिहास में राजमाता प्रेरित ऑपरेशन डीपी मिश्रा सियासत में नारी शक्ति की स्वतंत्र ताकत का ही प्रदर्शन था। सियासत में संयम और शालीनता के गायब हो चुके अपरिहार्य तत्व की तालीम आज के सियासी लोग उनसे हासिल कर सकते हैं। डीपी मिश्रा की सर्वशक्तिमान सरकार को गिराने के बावजूद उन्होंने अहंकार को अपने सियासी शिष्टाचार में कभी फटकने भी नहीं दिया। मृत्यु पर्यंत उनका सम्मान भारत के सभी राजनीतिक दलों में अनुकरणीय हद तक बना रहा। इंदिरा गांधी की सत्ता को भी उन्होंने खुलेआम चुनौती दी। लेकिन उनका राजनीतिक विरोध सदैव नीतिगत रहा। डीपी मिश्रा ने पंचमढ़ी के अधिवेशन में उन्हें अपमानित करने का प्रयास किया लेकिन उन्होंने इसका बदला पूरे संसदीय तरीके से लिया। असल में राजमाता का मूल्यांकन सिर्फ राजनीतिक नजरिये से नहीं किया जा सकता है वे शाही परकोटे में जनता की महारानी थीं जिनकी ताकत रियासतों की रवायतों से नहीं उनके सतत सम्पर्क और नए भारत में शाही लोगों को लोकतांत्रिक तरीके से विश्वास हासिल करने के भरोसे में टिकी थी।

# सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वदेशी तकनीकों का विकास अपरिहार्य : सेना प्रमुख

थल सेना प्रमुख जनरल एम एम नरवणे ने सोमवार को कहा कि संघर्ष के दौरान भारतीय सेना के पूर्ण इस्तेमाल के लिए केवल स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियां ही उपलब्ध रहेंगी और ऐसे में विदेशी प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता कम करना अपरिहार्य है।

थल सेना प्रमुख जनरल एम एम नरवणे ने सोमवार को कहा कि संघर्ष के दौरान भारतीय सेना के पूर्ण इस्तेमाल के लिए केवल स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियां ही उपलब्ध रहेंगी और ऐसे में विदेशी प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता कम करना अपरिहार्य है। उन्होंने फिक्की के एक कार्यक्रम में अपने संबोधन में कहा कि भारतीय सेना तेजी से आधुनिकीकरण के दौर से गुजर रही है और यह अपनी परिचालन जरूरतों के लिए अधिक से अधिक स्वदेशी समाधान तलाश रही है।

थल सेना प्रमुख ने कहा, "मैं वास्तव में मानता हूँ कि संघर्ष के दौरान, युद्ध जैसी स्थितियों में, विभिन्न क्षेत्रों में पूर्ण इस्तेमाल के लिए केवल स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियां ही हमारे लिए उपलब्ध होंगी। नरवणे ने उल्लेख किया कि उभरती सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने और विदेशी प्रौद्योगिकियों पर निर्भरता कम करने के लिए स्वदेशी और स्थानीय क्षमताओं का विकास करना अनिवार्य है। उन्होंने कहा, सेना विशेष रूप से इस पहल का नेतृत्व करने के लिए अधिक उपयुक्त है। भारत के पास एक विस्तृत औद्योगिक आधार है और हमें विश्वास है कि रक्षा उपकरणों की अधिकतर मुख्य



आवश्यकताओं को घरेलू स्तर पर ही पूरा किया जा सकता है। सेना प्रमुख ने कहा कि भारतीय सेना में अधिग्रहण की औसत लागत कम है जो एमएसएमई और स्टार्ट-अप की व्यापक भागीदारी की अनुमति देती है। उन्होंने कहा कि आर्थिक मंदी के दौरान सरकार की आत्मनिर्भर भारत पहल से घरेलू उद्योग को बहुत जरूरी प्रोत्साहन मिला है। थल सेना के उप प्रमुख (क्षमता विकास) लेफ्टिनेंट जनरल शांतनु दयाल ने इस कार्यक्रम में कहा कि साजो-सामान और प्रौद्योगिकियों की खरीद के दौरान गुणवत्ता और लागत भारतीय सेना के लिए दो सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। उन्होंने कहा, "हम इन साजो-सामान को बहुत ही चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में तैनात करने जा रहे हैं, इसलिए उन्हें मजबूत और अच्छी गुणवत्ता का होना चाहिए।" दयाल ने कहा कि भारतीय सेना खरीद के दौरान स्वदेशी सामग्रियों की हिस्सेदारी बढ़ाने जा रही है।

## सिर्फ जघन्य अपराधों में भारी वृद्धि के कारण किसी व्यक्ति को दोषी ठहराना विवेकपूर्ण नहीं : न्यायालय

इस पीठ में न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति हिमा कोहली भी शामिल हैं। पीठ ने पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय और निचली अदालत द्वारा पारित फैसलों को खारिज कर दिया जिसमें उस व्यक्ति को दोषी ठहराया गया था। पीठ ने कहा कि रिकॉर्ड पर मौजूद साक्ष्य उसके अपराध को उचित संदेह से परे स्थापित नहीं करते। इसके साथ ही न्यायालय ने 1999 में दर्ज कथित डकैती के एक मामले में दोषी ठहराए गए एक व्यक्ति को बरी कर दिया। प्रधान न्यायाधीश एन वी रमण की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि आपराधिक न्यायशास्त्र के मुख्य सिद्धांत को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि किसी दोषी व्यक्ति को भी बच जाए लेकिन किसी एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। पीठ ने कहा कि ऐसे मामलों में जहां महत्वपूर्ण गवाहों के पलटने का अनुमान है, अभियोजन पक्ष का कर्तव्य है कि सीआरपीसी की धारा 164 के तहत उनकेबयान जल्द से जल्द दर्ज करवाएं या अन्य ठोस सबूत एकत्र करें ताकि मामला पूरी तरह से मौखिक गवाही पर निर्भर नहीं रहे। पीठ ने कहा, किसी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए दोषी ठहराना बुद्धिमानी या विवेकपूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि जघन्य अपराधों में भारी वृद्धि हुई है तथा पीड़ित अक्सर डर या अन्य बाहरी वजहों से सच बोलने से कतराते हैं...।" इस पीठ में न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति हिमा कोहली भी शामिल हैं। पीठ ने पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय और निचली अदालत द्वारा पारित फैसलों को खारिज कर दिया जिसमें उस व्यक्ति को दोषी ठहराया गया था। पीठ ने कहा कि रिकॉर्ड पर मौजूद साक्ष्य उसके अपराध को उचित संदेह से परे स्थापित नहीं करते। सर्वोच्च अदालत ने उच्च न्यायालय के सितंबर 2009 के उस फैसले के खिलाफ दायर अपील पर फैसला सुनाया जिसमें निचली अदालत के मार्च 2002 के दोषिसिद्धि के आदेश को बरकरार रखा गया था। उच्च न्यायालय ने व्यक्ति की दोषिसिद्धि को कायम रखा था लेकिन भारतीय दंड संहिता की धारा 397 (डकैती) के तहत दंडनीय अपराध के लिए सजा को 10 साल से घटाकर सात साल कर दिया था।

# दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता चुने गए मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति और ब्रिटेन के पीएम पिछड़े

पीएम मोदी ने अप्रूवल रेटिंग में अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और ब्रिटेन के पीएम बोरीस जॉनसन समेत दुनिया के 13 मुख्य नेताओं को पछाड़ दिया है। आपको बता दें कि पीएम मोदी की अप्रूवल रेटिंग 70 फीसदी है। यह सर्वे 5 नवंबर को अपडेट किया गया था जिसके तहत भारत के प्रधानमंत्री विश्व के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों से आगे है।

मॉनिंग कंसल्ट द्वारा जारी ग्लोबल लीडर अप्रूवल रेटिंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर टॉप पर बने हुए हैं। बता दें कि, इस रेटिंग के मुताबिक पीएम मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता चुने गए हैं। पीएम मोदी ने अप्रूवल रेटिंग में अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और ब्रिटेन के पीएम बोरीस जॉनसन समेत दुनिया के 13 मुख्य नेताओं को पछाड़ दिया है। आपको बता दें कि पीएम मोदी की अप्रूवल रेटिंग 70 फीसदी है। यह सर्वे 5 नवंबर को अपडेट किया गया था जिसके तहत भारत के प्रधानमंत्री



विश्व के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों से आगे है।

इस रेटिंग में पीएम मोदी ने मैक्सिको के राष्ट्रपति आंद्रे मैनुएल लोपेज ओब्राडोर, इटली के प्रधानमंत्री मारियो द्राची, जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन समेत कई बड़े नेताओं की लोकप्रियता को घटा दिया है और खुद शीर्ष में बने हुए हैं। उल्लेखनीय है कि, पीएम मोदी की लोकप्रियता कोरोना की दूसरी लहर के दौरान गिर गई थी। कोरोना महामारी के कारण ऑक्सीजन की कमी और देश में मौतों का आंकड़ा तेजी से बढ़ रहा था जिससे देश और देश के प्रधानमंत्री की लोकप्रियता पर काफी बुरा असर पड़ा था। हालांकि, पीएम मोदी की सरकार ने देश में आई इस मुसीबत से जल्द निजात भी पा लिया था। इस बार के सर्वे में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन पांचवें नंबर से छठे नंबर पर पहुंच गए हैं वहीं ब्रिटेन के पीएम 8वें से दो स्थान फिसलकर 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

बवाल से देश को नुकसान हो रहा है...

# अहिंसा की ताकत को पहचानें आंदोलनकारी किसान...



देश में किसान आन्दोलन हो या ऐसे ही अन्य राजनैतिक आन्दोलन, उनमें हिंसा का होना गहन चिन्ता का कारण बना है। हिंसा और आतंकवाद की स्थितियों ने जीवन में अस्थिरता एवं भय व्याप्त कर रखा है। अहिंसा की इस पवित्र भारत भूमि में हिंसा का तांडव सोचनीय है।

अहिंसा ताकतवरों का हथियार है। दमनकारी के खिलाफ वही सिर उठाकर खड़ा हो सकता है, जिसे कोई डर न हो, जो अहिंसक हो एवं मूल्यों के लिये प्रतिबद्ध हो। इस कसौटी पर कसेंगे, तो आपको साफ-साफ समझ में आ जाएगा कि मौजूदा समय में कौन निडर है और कौन भयभीत। कौन कितना नैतिक है और कौन कितना भ्रष्ट। पिछले तीन सौ दिनों में भारतीय जनमानस ने तीन कृषि कानूनों के खिलाफ चल रहे किसान आन्दोलन की हिंसक, अराजक, अनुशासनहीन एवं अलोकतांत्रिक गतिविधियों के बावजूद अभूतपूर्व संयम और आत्मबल का परिचय दिया है। हाल की लखीमपुर खीरी में हुई हिंसा हो या बार-बार भारत बंद जनता के लिये परेशानियों का सबब बना। हाइवे रोके गये, रेल की पटरियों पर प्रदर्शनकारियों ने रेल यातायात को अवरुद्ध किया। जनजीवन अस्तव्यस्त हुआ, परेशानियों के बीच आम आदमी का जीवन थमा ही नहीं, कड़वे अनुभवों का अहसास बना। हिंसा का ताण्डव भी बार-बार देखने को मिला। जबकि अहिंसा सबसे ताकतवर हथियार है, बशर्ते कि इसमें पूरी ईमानदारी बरती जाए।

लेकिन देश में किसान आन्दोलन हो या ऐसे ही अन्य राजनैतिक आन्दोलन, उनमें हिंसा का होना गहन चिन्ता

का कारण बना है। हिंसा और आतंकवाद की स्थितियों ने जीवन में अस्थिरता एवं भय व्याप्त कर रखा है। अहिंसा की इस पवित्र भारत भूमि में हिंसा का तांडव सोचनीय है। महावीर, बुद्ध, गांधी एवं आचार्य तुलसी के देश में हिंसा को अपने स्वार्थपूर्ति का हथियार बनाना गंभीर चिन्ता का विषय है। इस जटिल माहौल में आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अहिंसा यात्रा के विशेष उपक्रम के माध्यम से अहिंसक जीवनशैली और उसके प्रशिक्षण का उपक्रम और विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय के लोगों के बीच संपर्क अभियान चलाकर उन्हें अहिंसक बनने को प्रेरित किया जाना न केवल प्रासंगिक है, बल्कि राष्ट्रीय जीवन की आवश्यकता है।

आचार्य श्री महाश्रमण ने दिनांक 9 मार्च 2014 को राजधानी दिल्ली के लाल किला प्राचीर से अहिंसा यात्रा का शुभारंभ किया था। उन्होंने उन्नीस राज्यों एवं तीन पड़ोसी देशों की करीब सत्तर हजार किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए अहिंसा और शांति का पैगाम फैलाया। नेपाल में भूकम्प, कोरोना की विषम परिस्थितियों में इस यात्रा का नक्सलवादी एवं माओवादी क्षेत्रों में पहुंचना आचार्य महाश्रमण के दृढ़ संकल्प, मजबूत मनोबल एवं आत्मबल का परिचायक है। इस यात्रा का समापन

समारोह राजधानी दिल्ली में 27 मार्च 2022 को होना एक सुखद संयोग है। आचार्य महाश्रमण का देश के सुदूर क्षेत्रों- नेपाल, भूटान एवं श्रीलंका जैसे पड़ोसी राष्ट्रों सहित आसाम, बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि में अहिंसा यात्रा करना और उसमें अहिंसा पर विशेष जोर दिया जाना अहिंसा की स्थापना के लिये सार्थक सिद्ध हुआ है। क्योंकि आज देश एवं दुनिया हिंसा के महाप्रलय से भयभीत और आतंकित है। जातीय उन्माद, सांप्रदायिक विद्वेष और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं का अभाव- ऐसे कारण हैं जो हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं और इन्हीं कारणों को नियंत्रित करने के लिए आचार्य महाश्रमण प्रयत्नशील हैं। इन विविध प्रयत्नों में उनका एक अभिनव उपक्रम है- 'अहिंसा यात्रा'। आज अहिंसा यात्रा एकमात्र आंदोलन है जो समूची मानव जाति के हित का चिंतन कर रहा है। अहिंसा की योजना को क्रियान्वित करने के लिए ही उन्होंने पदयात्रा के सशक्त माध्यम को चुना है। 'चरैवेति-चरैवेति चरन् वै मधु विंदति' उनके जीवन का विशेष सूत्र बन गया है।

आचार्य महाश्रमण एक ऐसी आलोकधर्मी परंपरा का विस्तार है, जिस परंपरा को महावीर, बुद्ध, गांधी, आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने अतीत में आलोकित किया है। अतीत की यह आलोकधर्मी परंपरा धुंधली होने लगी, इस धुंधली होती परंपरा को आचार्य महाश्रमण एक नई दृष्टि प्रदान कर रहे हैं। यह नई दृष्टि एक नए मनुष्य का, एक नए जगत का, एक नए युग का सूत्रपात कही जा सकती है। वे आध्यात्मिक इन्द्रधनुष की एक अनूठी एवं सतरंगी तस्वीर हैं। उन्हें हम ऐसे बरगद के रूप में देखते हैं जो सम्पूर्ण मानवता को शीतलता एवं मानवीयता का अहसास कराता है। इस तरह अपनी छवि के सूत्रपात का आधार आचार्य महाश्रमण ने जहाँ अतीत की यादों को बनाया, वहीं उनका वर्तमान का पुरुषार्थ और भविष्य के सपने भी इसमें योगभूत बन रहे हैं। जीवन के छोटे-छोटे मसलों पर जब वे अपनी पारदर्शी नजर की रोशनी डालते हैं तो यूँ लगता है जैसे कुहासे से भरी हुई राह पर सूरज की किरणें फैल गईं। मन की बदलियां दूर हो जाती हैं और निरभ्र आकाश उदित हो गया है। आपने कभी देखा होगा ऊपर से किसी वादी को। बरसात के दिनों में अकसर वादियाँ ऐसी दिखाई देती हैं जैसे बादलों से भरा कोई कटोरा हो, और कुछ भी नजर नहीं आता। फिर अचानक कोई बयार चलती है और सारे बादलों को बहा ले जाती है और दृष्टिगत होने लगता है वृक्षों का चमकता हरा रंग। बस ऐसी ही बयार जैसे हैं आचार्य महाश्रमण के शब्द एवं कर्म। बादल छंटते हैं और जो जैसा है, वैसा ही दिखाई देने लगता है।

स्वल्प आचार्य शासना में आचार्य महाश्रमण ने मानव चेतना के विकास के हर पहलू को उजागर किया। श्रीकृष्ण, श्रीराम, महावीर, बुद्ध, जीसस के साथ ही साथ भारतीय अध्यात्म आकाश के अनेक संतों- आदि

शंकराचार्य, कबीर, नानक, रैदास, मीरा आदि की परंपरा से ऐसे जीवन मूल्यों को चुन-चुनकर युग की त्रासदी एवं उसकी चुनौतियों को समाहित करने का अनूठा कार्य उन्होंने किया। जीवन का ऐसा कोई भी आयाम नहीं है जो उनके प्रवचनों-विचारों से अस्पृशित रहा हो। योग, तंत्र, मंत्र, यंत्र, साधना, ध्यान आदि के गूढ़ रहस्यों पर उन्होंने सविस्तार प्रकाश डाला है। साथ ही राजनीति, कला, विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, शिक्षा, परिवार, समाज, गरीबी, जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण, हिंसा, जातीयता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराधीकरण, भ्रूणहत्या और महंगाई के विश्व संकट जैसे अनेक विषयों पर भी अपनी क्रांतिकारी जीवन-दृष्टि प्रदत्त की है। जब उनकी उत्तराध्ययन और श्रीमद् भगवद गीता पर आधारित प्रवचन श्रृंखला सामने आई, उसने आध्यात्मिक जगत में एक अभिनव क्रांति का सूत्रपात किया है। एक जैनाचार्य द्वारा उत्तराध्ययन की भांति सनातन परम्परा के श्रद्धास्पद ग्रंथ गीता की भी अधिकार के साथ सटीक व्याख्या करना न केवल आश्चर्यजनक है बल्कि प्रेरक भी है। इसीलिये तो आचार्य महाश्रमण मानवता के मसीहा के रूप में जन-जन के बीच लोकप्रिय एवं आदरास्पद है। वे एक ऐसे संत हैं, जिनके लिये पंथ और ग्रंथ का भेद बाधक नहीं बनता। आपके कार्यक्रम, विचार एवं प्रवचन सर्वजनहिताय होते हैं। हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और सम्प्रदाय की जनता आपके जीवन-दर्शन एवं व्यक्तित्व से लाभान्वित होती रही है।

अपनी आवाज की डोर से कोई लाखों-करोड़ों में रूहानी इश्क का जुनून भर दे और यह अहसास दिलवा दे कि यह कायनात उतनी ही नहीं है जितनी हमने देखी है-सितारों से आगे जहाँ और भी हैं-आज के दौर में तो यह आवाज आचार्य महाश्रमण की ही है। महाश्रमणजी ने बहुत बोला है बोल रहे हैं और पूरी दुनिया ने सुना है और सुन रही है- किसी ने दिल थामकर तो किसी ने आस्थाशील होकर। लेकिन उनकी आवाज सब जगह गूँज रही है। पर जितना भी उन्होंने बोला है, मैं समझता हूँ कि उसका निचोड़ बस इतना है कि आदमी अपनी असलियत के रूबरू हो जाए। शाम को जब आसमान पर बादल कई-कई रंगों से खिल जाते हैं तो वहाँ मैं भावों का नृत्य होते देखता हूँ, समंदर की लहरों में, वृक्षों में, हवाओं में-भाव, भाव और भाव। आचार्य महाश्रमण को सुनना भी मेरे जैसे असंख्य लोगों के लिए ऐसा ही है जैसे कि हृदय को कई-कई भंगिमाओं से गुजरने का अवसर देना। यह आवाज हमारे वक्त की जरूरत है, आचार्य महाश्रमण हमारे वक्त की जरूरत है। आचार्य महाश्रमण के निर्माण की बुनियाद भाग्य भरोसे नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, पुरुषार्थ प्रयत्न, समर्पण और तेजस्वी संकल्प से बनी है। हम समाज एवं राष्ट्र के सपनों को सच बनाने में सचेतन बनें, यही आचार्य महाश्रमण की प्रेरणा है और इसी प्रेरणा को जीवन-ध्येय बनाना हमारे लिए शुभ एवं श्रेयस्कर है। इसी से किसान आन्दोलन जैसी समस्याओं का समाधान निकल सकता है।

## मंत्री मनसुख मांडविया ने बच्चों के कोविड-रोधी टीकाकरण पर कहा जल्दबाजी नहीं करना चाहता



केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने बृहस्पतिवार को एक निजी समाचार चैनल के कार्यक्रम में कहा, "हम इस बात को लेकर जल्दबाजी नहीं करना चाहते। चूंकि यह बच्चों से जुड़ा मामला है, इसलिए विशेषज्ञ समूह और अध्ययन कर रहे हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने बृहस्पतिवार को कहा कि सरकार बच्चों को कोविड-रोधी टीका लगाने में जल्दबाजी नहीं करना चाहती और इस संबंध में कोई भी निर्णय विशेषज्ञों की राय के आधार पर ही लिया जाएगा।

जायडस कैडिला के कोविड-19 टीकों को 12 साल एवं उससे अधिक आयु के लोगों के लिए आपातकाल में इस्तेमाल की अनुमति मिल जाने के मद्देनजर बच्चों का टीकाकरण शुरू होने के संबंध में मांडविया ने कहा कि दुनिया में कहीं भी बच्चों को बड़े पैमाने पर कोविड-19 रोधी टीका नहीं लगाया जा रहा है, हालांकि कुछ देशों में बच्चों का सीमित टीकाकरण शुरू किया गया है।

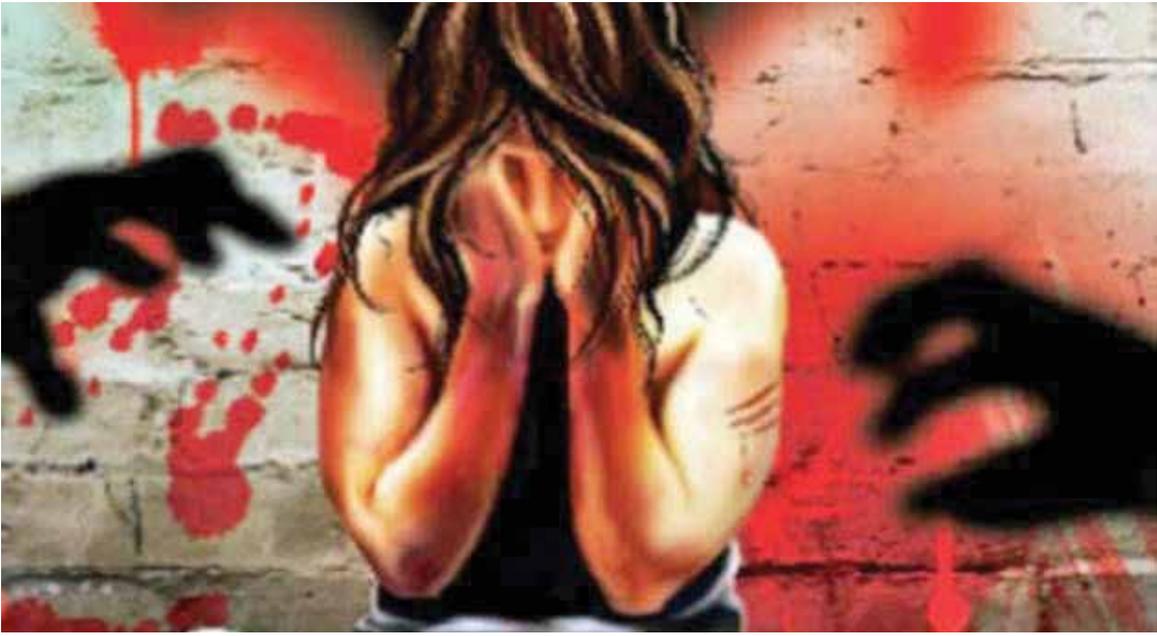
न्होंने एक निजी समाचार चैनल के कार्यक्रम में कहा, "हम इस बात को लेकर जल्दबाजी नहीं करना चाहते। चूंकि यह बच्चों से जुड़ा मामला है, इसलिए विशेषज्ञ समूह और अध्ययन कर रहे हैं।"

मांडविया ने कोविड-19 टीके की बूस्टर खुराक दिए जाने की संभावना पर कहा कि पर्याप्त मात्रा में टीके उपलब्ध हैं और टीकाकरण के लिए पात्र लोगों को दो-दो खुराक दिए जाने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि इसके बाद, विशेषज्ञ की सिफारिश के आधार पर बूस्टर खुराक देने पर निर्णय लिया जाएगा।



# बढ़ रहे हैं बच्चों के साथ यौन दुर्व्यवहार के मामले, कैसे निबटें इन हालात से?

जब कल-कारखाने बंद रहने और उसके बाद भी बहुत सारे रोजगार सुचारू रूप से बहुत दिनों तक नहीं चल पाने की स्थिति में बच्चों के साथ काम की जगहों पर दुर्व्यवहार की घटनाएं नहीं होने पाईं, इसलिए आंकड़े पहले की तुलना में कुछ घटे हुए दर्ज हुए।



कोरोना काल के पूर्णबंदी के दौरान बाल विवाह, यौन शोषण, अपराध और ऑनलाइन दुर्व्यवहार के मामलों में चिंताजनक बढ़ोतरी दर्ज हुई। नए आंकड़ों के अनुसार पिछले साल रोज करीब साढ़े तीन सौ बच्चों के साथ आपराधिक घटनाएं घटीं। हालांकि अध्ययनकर्ताओं और राष्ट्रीय अपराध रेकार्ड ब्यूरो ने इसके पीछे बड़ी वजह कोरोना काल में हुई बंदी और कामकाज के ठप पड़ जाने, परिवारों के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाने को माना है। बच्चे समाज में ही नहीं, अपने घरों में भी असुरक्षित हैं। बच्चों पर हो रहे अपराध एक सभ्य समाज पर बदनमा दाग है। जबकि एक सभ्य समाज की पहचान इस बात से भी होती है कि उसमें बच्चों के साथ कैसा व्यवहार होता है, वे खुद को कितना सुरक्षित महसूस करते हैं। इस दृष्टि से हम सदा से पिछड़े नजर आते रहे हैं। कहते हैं कि समाज में शिक्षा के प्रसार से हिंसा और अपराध जैसी घटनाएं स्वतः कम होने लगती हैं। भारत में शिक्षा की दर तो बढ़ रही है, मगर हिंसा और अपराध के मामले भी उसी अनुपात में बढ़े हुए दर्ज होते हैं, यह शिक्षा की विसंगति का ही परिणाम है। सबसे चिंता की बात है कि भारत में बच्चों के साथ हिंसक व्यवहार, यौन अत्याचार एवं उनके अधिकारों के हनन पर अंकुश नहीं लग पा रहा, जो चिन्ताजनक होने के साथ शासन-व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है।

हाल ही में स्कूल ऑफ बिजनेस में सैंटर फॉर

इनोवेशन एटरप्रेन्योरशिप की मदद से एक सर्वे ऑनलाइन शिक्षा की स्थिति का आकलन करने के लिये किया गया था। इस सर्वे में समभागी बने लोगों में से 93 फीसदी लोगों ने यही माना है कि ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों के सीखने और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ा है, घरों में कैद होकर भी वे ऑनलाइन अपराधों के शिकार हुए, उनमें मानसिक विकृतियां पनपीं। इससे बच्चों पर नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ा, जिससे उनकी सुप्त शक्तियों का जागरण एवं जागृत शक्तियों का संरक्षण एवं संवर्धन अवरुद्ध हुआ है। बच्चों के समग्र विकास की संभावनाओं का प्रकटीकरण रूका है। लाखों छात्रों के लिए स्कूलों का बंद होना उनकी शिक्षा में अस्थाई व्यवधान बना है जिसके दूरगामी प्रभाव का आकलन धीरे-धीरे सामने आने लगा है। बच्चों का शिक्षा से मोहभंग हो गया। बच्चे अपराध एवं यौन शोषण के शिकार हुए हैं। ये स्थितियां गंभीर एवं घातक होने के साथ चुनौतीपूर्ण बनी हैं। सत्य को ढंका जाता है या गंगा किया जाता है पर स्वीकारा नहीं जाता। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं। बच्चों के साथ होने वाले अपराधों के संबंध में ऐसा ही देखने को मिला है।

भले ही ताजा आंकड़ों में पहले की तुलना में आपराधिक मामलों में कुछ कमी दर्ज हुई है, मगर वह संतोषजनक नहीं है। कई मामलों में बच्चों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएं बढ़ी हैं। मनोचिकित्सक अरुणा

ब्रूटा के अनुसार, “बच्चों के साथ यौन शोषण करने वाले लोग सेक्सुअल डिसऑर्डर का शिकार होते हैं। उन्हें बच्चों के यौन शोषण से मजा मिलता है और अपनी इन हरकतों का सबूत मिटाने के लिए वे बच्चों की हत्या तक कर देते हैं।” बच्चों को टारगेट करने वाले लोगों को पीडोफाइल कहा जाता है। इनका रुझान शुरू से बच्चों की तरफ होता है। वे वयस्कों की बजाय बच्चों को देखकर उत्तेजित होते हैं।

ऐसे ही बीमार मानसिकता के लोगों ने पूर्णबंदी के दौरान बच्चों पर विकृत मानसिकता के हमले जहां-जैसे मौके मिले किये। जब कल-कारखाने बंद रहने और उसके बाद भी बहुत सारे रोजगार सुचारू रूप से बहुत दिनों तक नहीं चल पाने की स्थिति में बच्चों के साथ काम की जगहों पर दुर्व्यवहार की घटनाएं नहीं होने पाईं, इसलिए आंकड़े पहले की तुलना में कुछ घटे हुए दर्ज हुए। बंदी की वजह से बच्चों को घरों में बंद रहने पर मजबूर होना पड़ा था, ऐसे में उनके माता-पिता का अनुशासन और हिंसक व्यवहार कुछ अधिक देखा गया। यह खुलासा बंदी के दौरान हुए अन्य अध्ययनों से हो चुका है। ऐसे में बाल अधिकारों के लिए काम करने वाली संस्थाओं और सरकारी महकमों के लिए यह चुनौती बनी हुई है कि इस पर कैसे काबू पाया जाए। यों बाल अपराध, बाल अधिकारों के हनन, बेवजह प्रताड़ना, बाल मजदूरी, यौन शोषण आदि के खिलाफ कड़े कानून हैं, मगर उनका कितना पालन हो पा रहा

है, इसका अंदाजा ताजा आंकड़ों से लगाया जा सकता है। बच्चों के खिलाफ अपराधिक घटनाओं के मामले में मध्य प्रदेश अग्रणी है, फिर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और बिहार हैं।

पीडोफाइल खास योजना के तहत बच्चों पर अपराधों को अंजाम देते हैं। वे अक्सर बच्चों के आस-पास रहने की कोशिश करते हैं। वे ज्यादातर स्कूलों या ऐसी जगहों को चुनते हैं, जहां बच्चों का आना-जाना ज्यादा हो। ज्यादातर मामलों में बच्चों को शिकार बनाने वाले उनके करीबी ही होते हैं। ये स्कूल बस का ड्राइवर, कंडक्टर, शिक्षक या स्कूल का कोई कर्मचारी हो सकते हैं। दूसरी तरह के लोग घर के भी हो सकते हैं चाहे वे चाचा, मामा, पड़ोसी भी हो सकता है। दूसरी तरह के ये लोग ज्यादा खतरनाक होते हैं। ऐसे लोग आसानी से शक के दायरे में नहीं आते। कई बार बच्चों के शिकायत करने पर भी अभिभावक बच्चों का यकीन नहीं करते। भारतीय समाज में बच्चों के प्रति यौन व्यवहार एक आम चलन की तरह देखा जाता है। बच्चों के यौन शोषण पर काबू पाना तो दिन पर दिन कठिन होता जा रहा है। इसलिए हर बार की तरह महज आंकड़ों पर चिंता जाहिर करने की बजाय ऐसे अपराधों की जड़ों पर प्रहार करने के उपायों पर विचार करने की जरूरत है।

बहुत सारे गरीब परिवारों के बच्चे कानूनी प्रतिबंध के बावजूद कालीन, पटाखे बनाने वाले कारखानों, चाय की दुकानों, ढाबों और घरेलू नौकर के रूप में काम करते पाए जाते हैं। वहां उनके मालिक न तो उनकी बुनियादी और अनिवार्य सुविधाओं का ध्यान रखते हैं और न खाने-पीने का। ऊपर से उनके साथ मार-पिट्टाई भी करते हैं। बच्चे अपने अभिभावकों की पिटाई के भी शिकार होते हैं। बहुत सारे लोगों की धारणा है कि मारने-पीटने से बच्चे अनुशासित होते हैं, जबकि अनेक मौकों पर, अनेक अध्ययनों से उजागर है कि मार-पीट का बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उनमें अपराध बोध पनपता है।

बच्चों के खिलाफ हो रहे अपराध, खासतौर पर यौन अपराध के ज्यादातर मामले सामने नहीं आ पाते, क्योंकि बच्चे समझ ही नहीं पाते कि उनके साथ कुछ गलत हो रहा है। अगर वे समझते भी हैं तो डट के डर से अभिभावकों से इस बारे में बात नहीं करते हैं। महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय के अध्ययन में भी यही बात सामने आई है। बच्चों पर बढ़ रहे अपराधों पर नियंत्रण पाने के लिये व्यापक प्रयत्नों की अपेक्षा है। बच्चों से खुलकर बात करें। उनकी बात सुनें और समझें। अगर बच्चा कुछ ऐसा बताता है तो उसे गंभीरता से लें। इस समस्या को हल करने की कोशिश करें। पुलिस में बेझिझक शिकायत करें। बच्चों को 'गुड टच-बैड टच' के बारे में बताएं- बच्चों को बताएं कि किस तरह किसी का उनको छूना गलत है। बच्चों के आस-पास काम करने वाले लोगों की पुलिस वेरिफिकेशन होनी चाहिए। जब कोई अपराध करता हुआ पकड़ा जाता है तो उसे फ्रास्ट ट्रेक कोर्ट के जरिए जल्द से जल्द सजा मिलनी चाहिए। अपराधियों को जल्द सजा समाज में सख्त संदेश देती है कि ऐसा अपराध करने वाले बच नहीं सकते। बाल यौन अपराधियों को सजा देने के लिए खास कानून है- पॉक्सो यानि प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंसेस। इस कानून का मकसद बच्चों के साथ यौन अपराध करने वालों को जल्द से जल्द सजा दिलाना है, इस कानून का सही परिप्रेक्ष्य में तत्परता से पालन होना चाहिए। बच्चों के खिलाफ अपराध के ज्यादा मामले बाल सुरक्षा अधिनियम 2012 आने के बाद सामने आए हैं। पहले अपराधों को दर्ज नहीं कराया जाता था लेकिन अब लोगों में जागरूकता आने के कारण बच्चों के खिलाफ अपराध के दर्ज मामलों में बढ़ोतरी देखी गई है।

ईरानी ने प्रियंका के नारे पर किया कटाक्ष

# घर पर लड़का है, पर लड़ नहीं सकता...



ईरानी ने राहुल गांधी का जिक्र करते हुए कहा, 'क्या लोगों में उस व्यक्ति को लेकर भी यह भावना है? उन्होंने कहा कि महिला नेताओं से यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वे केवल समाज की महिला सदस्यों के लिए ही काम करेंगी। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा के नारे 'लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ' को लेकर कटाक्ष करते हुए बृहस्पतिवार को कहा, 'घर पर लड़का है, पर लड़ नहीं सकता।'

ईरानी ने एक निजी समाचार चैनल के कार्यक्रम में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव को लेकर भी व्यंग्य किया। ईरानी ने कहा, 'उत्तर प्रदेश में चुनाव विकास के मुद्दे पर लड़ा जाएगा और हम उम्मीद करते हैं कि नीति एवं विकास और लोकतंत्र को मजबूत करने पर विचार विमर्श होगा। प्रियंका ने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में 40 प्रतिशत सीटों पर महिला उम्मीदवारों को खड़ा करने की पिछले महीने घोषणा करते हुए 'लड़की हूँ, लड़ सकती हूँ' का नारा दिया था। इस नारे का जिक्र करते हुए ईरानी ने कहा कि इसका अर्थ हुआ कि 'घर पर लड़का है, पर लड़ नहीं सकता।'

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री ने महिला उम्मीदवारों को 40 फीसदी टिकट देने के प्रियंका गांधी के प्रस्ताव पर पलटवार करते हुए कहा, 'इसका अर्थ यह है कि वह कह रही हैं कि वह महिलाओं को 60 प्रतिशत टिकट नहीं देना चाहतीं। उन्होंने कहा, मैं यह नहीं कह रही कि राजनीति और लोकतंत्र में लोगों को

कोशिश नहीं करनी चाहिए। जीत और हार राजनीति का हिस्सा है। मैं भी 2014 में हार गई थी लेकिन सवाल यह है कि लोगों का आपके प्रयासों पर कितना विश्वास है। ईरानी ने राहुल गांधी का जिक्र करते हुए कहा, 'क्या लोगों में उस व्यक्ति को लेकर भी यह भावना है?' उन्होंने कहा कि महिला नेताओं से यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वे केवल समाज की महिला सदस्यों के लिए ही काम करेंगी। यह सवाल पूछे जाने पर कि क्या भाजपा धुवीकरण के फार्मूले पर काम करती है, उन्होंने कहा, 'क्या आपको लगता है कि इस देश के नागरिक राजनीतिक विश्लेषण नहीं कर सकते और वह किसी फॉर्मूले के कारण वोट देंगे?'

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने गत 31 अक्टूबर को हरदोई में एक कार्यक्रम में कहा था कि महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू और मोहम्मद अली जिन्ना बैरिस्टर बने तथा देश की आजादी के लिए संघर्ष किया और कभी इससे पीछे नहीं हटे। अखिलेश यादव के इस बयान पर ईरानी ने कटाक्ष करते हुए कहा कि यह तुलना फिर से दिखाती है कि 'लड़के हैं, लड़ नहीं सकते।'

उन्होंने कहा, सरदार पटेल अतुलनीय हैं। पांच सौ रियासतों में एकता की भावना जगाने का श्रेय सरदार पटेल को जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व कितना विराट रहा होगा।

ईरानी ने कहा, क्या आप उस व्यक्ति की तुलना उस सज्जन (जिन्ना) से कर सकते हैं, जिन्होंने कहा था कि चलिए, धर्म के आधार पर हम देश को विभाजित करते हैं।

# प्रदूषण सिर्फ फेफड़ों को नुकसान नहीं पहुँचा रहा, नपुंसकता का खतरा भी बढ़ा रहा

प्रदूषण सिर्फ फेफड़ों को नुकसान नहीं पहुँचा रहा, नपुंसकता का खतरा भी तेजी से बढ़ रहा है। वायु गुणवत्ता सूचकांक गंभीर श्रेणी में चले जाने के कारण लोगों को गले में जलन तथा आंखों में पानी आने जैसी परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा परेशानी उन लोगों को है, जिनके फेफड़े कोरोना के कारण पहले ही काफी कमजोर हैं। पहले से ही प्रदूषण की खतरनाक स्थिति के मद्देनजर पटाखों पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों की धजियां उड़ते हुए दिल्ली-एनसीआर में इस साल भी जिस प्रकार लोगों ने जमकर पटाखे चलाए, उससे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) कई इलाकों में गंभीर स्तर से भी अधिक 480 तक पहुँच गया। पटाखों के कारण दीवाली के अगले दिन प्रदूषण का स्तर 2017 से 2020 तक जहाँ क्रमशः 403, 390, 368, 435 था, वहीं इस वर्ष यह सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए 462 के पार जा पहुँचा और प्रदूषण के भयानक स्तर के कारण उत्तर भारत के कई शहर धुंध की मोटी चादर में लिपटे रहे। यही नहीं, फेफड़ों को नुकसान पहुँचाने वाले जिन महीन कणों पीएम 2.5 की सुरक्षित दर 60 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर निर्धारित है, उनकी औसत सांद्रता भी इससे करीब सात गुना यानी 430 तक पहुँच गई। दीवाली के अगले दिन पीएम 10 का स्तर भी 558 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया गया। स्थिति को विकराल बनाने में खेतों में जलती पराली भी खतरनाक भूमिका निभा रही है। हाल ही में नासा द्वारा जारी आंकड़े देखें तो हरियाणा में पराली जलने की 9-16 सितम्बर तक कुल 9 और 1 अक्टूबर को 35 तथा 5 नवम्बर को 500 घटनाएँ देखी गईं, वहीं पंजाब में 19-21 सितम्बर के बीच 50 और 1 अक्टूबर को 255 घटनाएँ देखी गईं लेकिन दीवाली के अगले दिन 5 नवम्बर को पंजाब में पराली जलने की करीब 6000 घटनाओं ने तो पटाखों के विपैले धुएँ के साथ मिलकर प्रदूषण को खतरनाक स्तर पर पहुँचा दिया।

वायु गुणवत्ता सूचकांक गंभीर श्रेणी में चले जाने के कारण लोगों को गले में जलन तथा आंखों में पानी आने जैसी परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। सबसे ज्यादा परेशानी उन लोगों को है, जिनके फेफड़े कोरोना के कारण पहले ही काफी कमजोर हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार आम धारणा है कि प्रदूषण के कारण श्वास संबंधी परेशानियाँ ज्यादा होती हैं लेकिन विभिन्न शोधों में स्पष्ट हो चुका है कि प्रदूषण के सूक्ष्म कण हमारे मस्तिष्क की सोचने-समझने की क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। मानव स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों के संबंध में यह खुलासा भी हो चुका है कि इससे पुरुषों के वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या में 40 फीसदी तक गिरावट दर्ज की गई है, जिससे नपुंसकता का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। मेदांता के चैयरमैन डॉ. नरेश त्रेहन का कहना है कि जहरीली होती हवा से बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर पड़ेगा। बड़ों की तुलना में बच्चे प्रदूषण से ज्यादा प्रभावित होते हैं। दरअसल प्रदूषण के कण जब सतह तक पहुँच जाते हैं तो सबसे ज्यादा बच्चे ही उनके सम्पर्क में आते हैं। ऐसे बच्चे, जो सामान्य दिनों में श्वसन संक्रमण की चपेट में आ जाते हैं, उनमें प्रदूषण के कारण संक्रमण का स्तर काफी बढ़ जाता है। प्रदूषण के कारण बच्चों में एकाग्रता



की कमी, चिड़चिड़ापन इत्यादि परेशानियाँ भी देखने को मिलती हैं, इसके अलावा प्रदूषण बच्चों की लम्बाई कम होने का भी एक अहम कारण बन रहा है।

दिल्ली और आसपास के इलाकों के अलावा देश के अन्य हिस्सों की वायु गुणवत्ता भी बेहद खराब हो गई है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार दिल्ली के अलावा देश के 19 शहर गंभीर प्रदूषण की चपेट में हैं, जिनमें से अधिकांश उत्तर भारत के हैं। कुछ लोग अदालतों के हर फैसले में कमियाँ ढूँढते हैं, दीवाली पर आतिशबाजी पर प्रतिबंध संबंधी अदालत के फैसले का भी धार्मिक परम्पराओं में अदालती हस्तक्षेप का मामला बताकर जमकर विरोध किया गया और काफी हद तक उसी का परिणाम रहा कि इस वर्ष देश के लगभग तमाम हिस्सों में जबरदस्त आतिशबाजी हुई। ऐसे अदालती फैसलों का विरोध करते समय हम भूल जाते हैं कि दीवाली तो पटाखों की शुरुआत होने के सदियों पहले से ही मनाई जाती रही है। वैसे भी देखा जाए तो सरकारों और देश की तमाम जिम्मेदार संस्थाएँ देश को प्रदूषण के कहर से बचाने में नाकारा साबित हो रही हैं।

दिल्ली में सभी तरह के पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध होने के बावजूद खूब पटाखे चले, कहीं कोई किसी को रोकने वाला नहीं था। इसी प्रकार हरियाणा में भी सरकार द्वारा कई जिलों में पटाखों पर प्रतिबंध लगाया गया था लेकिन

पुलिस-प्रशासन की नाक तले या यूँ कहें कि उन्हीं के संरक्षण में पर्यावरण के लिए जानलेवा हर तरह के पटाखे खुलेआम बिके। तमाम चेतावनियों और दिशा-निर्देशों के बावजूद अब दिल्ली की रात और उसके बाद प्रदूषण का स्तर इतना खतरनाक हो जाता है कि ऐसा लगने लगता है, मानो किसी संक्रामक बीमारी ने हमला बोल दिया हो। ऐसे में अगर लोगों के स्वास्थ्य के मद्देनजर सर्वोच्च न्यायालय ऐसे कठोर फैसले लेने पर विवश होता है तो इसमें गलत क्या है। ऐसे फैसलों को धर्म और आस्था की चाशनी में घोलकर देखने की बजाय अगर अदालत के ऐसे फैसलों की सदाशयता को समझें और उन्हें व्यावहारिक बनाने में अपने-अपने स्तर पर प्रयास करें तो यह स्वास्थ्य के लिहाज से न केवल दूसरों के बल्कि स्वयं अपने हित में भी होगा।

पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाशित हुई अपनी पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त सांसें' में मैंने पटाखों से होने वाले प्रदूषण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया है कि पटाखों में हरी रोशनी के लिए बैरियम का उपयोग किया जाता है, जो रेडियोधर्मी तथा विषैला होता है जबकि नीली रोशनी के लिए कॉपर का इस्तेमाल होता है, जिससे कैंसर का खतरा होता है और पीली रोशनी के लिए गंधक इस्तेमाल किया जाता है, जिससे सांस की बीमारियाँ जन्म लेती हैं। पटाखों के फूटने के करीब

वायु गुणवत्ता सूचकांक गंभीर श्रेणी में चले जाने के कारण गले में जलन तथा आंखों में पानी आने जैसी परेशानियों से जूझना पड़ रहा



100 घंटे बाद तक हानिकारक रसायन वातावरण में घुले रह सकते हैं। पटाखों के धुएं में सल्फर डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोक्साइड, ऐस्बेस्टॉस के अलावा विषैली गैसों के रासायनिक तत्व भी पाए जाते हैं, जो ग्लोबल वार्मिंग के लिए भी अनुकूल परिस्थितियां पैदा करते हैं। बारूद और रसायनयुक्त पटाखों के जहरीले धुएं से श्वास संबंधी रोग, कफ, सिरदर्द, आंखों में जलन, एलर्जी, उच्च रक्तचाप, दिल का दौरा, एम्फिसिया, ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया, अनिद्रा सहित कैंसर जैसी असाध्य बीमारियां फैल रही हैं। पटाखों के शोर और प्रदूषण से दुधारू पशुओं में एडरलीन हार्मोन कम हो जाता है, जिसका उनके दूध देने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पटाखे तैयार करते समय ध्वनि, प्रकाश व धुआं उत्पन्न करने वाले जिन तत्वों का प्रयोग किया जाता है, उनमें 75 प्रतिशत शोरा अथवा बारूद, 10 प्रतिशत गंधक और 15 प्रतिशत कोयला होता है। पटाखों की कानफोड़ आवाज से कानों के पर्दे फटने तथा बहरेपन जैसी समस्याएं भी तेजी से बढ़ी हैं। जहरीले पटाखों के कारण बैक्टीरिया तथा वायरस संक्रमण की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। एम्स निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने तो चेतावनी भरे लहजे में कहा भी है कि बढ़ते प्रदूषण से देश में कोरोना के मामले बढ़ सकते हैं।

-साभार

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल बोले

## सीमा के प्रबंधन में पुलिस बलों की बड़ी भूमिका



राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने कहा कि, सीमा प्रबंधन में पुलिस की बड़ी भूमिका है। डोभाल ने कहा कि लोकतंत्र का मर्म मतपेटी में नहीं बल्कि कानूनों में निहित होता है जो निर्वाचन प्रक्रिया से चुने गए लोगों द्वारा बनाए जाते हैं। उन्होंने कहा कि, जहां कानून प्रवर्तक कमजोर, भ्रष्ट और पक्षपातपूर्ण हैं वहां लोग सुरक्षित महसूस नहीं कर सकते।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने शुक्रवार को कहा कि कानून और व्यवस्था बनाए रखने के अलावा, पाकिस्तान, चीन, म्यांमा और बांग्लादेश जैसे देशों से लगती भारत की 15,000 किलोमीटर से अधिक लंबी सीमा के प्रबंधन में पुलिस बलों की बड़ी भूमिका है। सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में भारतीय पुलिस सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के 73वां बैच की पासिंग आउट परेड को संबोधित करते हुए डोभाल ने कहा कि भारत की संप्रभुता तटीय क्षेत्रों से लेकर सीमावर्ती क्षेत्रों तक अंतिम पुलिस थाने के अधिकार क्षेत्र तक जाती है। डोभाल ने कहा कि भारत के 32 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के हर हिस्से में कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी पुलिस बलों की है। उन्होंने कहा, "सिर्फ वही पुलिसिंग ही नहीं जिसमें आप

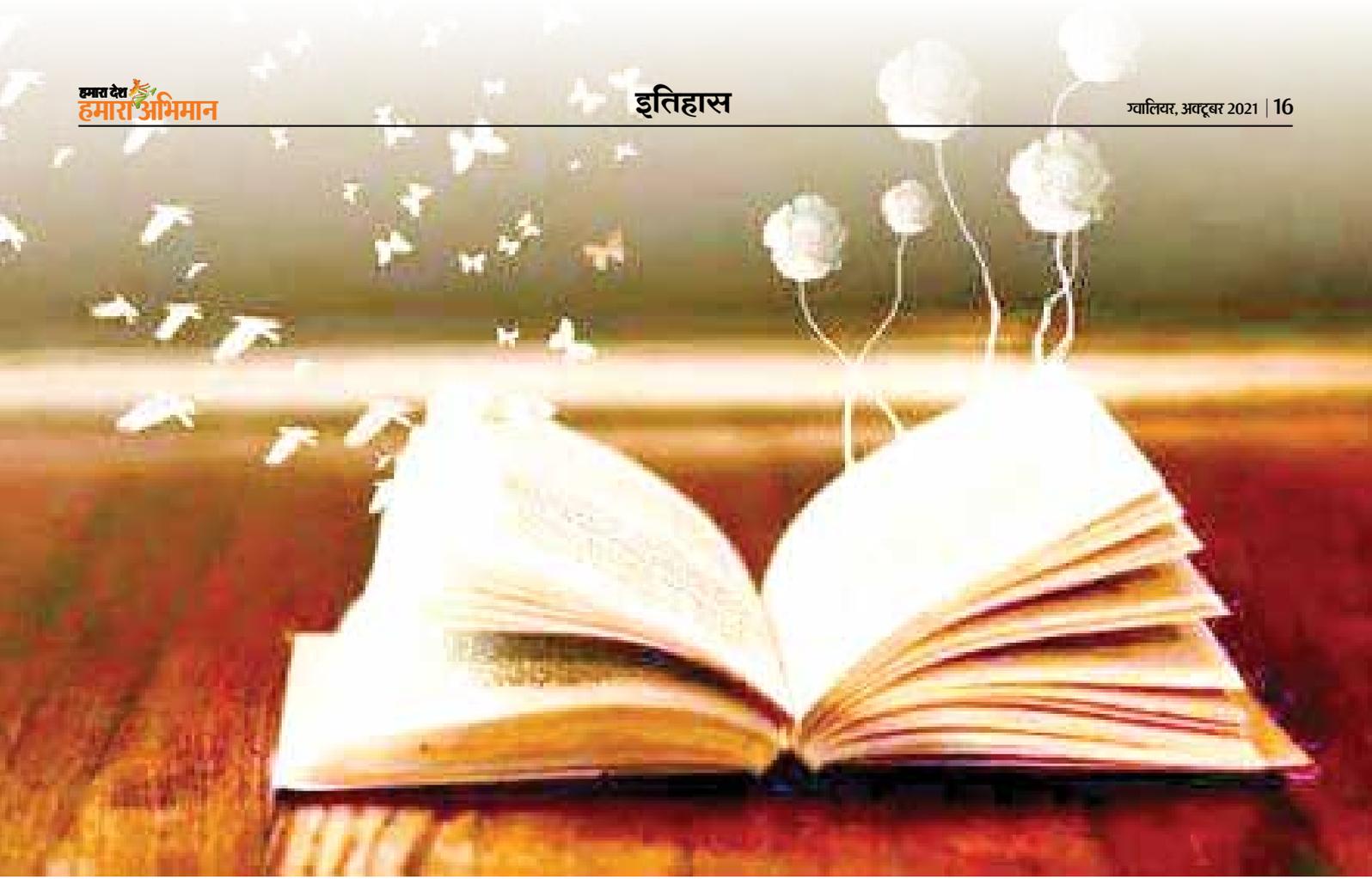
लोगों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया गया है बल्कि इसका भी विस्तार होगा।

आप इस देश के सीमा प्रबंधन के लिए भी जिम्मेदार होंगे। पंद्रह हजार किलोमीटर की सीमा, जिसमें से ज्यादातर हिस्से की अपनी ही तरह की समस्याएं हैं।" उन्होंने कहा कि देश में पुलिस बल की संख्या 21 लाख है और अभी तक 35,480 कर्मियों ने बलिदान दिया है। डोभाल ने कहा, "हम भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के उन 40 अधिकारियों को भी याद करना चाहेंगे जो शहीद हो गए।" डोभाल ने कहा कि लोकतंत्र का मर्म मतपेटी में नहीं बल्कि कानूनों में निहित होता है जो निर्वाचन प्रक्रिया से चुने गए लोगों द्वारा बनाए जाते हैं। उन्होंने कहा, "जहां कानून प्रवर्तक कमजोर, भ्रष्ट और पक्षपातपूर्ण हैं वहां लोग सुरक्षित महसूस नहीं कर सकते।" डोभाल ने कहा कि पुलिस को अन्य संस्थानों के साथ मिलकर काम करना होगा जिसके लिए उन्हें देश की सेवा करने के लिहाज से मानसिक सोच की जरूरत है। उन्होंने कहा, "यदि आंतरिक सुरक्षा विफल होती है तो कोई देश महान नहीं बन सकता। अगर लोग सुरक्षित नहीं हैं तो वे बढ़ नहीं सकते और संभवतः देश भी कभी आगे नहीं बढ़ेगा।

## बाड़मेर बस हादसे में बचाव कार्य में मदद करने वालों को सम्मानित करेगी सरकार : गहलोत

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बाड़मेर सड़क दुर्घटना में अपनी जान की परवाह किए बिना अन्य लोगों का जीवन बचाने वाले स्थानीय लोगों को जिला स्तर एवं राज्य स्तर पर सम्मानित करने के लिए प्रशासन को बृहस्पतिवार को निर्देश दिए। उल्लेखनीय है कि बाड़मेर जिले में बुधवार को एक भीषण सड़क हादसे में 12 लोगों की मौत हो गई थी और 38 अन्य लोग घायल हो गये थे। भांडियावास गांव के पास एक बस एक ट्रक की आमने सामने की टक्कर के बाद दोनों वाहनों में

आग लग गई थी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने ट्वीट किया, "बुधवार को बाड़मेर में हुई बस-ट्रक दुर्घटना एक भीषण हादसा था, जिसमें 12 लोगों की जान चली गई। मैं इन सभी (मृतकों) के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ।" उन्होंने कहा, "इस दुर्घटना में कई स्थानीय लोगों ने अपनी जान पर खेलते हुए अन्य लोगों की जान बचाई। ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं।" गहलोत ने प्रशासन को बचाव अभियान में मदद करने वाले इन सभी लोगों को जिला स्तर एवं राज्य स्तर पर सम्मानित किए जाने का निर्देश दिया है।



# एक झलक अतीत के झरोखे से

• श्वेता श्रीवास्तव सिन्हा  
(योग सलाहकार और एजिनेटर)

**14** सितंबर, एक तारीख जिसे हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन, अंग्रेजी बोलने वाले लोग भी हिंदी बोल लिया करते हैं। तो आइए हम हिंदी दिवस मनाते हुए, हिंदी कहानियों के अतीत को थोड़ा बहुत जानने का प्रयास करते हैं।

हिंदी कहानी की शुरुआत 18वीं और 19वीं शताब्दी से मानी जाती है परंतु इस परंपरा का परिचय, इससे पूर्व से ही मिलता है। भारतीय साहित्य में कहानी का प्राचीनतम रूप वेदों में मिलता है। जो सबसे पहला वेद आया था, वह था ऋग्वेद फिर क्रमशः सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद की रचना हुई। वेद हमारे भारतवर्ष का सबसे पहला मौखिक ग्रंथ है, जिन्हें 4000 साल पहले सुनाना शुरू किया गया था। कहानी के तत्व उपनिषदों के चरित्र में भी पाए जाते हैं। उपनिषद का सही अर्थ ही होता है - बातें करना। किसी भी एक विषय के ऊपर परिचर्चा करना। इसके बाद रामायण और महाभारत की रचना हुई, जिन्हें कहानियों के माध्यम से आज भी सुनाया और दिखाया जा रहा है। यह पौराणिक कथाएं सदियों से हैं और यही कहानियां गीतों के रूप में सुनने को मिलती थीं। कई कहानियां हमें नाटक के रूप में भी देखने को मिलती थीं। अतः इस बात की परिकल्पना करना बहुत दिलचस्प होगा कि पहले क्या आया? पहले क्या नाटक और गीतों में कहानियां सुनाई जाती थीं? पहले गीत आया, क्योंकि वेदों में मंत्र का जाप होता था, जिसमें उच्चारण ताल और लय का बहुत ध्यान रखा

जाता था। फिर धीरे-धीरे यह गीतों की मौखिक परंपरा, यज्ञ के अनुष्ठानों से जुड़ने लगी। इसका मतलब है कि लोग प्रदर्शन करने लगे, जिनमें पात्र होते थे, संवाद निर्धारित किए जाते थे। यज्ञ के बीच मनोरंजन करने के लिए कहानियां सुनाई जाने लगी।

भारतीय साहित्य में कहानी का प्राचीनतम रूप, लोक कथा के रूप में मिलता है। जिसमें वीरों के प्रेम, शौर्य, न्याय, ज्ञान और वैराग्य आदि का वर्णन मिलता है। 'वृहत कथा' सबसे प्राचीन कथा मानी जाती है। कथा की परंपरा में ही 'नीति कथा' को भी लिया जाता है। पंचतंत्र इसी कथा शैली का उदाहरण है, जिसमें मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा भी दी गई है। हिंदी के पूर्व मध्यकाल में मुसलमानों के आने के बाद लैला मजनू, शिरीन फरहाद जैसी कथाएं प्रकाश में आईं। इसी काल में अकबर-बीरबल की व्यंग विनोद तथा मनोरंजन पूर्ण कहानियां भी लोकप्रिय हुईं। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में गद्य साहित्य के विकास का आरंभ भारतेंदु युग से खड़ी बोली के साथ माना जाता है। इस युग में यह एक तरह से ब्रिटिश हुकूमत तथा आर्थिक शोषण के विरोध का माध्यम बन गया था। यही कारण है कि उस समय अनेक मासिक एवं सप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन शुरू हुआ। इन रचनाओं में व्यंग्य और स्वप्न चित्र जैसे तत्व होते थे। इन्हीं तत्वों को ध्यान में रखते हुए 'रानी केतकी की कहानी' (1808) को हिंदी की पहली कहानी माना गया है। इसके बाद कहानी के युग में एक लंबा अंतराल आया। लगभग एक शताब्दी के बाद 'इंदुमती' कहानी प्रकाशित हुई। इसके बाद कई कहानियां जैसे टोकरी भर मिट्टी, ग्यारह वर्ष का समय, बिजली आदि कहानियां एक के बाद एक

प्रकाशित हुईं और प्रचलित भी हुईं।

बीसवीं शताब्दी में 1911 का समय हिंदी कहानी रचना के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा। इस समय प्रेमचंद, प्रसाद और विश्वंभर नाथ शर्मा द्वारा रचित कहानियां प्रकाशित हुईं, जिनसे हिंदी की आधुनिक कहानी के विकास में एक गति आ गई। आज भी इन महान कहानीकारों की रचना बड़े चाव से पढ़ी जाती है। 'बड़े घर की बेटा', 'बूढ़ी काकी', 'कानों में कंगना' और 'रक्षाबंधन' जैसी रचनाओं ने अपना विशेष स्थान बना रखा है। भारतीय ग्रामीण जीवन का सजीव अंकन प्रेमचंद की कहानियों में मिलता है। इन कहानियों में उन्होंने कई जातियां और राष्ट्रीय सवाल को उठाया है। इनके बाद हरिवंश राय बच्चन जैनेंद्र और यशपाल जैसे लेखकों ने व्यक्ति और समाज के परस्पर संबंधों पर लिखा। 'चुन्नी मुन्नी', 'तापसी की तितिक्षा' जैसी रचनाओं में मानवीय कमजोरियों जैसे ईर्ष्या, क्रोध, भय आदि भावनाओं का चित्रण किया गया है।

हिंदी कहानी के इतिहास में 1954 से 1930 तक तक की समय सीमा को नई कहानी कह कर संबोधित किया गया है, जिसमें अतीत को हटाकर वर्तमान पर नई कहानी को केंद्रित किया गया है। हम सब ने अपने अध्ययन काल में निर्मल वर्मा, फणीश्वर नाथ रेणु और भीष्म साहनी जैसे लेखकों की रचनाएं अवश्य पढ़ी होंगी। आज की वर्तमान कहानी अपने परिवेश से पूरी तरह जुड़ी हुई है और सामाजिक समस्याओं को लेकर चलती है। आज की हिंदी कहानी पूरी चेतन का सजगता जागरूकता के साथ वर्तमान समय का प्रतिनिधित्व कर रही है।

# आतंकी संगठन टीटीपी के आगे पाक सरकार ने क्यों टेके घुटने...?

हम आपको बता दें कि टीटीपी को पाकिस्तानी तालिबान भी कहा जाता है, जो अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर सक्रिय एक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन है। यह एक दशक से अधिक समय में पाकिस्तान में कई हमलों को अंजाम दे चुका है, जिनमें हजारों लोगों की मौत हुई है। पाकिस्तान सरकार और प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के बीच एक महीने के लिए संघर्षविराम समझौता हो गया है। इस संघर्षविराम समझौते से एक चीज साफ हो गयी है कि आतंक की फैक्ट्री पाकिस्तान ने अब खुद आतंकवाद के आगे घुटने टेक दिये हैं। इस संघर्षविराम समझौते पर सिर्फ अन्य देश ही सवाल नहीं उठा रहे खुद पाकिस्तानी सुप्रीम कोर्ट ने इमरान खान से सवाल पूछा है कि सेना द्वारा संचालित एक स्कूल पर 2014 में नरसंहार के दोषियों से सरकार क्यों बातचीत कर रही है?

## कौन है टीटीपी?

हम आपको बता दें कि टीटीपी को पाकिस्तानी तालिबान भी कहा जाता है, जो अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर सक्रिय एक प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन है। यह एक दशक से अधिक समय में पाकिस्तान में कई हमलों को अंजाम दे चुका है, जिनमें हजारों लोगों की मौत हुई है। यह संगठन कथित तौर पर अफगानिस्तान की सरजमीं का इस्तेमाल पाकिस्तान के खिलाफ आतंकवादी हमलों की साजिश रचने के लिए करता है। पाकिस्तान सरकार अब अफगानिस्तान में तालिबान के प्रभाव का इस्तेमाल टीटीपी के साथ शांति समझौता करने और हिंसा को रोकने की कोशिश करने के लिए कर रही है। हालांकि इस्लामिक जिहादी संगठन टीटीपी के आगे घुटने टेकने से इमरान खान की सरकार की चारों ओर आलोचना हो रही है। गौरतलब है कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने पिछले महीने एक साक्षात्कार में खुलासा किया था कि उनकी सरकार, अफगानिस्तान में तालिबान की मदद से 'सुलह' के लिए टीटीपी के साथ बातचीत कर रही है। इस बात को लेकर कई नेताओं और आतंकवाद का शिकार बने कई लोगों ने उनकी काफी आलोचना की थी। हालांकि पाकिस्तान के गृह मंत्री शेख रशीद ने सरकार के इस कदम का बचाव करते हुए कहा था कि वार्ता 'अच्छे तालिबान' के लिए है।

## फँस गये इमरान खान?

दूसरी ओर, पाकिस्तान सरकार की आलोचना वहां की जनता तो कर ही रही है अब आलोचकों में वहां का सुप्रीम कोर्ट भी शामिल हो गया है। हम आपको याद दिला दें कि 16 दिसंबर, 2014 को तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आतंकवादियों ने पेशावर में आर्मी पब्लिक स्कूल पर हमला कर 147 लोगों की जान ले ली थी। मृतकों में 132 बच्चे थे। इस मामले की सुनवाई जब पाकिस्तान सुप्रीम कोर्ट में चल रही थी उस दौरान इमरान खान को कई



सवालों का सामना करना पड़ा। अदालत की एक पीठ ने सवाल किया कि प्रधानमंत्री करीब 150 लोगों के नरसंहार के दोषियों के साथ बातचीत क्यों कर रहे हैं? अदालत ने सरकार को उस भीषण हमले में सुरक्षा विफलता की जिम्मेदारी तय करने के लिए एक महीने का समय भी दिया है। यहां यह उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के प्रधान न्यायाधीश गुलजार अहमद की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ ने इमरान खान को तलब किया था। पेशावर के स्कूल में हमले की जांच करने वाले विशेष आयोग ने पिछले हफ्ते अदालत में पेश की गयी अपनी रिपोर्ट में हमले के लिए सुरक्षा विफलता को जिम्मेदार ठहराया था। अदालत की पीठ ने सुरक्षा विफलता के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कोई कार्रवाई करने की बजाय टीटीपी के साथ बातचीत करने के लिए सरकार को आड़े हाथों लिया। न्यायाधीश ने प्रधानमंत्री इमरान खान से पूछा, 'अगर सरकार इन बच्चों के हत्यारों के साथ हार के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने जा रही थी... तो इसका मतलब क्या हम एक बार फिर आत्मसमर्पण करने जा रहे हैं?' प्रधान न्यायाधीश गुलजार अहमद ने इमरान खान को लताड़ते हुए कहा, 'आप सत्ता में हैं। सरकार भी आपकी है। आपने क्या किया? आप दोषियों को बातचीत की मेज पर ले आए।'।

## पाकिस्तान सरकार की सफाई

वहीं टीटीपी से बातचीत को लेकर चारों ओर से घिरी इमरान सरकार के बचाव में कूदते हुए पाकिस्तान के सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने कहा है कि सरकार हिंसा छोड़कर संविधान को अपनाने के इच्छुक आतंकियों को एक मौका देना चाहती है। उन्होंने कहा कि प्रतिबंधित संगठन तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) से संबद्ध कुछ समूह हिंसा

छोड़ना चाहते हैं और सरकार भी उन्हें सामान्य जीवन में लौटने का एक मौका देना चाहती है।

## किसने करायी सुलह?

जहां तक पाकिस्तान सरकार और टीटीपी के बीच बनी सहमति की बात है तो आपको बता दें कि दोनों के बीच सुलह कराने में अफगानिस्तान के कार्यवाहक गृह मंत्री सिराजुद्दीन हक्कानी ने काफी मदद की है। सिराजुद्दीन हक्कानी विशेष रूप से घोषित एक वैश्विक आतंकवादी है जिसके सिर पर अमेरिका ने एक करोड़ डॉलर का इनाम रखा है। दुर्दांत हक्कानी नेटवर्क का पाकिस्तान समर्थक यह आतंकवादी, अफगानिस्तान में अमेरिका के हितों वाले कई ठिकानों पर हमला करने के मामले में एफबीआई द्वारा वांछित है।

## डील क्या हुई?

हम आपको यह भी बताना चाहेंगे कि पाकिस्तान सरकार और टीटीपी के बीच संघर्षविराम की सहमति बनाने के लिए लगभग दो सप्ताह तक अफगानिस्तान के दक्षिण पश्चिमी प्रांत खोस्त में "सीधी और आमने-सामने बैठ कर" बातचीत हुई। इस बातचीत में संघर्षविराम पर सहमति ऐसे ही नहीं बन गयी है बल्कि टीटीपी के कई लड़ाकों को रिहा करने के लिए भी पाकिस्तान सरकार राजी हुई है। सूत्रों के मुताबिक पाकिस्तान सरकार ने दो दर्जन से ज्यादा आतंकी कमांडरों को रिहा किया है। अब बताया जा रहा है कि महीने भर के लिए घोषित यह संघर्षविराम आगे भी बढ़ाया जा सकता है। देखना होगा कि पाकिस्तान सरकार की ओर से छोड़े गये आतंकवादी कमांडर क्या गुल खिलाते हैं और किसके लिए सिरदर्द पैदा करते हैं।

दीपावली का जगमगाता त्यौहार धीरे-धीरे अपने लोक कला के उत्सवी रंगों को पीछे छोड़ता जा रहा है। त्यौहारों में आते नित नए बदलावों से बाजार को तो फायदा मिल रहा है लेकिन अंचल की लोककला का कौशल और हुनर खत्म हो रहा है। लगातार कई परम्पराएँ और विधाएँ लुप्त हो रही हैं। तीज-त्यौहारों और उत्सवों के समय अंचल में कभी समृद्ध रही मांडणों की परंपरा भी अब दम तोड़ने लगी है। इस बार दीवाली पर गाँवों की दीवारों पर न मांडणें मिले न फर्श पर चौक। धीरे-धीरे कम होते हुए पीढ़ियों के बाद इस बार की दीवाली ऐसी है जब शहरों ही नहीं गाँवों तक में दीवाली पर बनने वाले परंपरागत चौक व मांडणें कहीं नजर नहीं आ रहे। कहीं दिखाई भी दिए तो बहुत कम और वे भी परंपरागत मांडणों से अलग।

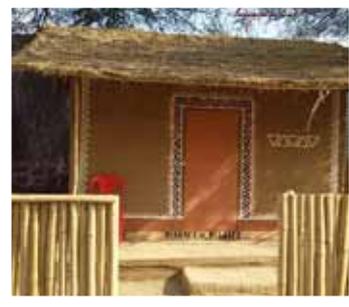
इन्हें राजस्थान में भी मांडना ही कहा जाता है, जबकि उत्तरप्रदेश में चौक पूना, बिहार में अरिचन, बंगाल में अल्पना, महाराष्ट्र में रंगोली, दक्षिण में कोलम तथा आंध्र प्रदेश में भुगुल के नाम से पहचाना जाता है। मध्यप्रदेश के हर अंचल में मांडणों की कभी अपनी खास शैली और शिल्प हुआ करता था। इनमें सिर्फ सौन्दर्य बोध ही नहीं मौलिकता और हुनर का कौशल भी झलकता था। बीते सालों में दीवाली की रंगाई-पुताई के साथ नानी-दादी या बुआ-भाभी सफेद, लाल, रू-गुलाबी और हरे-नीले रंगों से परंपरागत मांडणों की पूरी दुनिया ही अपने घर के फर्श व दीवारों पर बनाया करती थी। मांडना हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की समृद्धि का प्रतीक है और इन्हें चौंसठ कलाओं में भी गिना जाता है। यहाँ तक कि सिंधु घाटी सभ्यता में भी इसके चिह्न पाए जाते हैं।

मध्यप्रदेश में लोक कला के मांडणों और चौक बनाए जाने की पीढ़ियों पुरानी परंपरा है और इन्हें काकी-भाभी अपनी माँ और सास से सीखते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती रही। मांडणों की शुरुआत बालिकाएँ संजा के साथ ही शुरू कर देती थी। संजा को आकार देते-देते वे लोक कला, मांडणों और चौक की पहली पाठशाला बचपन में ही पढ़ लिया करती थी। संजा किशोरियों का पर्व है जो पूरे श्रद्धा पक्ष में मनाया जाता है। इसमें वे सोलह दिनों तक हर दिन गोबर से संजा के अलग-अलग पारंपरिक आकृतियों बनाती हैं और उन्हें फूल, पत्ती अथवा चमकीली पत्रियों से सजाती हैं। अंतिम दिन सुंदर किला-कोट बनाया जाता है। लड़कियाँ रोज शाम को इनकी आरती उतारकर समूह में गीत गाती हैं।

मालवा-निमाड़ में भित्ति-चित्रों व मांडणों के साथ-साथ फर्श पर फूल-पत्ती, पैर, गाय-बैलों के खूर और कई तरह की आकृतियाँ उकेरी जाती है। दीवाली के त्यौहार पर गाय-बैलों को नहलाने-धुलाने के बाद उन पर भी रंगों से कई तरह की आकृतियाँ बनाने का रिवाज है। यह कला किसी व्यक्ति विशेष की कृति नहीं होती बल्कि लोक की सामूहिक अभिव्यक्ति होती है। मांडणों का अर्थ किसी भी सतही धरातल पर रेखाओं द्वारा चित्रण कराने से है। मांडणों के अंतर्गत वे सभी आकृतियाँ आती हैं जो धरती या दीवारों पर बनाई जाती है। पहले रंगोली की जगह इन्हें ही बनाया जाता रहा। रंगोली की तुलना में ये ज्यादा समय तक बने रहते थे, कई जगह तो महीनों तक। रंगोली की तरह इनके सांचे या फर्में नहीं होते थे, अनामद हाथों से इन्हें बनाया जाता था और इसी कारण इसका सौन्दर्य कुछ और ही होता था। यहाँ कोई दिन, तिथि, उत्सव या त्यौहार ऐसा नहीं

# गाँवों से लुप्त

उत्सवी उल्लास फीका... इस दीवाली न फर्श पर चौक, न दीवारों पर मांडने, लोककला विधा हुई आउटडेटेड



होता, जब औरतें लीपे-पुते आंगन में घर की गृहणियाँ मांडणें न बनाती हो। कोई भी अनुष्ठान या तीज-त्यौहार ग्रामीण इलाके में ऐसा नहीं होता, जिसमें मांडणों या चौक का समावेश न हो। प्रत्येक त्यौहार पर रंगोली मांडणों या चित्रावण करने की परंपरा है, जो लोक कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत है। लोक जीवन में घरों को सजाने की स्थानीय लोककला में मांडना सबसे ऊपर माना जाता रहा है। दीवाली पर तो यह कला लोकप्रथा का रूप धारण कर लेती है। गोबर या मिट्टी से लिपी-पुती दीवारों पर इनकी सुन्दरता देखते ही बनती

है। गाँव की गलियों से गुजरते हुए दीवारों और फर्श पर इन्हें देखना सुकून देता है। इससे लोगों का उत्सवी मन खिल-खिल जाता था। दशहरा, दीपावली तथा होली पर गाँवों में आंगन और दीवारें मांडणों से भरे रहा करते थे। ब्याह-शादी के मौकों पर भी माता पूजन, गणेश पूजन और मंडप के लिए मांडणें बनाए जाते थे।

खासतौर पर मांडणें दो रंगों से बनाए जाते हैं, हालाँकि बाद में कई और रंग भी जुड़ने लगे जैसे रू-गुलाबी, हरा या नीला रंग, जो आसानी से गाँव के बाजार में मिल जाया करते हैं। दो खास रंगों में खडिया मिट्टी से सफेद



# हए मांडने...

**खत्म हुआ लोक शैली का हूनर... रेडीमेड बाजारों ने भी हजारों सालों की परम्परा को किया दरकिनार**



## खत्म हो रही है हीड की परम्परा

गाई दिवाली, गाए हीड, इस कहावत से हीड गाने और दीवाली की महत्ता साफ़ है। दीवाली से पहले गांवों में जैसे-जैसे रात बढ़ती जाती है, हीड की तान भी तेज होती जाती है। हीड गाने की परंपरा इस क्षेत्र में सदियों पुरानी है, पर गांवों के कुछ लोगों ने इसे अब भी जिंदा रखा है। हालांकि शहरों व कस्बों से यह परंपरा अब लगभग खत्म हो चली है। असल में हीड अपनी शैली के लोकगीत हैं, जिनकी अपनी एक कहानी है और कहने-सुनने वालों का अपना एक मजा। हीड में कव्वाली की तर्ज पर दो गायक दल होते हैं, जिनमें अमूमन 5 से लेकर 7 तक गायक होते हैं। एक दल हीड को चढ़ाता है तो दूसरा उसका उतारा देता है। कुछ इसी तरह खट्टी-मीठी नोकझोंक के साथ कब रात बीत जाती है, न सुनने वालों को पता चलता है और न ही गाने वालों को। ठंडी रातों में गांव की खामोशी में इनके स्वर गांवों की चौपालों से लेकर खलिहान और खेत तक जा पहुंचते हैं। हीड को भादव की हलछठ से कार्तिक महिने की दीवाली की पड़वा तक गाया जाता है। अलग-अलग दिन अलग-अलग किस्सों की हीड गाई जाती है। दीवाली की रात छाबड़ा (एक विशेष तरह का चमड़ा) की पूजन के बाद हीड का समापन होता है। देवास जिले में बागली के 70 वर्षीय देवाजी धनार बताते हैं कि वे बचपन से हीड सुनते आए हैं। वे खुद भी हीड गाते हैं। अमरपुरा के देवकरण टेलर बताते हैं कि हीड के गीतों में कई तरह के किस्से हैं। इनमें 24 योद्धा भी हैं तो राजा भी। एक धर्मी राजा है तो अनाचारी मालदेव भी। अपने सतीत्व से अपनी इज्जत-आबरू बचाने वाली हीरा भी। हीड गाने और सुनने के शौकीनों की जुबा पर ये किस्से मशहूर हैं। अमरपुरा के सुखराम चाचा और बालू मौची जब अपनी तान छेड़ते हैं तो पूरा गांव निस्तब्ध हो हीरा और मालदेव की कहानी में गुम हो जाता है। आज के दौर में मनोरंजन की यह चाहे सदियों पुरानी परम्परा हो पर कहने-सुनने वालों के लिए इसका एक अपना अलग मजा है, लोक अंचल का मजा, लोक परंपरा का मजा और इसे निभाते रहने की ललक।

और गेरू से लाल रंग बनाया जाता है। दोनों के स्थायित्व के लिए गोंद, सरस या बिलपत्र के फल का गुदा भी मिलाया जाता है, फिर कपड़े के छोटे से टुकड़े को घोल में भीगोकर अनामिका उँगली से मांडना बनाया जाता है। मांडना बीच से शुरू किया जाता है व फिर उसे चारों ओर बढ़ाया जाता है। आमतौर पर घर की निपुण व सिद्धस्थ महिला गेरू के घोल से मुख्य आकार बनाती है और बहू-बेटियाँ उन रेखाओं के बीच सफेद रंग से उन्हें भरती है। कुछ आदिवासी व ग्रामीण महिलाएँ बांस की पतली सलाई के सिरे पर रूई बांधकर भी चित्रावण बनाती हैं तो कुछ नारियल की नरेटी में घुले रंगों से चित्रावण बनाते हैं।

मांडने की पारम्परिक आकृतियों में ज्यामिती आकारों के साथ फूलों की आकृतियों का बाहुल्य होता है। ज्यामिति आकारों में वृत्त, चतुर्भुज, त्रिभुज, स्वस्तिक तथा अन्य मंगलकारी जैसे पेड़, फूल, शंख, कमल, मोर, घंटी, हाथी चँवर, छतर, रथ, बैलगाड़ी आदि का चित्रांकन आम है। दीवारों तथा पूजन की जगह और चौक पाट के आसपास बेल-बूटे बनाए जाते हैं। चित्रावण को भिन्ती चित्र के रूप में समझ सकते हैं। इनका विषय आमतौर पर जन-जीवन से जुड़ा होता है। घर और मंदिरों की दीवारों पर विवाह तथा देवी-देवताओं से सम्बंधित चित्रों के अलावा इनमें पशु-पक्षियों, लाड़ा-लाड़ी, सूरज-चांद, राजा-रानी,

सांतिया, कलश, पगलिए, फूल-पत्ती, पेड़, सेठ-सेठानी आदि के साथ-साथ कुछ हंसोड़ दृश्य भी होते हैं। मांडणों को मिटाया नहीं जाता क्योंकि इन्हें मिटाना अपशुन माना जाता है।

हर कमरे के लिहाज से मांडना अलग होता है। पूजाघर में अलग तो रसोईघर में अलग, आँगन का मांडना सबसे बड़ा और सजीला होता है तो दहलीज का छोटा, मुंडेर का, तुलसी चौर का सबके अलग-अलग। इनके आकार के साथ आकृति भी बदल जाती है। इनके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण हैं जो समाज ने अपने लंबे अनुभवों से सृजित किए हैं। वक्त के साथ यह महत्वपूर्ण कला सिमटती जा रही है। इसे सहेजने के लिए इंदौर, उज्जैन, रतलाम और देवास में कुछ खास सरकारी इमारतों तथा स्मारकों की दीवारों पर इन्हें बनाया जा रहा है। इनकी दमक और सौन्दर्य देखते ही बनता है। दीवारों पर सजे मांडने बरबस ही वहाँ से गुजरने वालों का मन मोह लेते हैं।

मालवा-निमाड़ में दो तरह की मांडना परम्पराएँ है एक जिसमें त्योंहारों, व्रत, अनुष्ठान या ब्याह-शादी पर अपने घर में गेरू-खड़िया या चावल के आटे को घोलकर बनाती हैं, दूसरी जिन्हें पेशेवर चितरे बनाते हैं। कुछ खास लोग होते हैं, जो बाहरी दीवारों तथा मंदिर के अहातों में इन आकृतियों और देवी देवताओं के चित्रों को लोक शैली में उकेरते हैं। इन्हें इसके बदले में अनाज या राशि दी जाती है। हरियाली अमावस्या की जिरौती, नागपंचमी को नाग, कुवार मास में संजा, नवरात्रि में नवरात्र, दशहरे के दिन दशहरा, सप्तमी पर हाथ (थापा) दीपावली की पड़वा पर गोवर्धन, भाईदूज का भित्ति चित्र, विवाह में कुल देवी का भित्तिचित्र, दरवाजे पर सती, मुख्य द्वार पर गणपति, दूल्हा-दुल्हन के हाथों में मेहंदी मांडना और चौक कलश आदि में भिन्न-भिन्न आकृतियों का रेखांकन की लोकचित्र परंपरा है। बुन्देलखण्ड में भी दीवाली के समय औरतें आपने घरों की दीवारों पर सुरैती बनाती हैं। इनमें गेरू से बेहद बारीक जालीनुमा अंकन किया जाता है। नवरात्रि में कुआँरी लडकियाँ मिटटी-गेरू या हल्दी से नौरता बनाती हैं। विवाह प्रसंग पर दरवाजे के दोनों तरफ मोरते, गोवर्धन पूजा पर गोबर से गोवर्धन, तथा भाई दूज पर पुतलियाँ बनाई जाती हैं। इसके अलावा मोर की जोड़ी बनाई जाती है जिन्हें मोर मुरेला या मोरइला भी कहा जाता है। बघेलखंड में भी अन्य चित्रांकन शैलियों के साथ विवाह के मौकों पर कोहबर बनाया जाता है। यहाँ बच्चे के जन्म के छठवें दिन छठी माता का भित्ति चित्र बनाते हैं। भाद्रपद की नवमी को दीवार पर नेउरा बनाकर पूजा जाता है।

आज जब सबकुछ बाजार में रेडिमेड मिल रहा है, व्यस्तताएँ बढ़ रही हैं तब लोक कला की ये महत्वपूर्ण विधाएँ या तो लुप्त हो चुकी हैं या लुप्त होने की कगार पर हैं। अब दीपावली और विवाह के मौके पर जगमग करते बिजली के बल्बों की छटा होती है, आतिशबाजी का धूम-धड़ाका तो होता है, यहाँ तक कि रेडीमेड चिपकाने वाले मांडने भी बाजार में हैं लेकिन मन को तसल्ली देने वाले लोक कला के ये हुनर लगातार कम होते जा रहे हैं। अंचल में अब 5 से 10 प्रतिशत लोग भी चित्रावण और मांडण नहीं बनाते। लगता है आने वाले दिनों में बाजार अंचल से कई और लोक कलाओं के हुनर भी निगल लेगा।



# फूलों की घाटी : धरती का



■ सुरेश्वर त्रिपाठी

बचपन की किसी पुस्तक में मैंने फूलों की घाटी के बारे में पढ़ा था। यह पाठ मेरे मन में ऐसा उतरा कि जब भी ढेर सारे फूल मेरे सामने होते तो मेरे मन में एक सवाल उठता कि फूलों की घाटी कैसी होती होगी। मुझे बहुत वर्षों तक यह नहीं पता था कि वास्तव में फूलों की घाटी कहाँ पर है। मन में एक दबी इच्छा थी कि यदि सम्भव हो सका तो मैं फूलों की घाटी जरूर जाऊँगा। और यह अवसर आया जब मैं अपने जीवन के 57वें वर्ष के पड़ाव पर था। ऋषिकेश के मेरे एक परिचित आशीष जुयाल का फोन आया कि सर आप वैली ऑफ फ्लावर चलेंगे क्या? आशीष ने यह भी बताया कि वे कुछ लोगों की एक टीम को लेकर वहाँ जा रहे हैं। मेरे मन में सन्देह था कि वैली ऑफ फ्लावर ही वह फूलों की घाटी है या नहीं जो मेरे बालमन से मुझे बुलाती रही है। नेट पर जांचा परखा तो पाया कि यही वह जगह है और इसे विश्व धरोहर का दर्जा भी प्राप्त है। लेकिन वहाँ जाना बहुत आसान नहीं था।

चूँकि यात्रा ऋषिकेश से शुरू होनेवाली थी इसलिये आशीष से तारीख निर्धारित करके मैं अपनी सफारी से ऋषिकेश पहुँच गया। जब भी मैं पहाड़ों की ओर की यात्रा शुरू करता हूँ, मेरे अन्दर एक अलग तरह का जोश भर उठता है। लगता है कोई दूर से आवाज देकर बुला रहा है, “आ जाओ, यहाँ तुम्हारे लिये हरियाली की चादर बिछाये तुम्हारे स्वागत की तैयारी कर ली गयी है, आ जाओ, बस आ जाओकुकुकु”। 12 अगस्त से यात्रा प्रारम्भ होनेवाली थी इसलिये 11 अगस्त की शाम तक मैं ऋषिकेश में था। वहाँ तपोवन में एक होटल है साई गंगा। बड़े सीधे सादे लोग हैं और कई बार आने जाने से उनसे एक दोस्ताना सम्बन्ध बन गया था। वहीं मैंने उनसे बात की कि मैं अपनी सफारी कुछ दिनों के लिये यहीं रखना चाहता हूँ, वे बहुत

आसानी से इस बात के लिये तैयार हो गये वरना एक समस्या सफारी को रखने की आ सकती थी। शाम को आशीष अपने दोस्त तुषार के साथ मेरे होटल पर आया और हम कुछ दूर तक घूमने निकले और यात्रा की तैयारियों की बात को अन्तिम रूप दिया। वैसे तो तुषार फेसबुक पर दोस्तों की सूची में था पर आमना सामना पहली बार हुआ था। तय हुआ कि 12 तारीख की भोर में ही हम निकल चलेंगे। आशीष की टीम के लिये एक बस तैयार थी और चूँकि मैं बस से यात्रा नहीं कर सकता था। बस में बैठकर यात्रा करने पर मुझे उल्टियाँ होने लगती थीं। आशीष ने बोलेरो जीप नयी नयी खरीदी थी मैंने कहा कि मुझे आगे बैठाकर ले चलना नहीं तो मैं यात्रा नहीं कर सकता।

रात को मैं ठीक से सो नहीं पाया और करीब 3 बजे ही आशीष का फोन आ गया कि आप सामान लेकर होटल के मुख्य द्वार पर आ जाइये। मैं जल्दी जल्दी तैयार होकर होटल के द्वार पर आ गया। फिर रास्ते में बस में कुछ समस्या आ गयी। इन लोगों के वहाँ पहुँचने तक सात बज गये। मैं इतनी देर तक सड़क पर ही खड़ा रहा। इस अफरा तफरी से यह हुआ कि मुझे सर्दी जुकाम ने जकड़ लिया। मैं बोलेरो की आगे की सीट पर बैठा था परन्तु पचास किलोमीटर आगे जाने के बाद मैं अपने आपका असहज महसूस करने लगा। रास्ते में रुककर मैं एक चाय की दुकान पर लेट गया। दुकानदार ने ही मुझे नींबू का शरबत बनाकर पिलाया और आधे घंटे बाद मुझे लगा कि मैं ठीक हूँ तो हम लोग आगे बढ़े।

रास्ते में खाते पीते, पहाड़ों का सौन्दर्य निहारते, फोटोग्राफी करते हुए हम रात में आठ बजे तक गोविन्दघाट पहुँच गये। गोविन्दघाट में अलकनन्दा और लक्ष्मण गंगा नदियों का संगम है। नदी से बिल्कुल सटे कई होटल बने थे। नदी अपने प्रचण्ड रूप में थी और इतनी



कि आगे ऐसा नहीं होगा। खच्चर वाला कसम खा रहा था कि मैं बीस साल से खच्चर लेकर आता हूँ आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ।

हम जिस रास्ते से घाघरिया जा रहे थे, हमारे साथ साथ लक्ष्मण गंगा नदी भी पहाड़ों से उतरती हुई मिलती जा रही थी। एक जगह इतना मनोरम दृश्य था कि मैं क्या बताऊँ। लक्ष्मण गंगा नदी के उफान मारते पानी के पास ही टेबल कुर्सी लगाकर एक जलपानगृह बना दिया गया था। मैं उस जगह पर रुका, वहाँ चाय पी और उस दृश्य को पूरी तरह अपने कैमरे और आंखों में भरकर फिर आगे बढ़ा। अत्यन्त दुरूह डरावने रास्तों से चढ़ते उतरते करीब सात घंटे की यात्रा के बाद मैं घाघरिया पहुंच गया। घाघरिया को गोविन्दधाम भी कहा जाता है। गोविन्दघाट से घाघरिया का रास्ता तय करना सबके वश की बात नहीं है। कहीं कहीं तो रास्ता यात्रियों के लिये बनाया गया था और वहाँ चलना आसान था परन्तु जगह जगह बेतरतीब से पड़े छोटे बड़े चट्टानों के बीच से ही रास्ता बनाकर जाना था। इन रास्तों पर पैदल चलना फिर भी आसान था बजाय खच्चर पर बैठ कर जाने के। जहाँ चढ़ाई होती खच्चरवाला बोलता, 'पीछे की तरफ झुक जाइये, और जहाँ ढलान होती वहाँ वह आगे की ओर झुकने को बोलता। मैं तो ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि मुझे इस बार किसी तरह पहुँचा दो, आगे से मैं कभी खच्चर पर बैठकर ऐसी चढ़ाई पर नहीं जाऊँगा। इतना डर, इतनी दुर्दशा के बाद भी जब आसपास नजर जाती तो लगता कि ये सारे कष्ट कुछ भी नहीं हैं। क्या प्रकृति ने अपना रूप सजाया था।

बाकी लोग जो पैदल आ रहे थे, वे पीछे थे। वहाँ एक गेस्ट हाउस में हमारे लिये कमरे आरक्षित थे। मैंने अपना सामान एक कमरे में रखा और आराम करने लगा। जब सभी लोग वहाँ आ गये तो हम घाघरिया में टहलने निकले। एक छोटा सा कस्बा था घाघरिया जो साल में केवल तीन महीने खुला रहता था, बाकी समय भारी बर्फबारी के कारण यह कस्बा बन्द ही रहता था। जो लोग हेमकुण्ड जाने के लिये आ रहे थे, उनके लिये यहाँ के गुरुद्वारे में काफी अच्छी व्यवस्था की गयी थी। हमारी टीम के सभी लोग एकत्र हुए तो हमने तय किया कि अगले दिन सुबह हम फूलों की घाटी के लिये निकलेंगे। यहाँ के स्थानीय लोगों ने बताया कि बारिश से बचाव का उपाय करके जाना होगा क्योंकि प्रतिदिन एक बजे दोपहर में बारिश का होना निश्चित है। खैर हमने बारिश से बचने का उपाय करके सुबह ही फूलों की घाटी की यात्रा प्रारम्भ कर दी। यहाँ पर पैदल ही जाना था क्योंकि यहाँ का रास्ता अत्यन्त दुरूह था और खच्चर नहीं जा सकते थे। हमसे पता नहीं क्यों आशीष ने यह झूठ बोला था कि घाघरिया से फूलों की घाटी जाने के लिये चढ़ाई नहीं चढ़नी पड़ती है मैं जब कुछ दूर आगे तक आया तो देखा कि यहाँ तो अत्यन्त कठिन चढ़ाई है। मुझे आशीष पर गुस्सा आया और एक बार तो मैंने सोचा कि वापस लौट जाऊँ। पर सामने की घाटियाँ जैसे मुझे बुला रही थीं। मैंने अपने को दृढ़ किया और आगे की यात्रा शुरू कर दी। मैं कुछ दूर तक चढ़ने के बाद दो चार मिनट के लिये रुक जाता और अपनी सांसों को सामान्य करके फिर आगे बढ़ता। रास्ते में गरजती, मचलती पहाड़ी नदी पुष्पवती मिली जिसको पार करने के लिये एक लोहे का पुल बना था। पुल पर खड़े होने पर लगता था जैसे नदी पुल को ही बहा ले जायेगी। मैं जैसे जैसे आगे बढ़ता गया प्रकृति का सौन्दर्य अपने शिखर पर आता गया। मैं जैसे अपने रक्तचाप होने की बात को ही भूल गया। करीब तीन मीटर की कठिन यात्रा के बाद हम पहुँच ही गये फूलों की घाटी में। एक बड़ी सी चट्टान से फूलों की घाटी की सीमा शुरू होती है। आगे दूर तक घाटी फैली हुई थी। दो तरफ पहाड़ों की ऊँची बर्फली चोटियाँ थी जो बादलों से छुपा छुपी का खेल खेल रही थीं। जिधर नजर जा रही थी, तरह तरह के रंगों के, विविध रूपों के फूल खिले हुए थे। कैमरे से क्लिक क्लिक की आवाजें आ रही थीं। सब से सब मंत्रमुग्ध होकर प्रकृति को निहार रहे थे और

आंखों में उतार रहे थे।

मैंने खूब तस्वीरें लीं और मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं वहाँ की ऊँची चट्टान पर चढ़कर दोनो हाथ आसमान की ओर उठाते हुए चिल्ला पडूँ, ऐ फूलों की घाटी! देख लो, आखिर मैं तुम्हारे पास आ ही गया हूँ। अब तुम्हें सपने में भी देखूँगा तो यह याद रहेगा कि इस धरती पर मैंने भी कभी अपने पैर रखे थे। सच कहूँ तो लौटने का जी नहीं चाह रहा था परन्तु मुझे चेतावनी दी गयी थी कि यहाँ रुकने की व्यवस्था नहीं है इसलिये समय से लौट आना होगा। जैसा लोगों ने बताया था कि ठीक एक बजे बारिश शुरू हो जाती है, वैसा ही हुआ। लौटते समय बारिश बन्द ही नहीं हुई। एक पालीथिन का जैकेट था जिसमें खुद को और कैमरे को छिपाकर मैं लौट पड़ा। जाते समय की अपेक्षा लौटते समय का सौन्दर्य बदल गया था। बारिश की लगातार हो रही फुहारों ने प्रकृति को और सुन्दर बना दिया था। वापस अपने गेस्ट हाउस तक आते आते मैं थककर चूर हो चुका था। बाकी यात्री लोग लौटते तब तक मैं बुखार से तपने लगा था। आशीष ने मेरे लिये दवा की व्यवस्था की और मैं फूलों की घाटी में



डूबते उतरते सो गया। अगले दिन मुझे चिन्ता सताने लगी कि मैं इस हालत में लौटूँगा कैसे? खच्चर पर अब मैं किसी कीमत पर चढ़ने को तैयार नहीं था। फिर मुझे बताया गया कि यहाँ हेलीकाप्टर की सेवा है जो गोविन्दघाट से घाघरिया के लिये आता जाता है। मैंने तय किया कि मैं हेलीकाप्टर से ही गोविन्दघाट तक जाऊँगा। अगले दिन मैंने हेलीकाप्टर की मदद ली और करीब पाँच मिनट से भी कम समय में गोविन्दघाट पहुँच गया। हेलीकाप्टर से मैंने कई तस्वीरें उतारीं जो मंत्रमुग्ध कर देनेवाली थीं। बाकी लोग शाम तक पहुँचे तब तक मैं होटल में आराम करता रहा। हमने तय किया था कि रात को विश्राम करने के बाद अगले दिन फिर वापसी की तैयारी करनी है। भोर में ही हम गोविन्द धाम से निकल पडे़। दोपहर तक तो मैं आराम से यात्रा करता रहा परन्तु वही हुआ जिसका डर था। मुझे उल्टियाँ शुरू हो गयीं। हमने रास्ते में दवाइयाँ लीं, नीबू का पानी पीता रहा परन्तु उल्टियाँ बन्द नहीं हुईं और लगातार यह हालत बनी रही जिसके कारण मैं बैठने में भी परेशानी का अनुभव करने लगा। तबियत इतनी खराब होने लगी कि बीच बीच में रुककर मैं किसी दूकान की बेंच पर कुछ देर पड़ा रहता फिर अनमना होकर कार में बैठता। कुछ देर सही रहने के बाद तबियत फिर खराब होने लगती। मैं पछताने लगा कि मैं अपनी सफारी लेकर क्यों नहीं आया। आशीष की मजबूरी थी कि वह यात्रा को रोक नहीं सकता था। सच कहता हूँ, वह यात्रा मेरे लिये कभी खतम न होनेवाला परेशानियों की सबब बन गयी। लम्बी थका देनेवाली यह यात्रा जब ऋषिकेश के साईं होटल पर समाप्त हुई तो मैं सीधे अपने कमरे में पहुँचा और सो गया। मैंने अगले दिन सुबह सुबह अन्दाजा लगाया कि मैं अपनी वापसी की तैयारी कर सकता हूँ और अपनी सफारी से दिल्ली के लिये रवाना हो गया। मन में ऐसी शान्ति थी कि क्या बताऊँ। बचपन का सपना जो पूरा हुआ था, फूलों की घाटी मेरे मन में अपनी छाप छोड़ चुकी थी।

आवाज आ रही थी कि लगता था कान के पास ही कोई दैत्याकार मशीन चल रही है। होटल की खिड़की से भी नदी की गर्जना रात भर सुनायी देती रही। गोविन्दघाट में रात बिताकर सुबह सुबह घाघरिया की चढ़ाई चढ़नी थी जो लगभग 17 किलोमीटर की यात्रा थी। मैं रक्तचाप का मरीज था लेकिन यह बात सबसे छिपाकर मैं फूलों की घाटी जरूर जाना चाहता था। मुझे पता था कि इस बार नहीं गया तो कभी नहीं जा पाऊँगा। 17 किलोमीटर की पैदल चढ़ाई करना भी मेरे लिये सम्भव नहीं था इसलिये आशीष से सलाह करके मैंने एक खच्चर किराये पर लिया और उस पर बैठकर आगे चल पड़ा। हालांकि बाद में समझ में आया कि खच्चर पर चढ़कर पहाड़ पर चढ़ना और उतरना दोनो खतरनाक है।

मैं यात्रा में इस रास्ते का आनन्द तो लेता रहा परन्तु भीतर एक डर भी था कि कहीं मैं खच्चर से गिर न जाऊँ। और ऐसा हो भी गया। खच्चरवाले ने मेरे कैमरे का बैग ऐसा गलत बांध दिया था कि वह सरकते सरकते खच्चर के पैरों में आ गया। खच्चर जोर जोर से उछलने लगा, मैं क्या करता, मैं कुछ देर तक उसकी पीठ पर बंधी रस्सी को पकड़े रहा फिर हवा में उछलता हुआ नीचे आ गिरा। वहाँ यात्रियों ने दौडकर मेरी सहायता की, मुझे उठाकर पास की एक दूकान में कुर्सी पर बिठाया। मुझे मेरे कैमरे के बैग की चिन्ता थी। एक कैमरा तो मैं गले में लटकाकर फोटो खींचते हुए चल रहा था। मेरा चश्मा कहीं गिरा था, कैमरा कहीं और पड़ा था तथा कैमरे का बैग तीसरी जगह गिरा पड़ा था। अब मैं इसे ईश्वर की कृपा न कहूँ तो क्या कहूँ कि इतनी जबरदस्त दुर्घटना के बाद भी न तो मुझे गम्भीर चोट लगी और नही मेरे किसी भी सामान को खरोंच आया। मैं दूकान पर चाय पीकर और खच्चर वाले से यह आश्वासन लेकर आगे बढ़ा

# स्पर्श की अनुभूति

एक नए परिपेक्ष्य में

## • अरुणोदय

**बा**जारवाद और आधुनिकता की भेंट चढ़ता, हमारे जीवन का सबसे सुखद और महत्वपूर्ण अहसास, स्पर्श का..!

कभी सोचा है, इस विषय पर..? सोचे भी तो कैसे..? हमारे-आपके और सबके भीतर स्पर्श का जो एक स्नेहिल अहसास था, वह तो अब पूर्णतः मिलावटी हो चुका है।

अब तो यह पता भी नहीं चलता कि, स्पर्श की भी कोई अनुभूति होती है या फिर, स्पर्श का कोई विज्ञान भी होता है।

स्पर्श एक ऐसी गहन और संवेदित प्रक्रिया है, जिसके घटित होने मात्र से, किसी न किसी प्रकार का स्पन्दन हो जाता है। स्पर्श का स्रोत जो भी हो, जैसा भी हो, उसके मन-मिजाज के अनुरूप ही स्पन्दन घटित होता है।

एकाध दशक पहले के सम्बन्धों को विवेचित करे, तो स्पर्श का विज्ञान और तारतम्यता बड़े ही सकल और सुघड़ रूप में परिलक्षित होती दीखती है।

पारिवारिक रिश्तों में, किसी भी दो रिश्तों के आपसी स्पर्श को महसूस और उसे अनुभूति करे, एक अलग सा स्नेह उमड़ता होता है।

माँ द्वारा पुत्र का स्नेहिल स्पर्श हो, पुत्र द्वारा माँ का नम्य स्पर्श हो, भाई द्वारा बहन का आशीर्षित स्पर्श हो या फिर पति द्वारा पत्नी-प्रेयसी का दाम्पत्यिक स्पर्श हो, या फिर पिता द्वारा पुत्री का वात्सल्य-पूर्ण स्पर्श हो, सभी होते तो स्पर्श ही है, पर सबका विज्ञान और सबकी अनुभूति एकदम से अलग-अलग होती है।

यह तो हुई पारिवारिक सम्बन्धों में स्पर्श-विज्ञान की समीक्षा..!

अब जरा बाजारवाद और आधुनिकता की भेंट चढ़

चुके, जीवन के विभिन्न स्पर्शों को भी समझने का प्रयास करे।

व्यक्ति दिन भर, अपने व्यावसायिक कारणों से या व्यक्तिगत कारणों से न जाने कितने ही स्त्री-पुरुषों के स्पर्श को महसूस करता है। घर से निकलने के बाद, मेट्रो की यात्रा हो, बस-ट्रेन की यात्रा हो, ऑटो की सवारी हो या फिर कार्य करने के क्षेत्र में, न जाने कितने अनजान से महिला-पुरुषों से स्पर्श की अनुभूति लेता हो, भले ही उसका दायरा हाथ मिलाने से लेकर गले मिलने तक ही सीमित हो, भिन्न-भिन्न तरह के स्पर्शों और अनुभूतियों से रूबरू हुआ होता है।

आजकल तो किसी भी विपरीत लिंगी से हाथ मिलाना तो दूर, गले मिलने में कोई परहेज भी नहीं, और उसे आधुनिक समाज की एक नई परिभाषा भी बता दी गयी है।

यह निश्चित है, जब भी आप किसी से गले मिलते हैं या फिर जाने-अनजाने किसी के स्पर्श को महसूस करते हैं, एक अनुभूति तो होती ही है।

कहने का मतलब यह कि, पुरुष हो या महिला, सभी के जीवन में इतने तरह और प्रकार के स्पर्शों की बाढ़ आ चुकी होती है, कि उनके जीवन में आने वाले सही मायनों वाले स्पर्शों की न तो अनिवार्यता ही महसूस होती है, और अगर वैसे स्पर्श मिले भी तो, उनकी संवेदनशीलता शायद खत्म हो चुकी होती है।

यह तो कुछ ऐसी ही बात हुई कि, फिल्मों में शादी के किरदार को निभाते-निभाते इतनी ऊब हो जाती है, कि जब असल जिन्दगी में शादी का मौका आता है, वह भी एक फिल्मी सीन की तरह ही लगता है और, डायरेक्टर के एक निर्देश का इन्तेजार कि, कट कब कहे..!

इतनी बार माँग में सिन्दूर भरने की रस्म हो जाती है कि, असल जिन्दगी में सिन्दूर भरने या भरवाने का जो

रोमांच और आकर्षण होता है, शायद वह थोड़ा कही गुम से जाता है।

सामाजिक जीवन में स्पर्शों की एक मान्यता तो होनी ही चाहिए, कुछ तो ऐसा बचे जीवन में, जिसकी प्रतीक्षा अपने जीवन के असल किरदार को निभाते हुए महसूस किया जा सके।

राह चलते, यात्रा करते स्पर्शों का विज्ञान इतना प्रदूषित हो चुका होता है कि, घर पहुँच कर न तो पति-पत्नी के आपसी स्पर्शों की सामयिक अनुभूति होती है, न तो माँ-बेटी के स्नेहिल स्पर्शों की ही अनुभूति हो पाती है।

किसी भी रिश्ते के स्पर्श के विज्ञान की समीक्षात्मक विवेचना करे, सब में किसी न किसी स्तर की मिलावटी बू आ ही जाती है।

एक स्पर्श मात्र से, सारी भावनाओं को सम्प्रेषित होते देखा है, इसी जीवन काल में..! आज ऐसा क्या हो गया कि, पूरे के पूरे स्पर्श के बाद भी, भावनाओं के सम्प्रेषण में शब्दों की सहायता लेनी ही पड़ जाती है..?

एक स्पर्श और बस, सारी बातें साफ और स्पष्ट..!

मेरे वैचारिक मन्तव्य से, स्पर्श-विज्ञान में, भावों की नहीं, संवेदनहीनता की स्थिति उत्पन्न हुई लगती है, क्योंकि किसी भी ऐसे स्पर्श, जो बाजारवाद और आधुनिकता के रंग से लबरेज हो, उनमें संवेदित भाव नहीं, स्वार्थ भाव की प्रधानता होती है। गलती यही होती है कि, हम बाजारू स्पर्श को भी अपने जीवन के संवेदित स्पर्शों की सीमा में ही उतार कर परोस लेते हैं।

पत्नी के हाथों का स्पर्श ऐसा लगता है कि, कार्यालय के किसी महिला सहयोगी से हाथ मिलाने की अनुभूति हो। इन मनोभावों में स्नेहिल भाव का अभाव तो हो ही जायेगा।

मैं किसी भी रूप से या प्रकार से आधुनिक बाजारवाद का न तो विरोध कर रहा हूँ, और न ही स्पर्श-विज्ञान की चुनौतियों को नकारने की कवायद कर रहा हूँ।

सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों में आये, स्पर्श के एक नयी बयार को बस समझने की कोशिश कर रहा हूँ।

यह आवश्यक है कि, घर की दहलीज के बाहर के स्पर्शों को घर में आने के पहले, दरवाजे पर ही छोड़ दिया जाए और घर के भीतर के स्पर्शों की अनुभूति को, घर से बाहर निकलने के पहले, बड़े ही महफूजियत से, घर में ही बड़े सलीके से रख छोड़ा जाय, ताकि घर-वापसी तक, उनमें ताजगी और संवेदित भाव बचे रहे..!

घर के स्पर्श-भाव की महसूसियत अगर बाजार में परोसा जाए, या फिर बाजार के स्पर्श-भावों को घर में परोसा जाए, तो दोनों ही स्थितियों में अनर्थ ही सम्भाव्य है।

फिरलहाल, लिखने को तो बड़ी-बड़ी बातें लिख गया हूँ, अब दोनों बच्चों ने बाहर हो रही बारिश में धूम मचाने के लिए, सादर-साधिकार-आदेशित भी कर दिया है, मैं भी मलिकाइन को लेकर निकलता हूँ, जरा हम सब धूम मचा ही ले..!

रही बात कपड़ों और जूतों की जिम्मेदारी, तो मलकिनी बड़ी दयावान और हम तीनों के प्रति सहनशील भी, वे सम्भाल लेंगी।

लिखने के बाद, 'वॉक इन रेन' से मन तो महो-महो ही होगा, न...?



## चिकित्सा जगत में नया आयाम

# इलेक्ट्रो होम्योपैथिक

डॉ. अविनाश चौधरी, इंदौर

‘आवश्यकता आविष्कार की जननी है’ होम्योपैथिक उपचार से प्रायः सभी परिचित हैं किंतु शुद्धता व विशुद्धता एवं विशेष ऊर्जा जो प्रत्येक पौधों एवं अंग में विद्यमान हैं। उसका मंथन एवं दोहन देशकाल वातावरण के अनुसार एक नवीन पैथी को जन्म दिया, वह है ‘इलेक्ट्रोहोमियोपैथी’।

आदि काल से लेकर आज के इलेक्ट्रॉनिक युग तक मानव ने अपने दुख-दर्द, बीमारियों को दूर करने की अनेको चिकित्सा विधियों को खोजा और अपनाया है। जिससे इलेक्ट्रो-होम्योपैथी की खोज पांचवीं चिकित्सा पद्धति के रूप में मानी जाती है। यह चिकित्सा पद्धति आज के युग के से सामंजस्य करती हुई, अन्य पद्धतियों एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक आदि से सस्ती पाशव प्रभावों से मुक्त रोगों को तीव्र गति से शरीर से मुक्ति दिलाती है।

इलेक्ट्रो-होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति का आविष्कार करने का श्रेय इटली के महान विभूति डॉक्टर काउंट सीजर मैटी को जाता है। 1130 वर्ष पूर्व सन १८६५ में इस चिकित्सा पद्धति की खोज हुई, और उसका मूल आधार एक कुत्ता बना इसी कुत्ते के घाव को ठीक होते देखकर मैटीजी को सोचना पड़ा की वनस्पति जगत में कोई शक्ति विद्यमान है इलेक्ट्रो होम्योपैथिक में ‘इलेक्ट्रो’ शब्द का तात्पर्य शरीर के अंगों एवं कोशिकाओं को गतिशील करना है। ‘होम्यो’ का अर्थ शरीर में उपलब्ध तत्वों के अपने निर्धारित रूप की समानता करने से है। ‘पैथी’ शब्द उसकी कार्यप्रणाली का सूचक है। इस चिकित्सा जगत का नाम इलेक्ट्रो-होम्योपैथी इसलिए रखा क्योंकि आकर्षण शक्ति के अनुसार हमारा शरीर भी इलेक्ट्रॉनिक की भांति है। शरीर का दाहिना भाग धनात्मक (+) तथा बाया ऋणात्मक (-) होता है। इसलिए हमारे शरीर में होने वाली बीमारियां भी ऋणात्मक और धनात्मक होती हैं। इस चिकित्सा पद्धति की औषधियों के गुण भी धनात्मक ऋणात्मक होते हैं। और न्यूट्रल अवस्था स्वस्थ की अवस्था होती है। धनात्मक रोग में प्राथमिक औषधि देखकर वर्णनात्मक रोग में धनात्मक औषधि देकर शरीर को न्यूट्रल बनाकर रोक को समाप्त कर दिया जाता है इसलिए धनात्मक और धनात्मक चार्ज के कारण इलेक्ट्रो शब्द को अपनाया।

अब प्रश्न यह उठता है कि धनात्मक एवं ऋण आत्मक क्या है? शरीर के किसी भी अंगों के कार्यों, क्रियाओं व अनुभवों का बढ़ना धनात्मक रोग कहलाते हैं। जैसे उच्च रक्तचाप, ज्वर, दस्त लगना, मस्तिष्क के रोग मिर्गी, हिस्टीरिया, रक्त श्राव, निमोनिया, दमा इत्यादि। ऋणआत्मक रोगों में शरीर के किसी भी अंगों के कार्यों क्रियाओं का व अनुभवों का घटना कम होना होता है जैसे कब्ज, मधुमेह अतिसार, कैसर, कुष्ठ, हृदय रोग निम्न रक्तचाप, लकवा, पोलियो, आंखों में कम दिखना, कानों में कम सुनाई देना इत्यादि।

डायल्यूशन (औषधि) बनाने की विधि को कोहोबेशन विधि कहते हैं। जो कि पौधों के भागको आसूत भाग में किडवन द्वारा 70 डिग्री से ९५ डिग्री सेल्सियस



इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान में 12 समूहों में मात्र 74 औषधियों से सभी प्रकार के रोगों की चिकित्सा की जाती है 12 समूहों की जानकारी इस प्रकार है

- 1 स्क्रोफोलोसो ग्रुप- इस समूह की औषधियों का मुख्य कार्य लसीका (रस, कफ) प्रधान रोगों पर कार्य करना है।
- 2 स्क्रोफोलोसो लेसेटिव- इस समूह की औषधि कब्ज नाशक होती है जो हाथों का ग्रंथि दोषों को दूर करती है एवं पाचन तंत्र को शक्तिशाली बनाती है।
- 3 सिंथेसिस- यह जनरल टॉनिक है इसका प्रभाव संपूर्ण शरीर पर होता है।
- 4 एंजाइटीकोस ग्रुप - इस समूह की औषधियां एवं रक्त संचार संबंधी रोग पर मुख्य रूप से उपयोगी होती हैं।
- 5 पिक्टुरेल्स ग्रुप- इस समूह की औषधियां श्वसन संस्थान एवं अंगों पर अलग-अलग रूपों में कार्य करती हैं।
- 6 केंसरेसोस ग्रुप-इस औषधि का मुख्य कार्य सेल्यूलर एवं फ्राईबर्स टिशूज की रक्षा एवं निर्माण करना है।

- 7 वेनेरियोज ग्रुप- यह औषधियां स्त्री पुरुषों की जननेंद्रिय के मूत्र रोग यौन रोगों पर अद्भुत ढंग से कार्य करती हैं।
- 8 वर्मीफ्यूगोस ग्रुप -यह औषधियां शरीर में उत्पन्न कीटाणुओं को नष्ट कर बाहर करती हैं।
- 09 लिम्फेटिकोज ग्रुप-ये औषधियां लिंफ(रस) प्रधान रोगों पर कार्य करती हैं।
- 10 फेब्रेफ्यूगोस ग्रुप-इस समूह की औषधियां स्नायु संस्थान की बीमारियां में काम आती हैं।
- 11 इंडियन फेब्रीफ्यूगोस-यह औषधियां शुद्ध भारतीय पौधों से निर्मित हैं जो पाचन संस्थान पर अद्भुत कार्य करती हैं।
- 12 इलेक्ट्रोसिटीज- इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बिजली ओं का महत्वपूर्ण स्थान है यह संख्या में 8 होती हैं इनका प्रयोग बाह्य एवं आंतरिक रूप में किया जाता है। इस प्रकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधियों द्वारा कई जीर्ण और तरुण रोगों की सफलतापूर्वक चिकित्सा की जाती है।

पर तयार की जाती है। डायल्यूशन बनाने के लिए एक भाग मूल औषधि ४७ भाग आसूत जल एवं ४८ बार झटके लगाने से प्रथम डॉयल्यूशन बनता है। इसी तरह द्वितीय डायल्यूशन बनाने के लिए प्रथम डायल्यूशन बनता है। इसी तरह अदिति रेडिसन बनाने के लिए प्रथम राजू शंका एक भाग एवं ४९ भाग आसूत जल एवं 48 बार निश्चित दूरी एवं समय से झटके देने पर तैयार होता है प्रथम एवं द्वितीय डायल्यूशन धनात्मक एवं तृतीय के बाद ऋण आत्मक डायल्यूशन होते हैं।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धति में निर्मित औषधियां प्रकृति से प्राप्त विश्व रहित होती हैं जो 114 वनस्पतियों से तैयार

की जाती हैं जिसमें से लगभग 30 औषधीय पौधे भारत में उपलब्ध हैं शेष पौधे विदेशों में पाए जाते हैं वर्तमान में कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक चिकित्सकों में भारत में भारतीय अवश्य पौधों से पौधों से को ओवेशन कोहो वेशन विधि से नई इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियां तैयार की है प्रारंभ में खोज के वक्त इस पद्धति में डॉक्टर बेटी ने मात्र 38 औषधियां तैयार की थी इसके पश्चात जर्मन चिकित्सकों ने इस औषधि के गुण धर्म के आधार पर 22 औषधियों और भारत में रिसर्च सेंटर ऑ लैबोरेटरीज में जारी खोजो ने 14 औषधियां और सम्मिलित की अब औषधियों की संख्या बढ़कर 74 हो गई है।

# साबूदाने का डोसा

## सामग्री - डोसे के घोल के लिए

साबूदाना (4 घंटे भिगोया हुआ) - 1 कप	जीरा 1/2
मोरथन (1 घंटे में भिगोए हुए) - 1/2 कप	सेंधा नमक - 1/4 tb spoon
दही - 1/2 कप	हरी मिर्च - 1-2
सेंधा नमक - 1/2 tb spoon (स्वादानुसार)	हरा धनिया - 1/2कप
पानी - 1/2 कप	चटनी के लिए
तेल - 2Tspoon	ताजा नारियल (किसा हुआ) - 1कप
भरावन के लिए सामग्री	करी पत्ते -1/2कप
तेल - 3tb spoon	हरा धनिया - 1कप
उबले आलू- 1-1/2 कप	हरी मिर्च - 1-2
	सेंधा नमक (स्वाद अनुसार)
	दही - 1/2कप



**विधि:** डोसे के घोल के लिए भिगोए हुए साबूदाना और मोरथन का अतिरिक्त पानी निकाल लेंगे मिक्सर के जार में सारी घोल की सामग्री को डालकर पीस लेंगे और डोसे के गोल जितना पतला रखेंगे। पानी अंदाज से डालेंगे जिससे कि घोल ज्यादा पतला या ज्यादा गाढ़ा ना हो। भरावन के लिए\* एक पैन में तेल गरम होने पर जीरा डालेंगे, मसले हुए आलू और बाकी की सामग्री डाल देंगे, अच्छी तरह से लगभग 1 से 2 मिनट तक पकायेंगे

**चटनी के लिए:** चटनी के ली गयी सारी सामग्री को मिक्सर में डालकर बारीक पीस लेंगे। डोसा- एक नॉन स्टिक पैन में बड़े गोलाकार चम्मच या कटोरी की सहायता से घोल को डालेंगे और धीरे-धीरे फैलाकर इसे डोसे का आकार देंगे, ऊपर से एक चम्मच तेल डालेंगे मध्यम आंच पर पकाना है, भरावन का मसाला डोसा के बीच में डालकर दोनों ओर से मोड़ देंगे। व्रत के लिए स्वादिष्ट डोसा तैयार है चटनी के साथ सर्व कीजिए। -नंदिनी

## सेब का हलवा



### सामग्री

सेब - 4
काजू - 5-6
शक्कर - 1/2 कप
बादाम - 3-4
चिरौंजी - 1tbspoon
ऑरेंज फूड
कलर - 1 चुटकी
पानी - 1/4 कप

**विधि:** सबसे पहले सेब को अच्छी तरह से धोकर कटूकस कर लेंगे, एक पैन में घी गर्म करेंगे और सबसे पहले उसमें काजू, बादाम आधा मिनट तक सेंक लेंगे फिर कटूकस किया हुआ सेब डालेंगे, अच्छी तरह से चलाते हुए 5 मिनट तक भूनेंगे, उसके बाद शक्कर डालेंगे थोड़ा चलाएंगे जब शक्कर चाशनी जैसी हो जाए तब पानी डाल देंगे और अच्छी तरह से चलाते हुए 5-7 मिनट तक पकाएंगे, फूड कलर भी डाल देंगे और काजू बादाम भी काट कर डालेंगे, चिरौंजी भी डाल देंगे 1 मिनट और पकाने के बाद जब हलवा घी छोड़ने लगे तब गैस बंद कर देंगे। सेब का हलवा तैयार है।



# भरवाँ आलू वड़े



■ नंदिनी श्रीवास्तव



## सामग्री

वड़े के लिए*	tb Spoon
उबले आलू - 5	भरावन के लिए
नमक - 1/2tb Spoon	काजू - 2-3 ( साबुत )
जीरा पाउडर - 1/2tb Spoon	बादाम - 2-3 ( साबुत )
हरी मिर्च - 1(बारीक कटी )	चिरौंजी - 1tb Spoon
हरा धनिया - 1/4कप	कच्चा नारियल
तलने के लिए तेल	( कद्दूकस )
काली मिर्च - 1/4 tb Spoon	खसखस - 1 tb Spoon
कद्दूकस अदरक - 1/2	किशमिश - 4-5

**विधि:** बसे पहले उबले हुए आलू को कद्दूकस कर लेंगे, फिर उसमें वड़े की सारी सामग्री मिला देंगे और अच्छी तरह से मिक्स कर लेंगे , इस बात का ध्यान रखना है कि आलू बिल्कुल ठंडे होने चाहिए जिससे कि बाइंडिंग अच्छी तरह से हो। भरावन के लिए काजू और बादाम को बारीक काट लेंगे, चिरौंजी, कद्दूकस नारियल, खसखस और किशमिश सब अच्छे से मिक्स कर लेंगे, अब आलू का जो मिश्रण तैयार किया है उसे गोल आकार देंगे और बीच में थोड़ा सा भरावन भर कर अच्छे से गोल कर देंगे, तेज आँच में तलेंगे वरना वड़े फैल जाएंगे, सुनहरा होने पर निकाल लेंगे । स्वादिष्ट फलाहारी वड़े तैयार हैं।

# व्रत वाले कटलेट

# फलाहारी कढ़ी

## सामग्री: कटलेट के लिए

- उबले आलू (मीडियम साइज) - 2
- उबली हुई अरबी ( मीडियम साइज ) - 4-5
- सिंघाड़े का आटा - 1कप
- नमक - 1/2tb Spoon
- हरी मिर्च - 1-2
- हरा धनिया - 1/2कप
- धनिया पाउडर - 1tb Spoon
- जीरा पाउडर - 1/2tb Spoon
- तलने के लिए तेल
- चटनी:**



- भुनी मूंगफली - 1 कप
- हरी धनिया - 1 कप
- पानी - 1/2 कप
- नींबू का रस - 1Tspoon
- नमक - 1/2tb Spoon
- हरी मिर्च 1-2

**विधि:** कटलेट बनाने के लिए उबले आलू और अरबी को अच्छी तरह से छीलकर मसल देंगे, उसमें कटलेट की सारी सामग्री डालकर मिला लेंगे ,थोड़ी-थोड़ी सामग्री लेकर उसे गोल और चपटा आकार देंगे,और डीप फ्राई कर लेंगे । चटनी बनाने के लिए सबसे पहले मूंगफली का छिलका अलग करेंगे, फिर सारी सामग्री को मिक्सर के जार में डालकर पीस लेंगे, तैयार हैं आपके कटलेट और स्वादिष्ट चटनी

## सामग्री

- सिंघाड़े का आटा - 2Tb Spoon
- छाछ (मट्ठा) - 1 गिलास
- पानी - 1गिलास
- नमक - 1/2 ( स्वादानुसार )
- जीरा - 1/2tb Spoon
- करी पत्ते - 6-7
- चिल्ली फ्लेक्स - 1/2tb Spoon
- हरी मिर्च - 1



- कच्चे केले - 2
- तेल तलने के लिए
- तेल कढ़ी के लिए - 2tb Spoon

**विधि:** सबसे पहले केले को छीलकर पतली पतली स्लाइस में काट लेंगे और तल लेंगे और इसे अलग रख देंगे, फिर छाछ में सिंघाड़े का आटा मिलाएंगे और अच्छी तरह से मथ लेंगे , कढ़ाई में 2 चम्मच तेल डालेंगे ,गर्म होने पर करी पत्ते ,जीरा और हरी मिर्च डालेंगे, फिर छाछ और आटे का मिश्रण डालेंगे , नमक और चिल्ली फ्लेक्स भी डाल देंगे , एक उबाल आने पर आपको कढ़ी जितनी पतली या गाढ़ी चाहिए उस अंदाज से पानी डालेंगे, दो-तीन मिनट पकने के बाद तले हुए केले डाल देंगे और 5 से 7 मिनट तक पकने देंगे हरी धनिया से गार्निश करेंगे आपकी कढ़ी तैयार है।

# प्राचीन भारतीय बंदरगाह शहर



## डॉक्टर जयशंकर सूर्यप्रताप शुक्ल

**प्रा**चीन भारत के गौरवशाली इतिहास में इसके बंदरगाहों का पूरे विश्व व्यवस्था में प्रमुख स्थान रहा है। भारत के समुद्र तटीय प्रदेशों में से प्रमुख गुजरात प्रदेश के तटवर्ती स्थान पर स्थित बंदरगाह अपनी सक्रियता और भव्यता के लिए सदैव प्रसिद्ध रहा है। यह आधुनिक गुजरात प्रदेश के जनपद अहमदाबाद में समुद्र के तट से निकट 'सरगवाला' गांव के पास अवस्थित है। आधुनिक भारतीय स्थितियों में सन 1954-55 ई। में सुप्रसिद्ध इतिहास वेत्ता 'रंगनाथ राव' के अगुवाई में की गई पुरातात्विक खुदाई में इस जगह से समकालीन सभ्यता के महत्वपूर्ण पांच स्तर देखे गए हैं। यहाँ पर हुई खुदाई में दो अलग-अलग टीले का अस्तित्व नहीं मिले हैं, अपितु संपूर्ण बस्ती एक ही चहारदीवारी से घिरी थी जो कि विभिन्न स्तरीय छः भागों में बंटा हुआ था।

वास्तव में यह एक महान गौरवशाली सभ्यता का अवशेष है जिसे हम सैकड़ों वर्ष पुरानी सिन्धु घाटी की सभ्यता के रूप में जानते हैं। सिंधु नदी घाटी की महत्वपूर्ण सभ्यता में मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, धोलावीरा और हड़प्पा जैसे कुछ महत्वपूर्ण शहर थे, लेकिन इन सब में 'लोथल' का अस्तित्व सबसे अलग था। लोथल शहर तत्कालीन 'भोगावा नदी' के किनारे पर स्थित एक प्राचीन बंदरगाह शहर था, जो आज आधुनिक अहमदाबाद जनपद के धोलका तालुके के सरगवाला गांव की सीमा में स्थित पाया गया है। 'लोथल' शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'मृत मानवों' का नगर।

आज से लगभग चार हजार वर्ष पहले यह शहर लोथल पूर्णतः अस्तित्व में आ गया था। इस आशय से यह शहर वर्षों से समकालीन शहरों में बहुत प्रसिद्ध था। आज के आधुनिक संदर्भ में इस शहर के वास्तविक स्वरूप की जानकारी हम सभी को तब मिली जब भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की एक टीम ने वहाँ

सर्वेक्षण हेतु भ्रमण किया। सन 1954 में अपने सर्वेक्षण में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की इस टीम ने संभावना व्यक्त की कि यहाँ पर कोई न कोई सभ्यता तो अवश्य ही अवस्थित रही होगी। इस संकल्पना के बाद इस जगह की विधिवत खुदाई प्रारंभ कर दी गई। भारतीय पुरातत्व की टीम द्वारा वर्षों चली खुदाई कार्य के बाद यहाँ बहुत सारे अवशेष मिले, जो सीधे तौर पर एक विकसित सभ्यता को प्रदर्शित करते हैं। यही कारण है कि भारतीय पुरातत्व विभाग के लिए लोथल शहर सदा से आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

वास्तव में आधुनिक काल में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे स्थल आज के भारत का हिस्सा नहीं हैं, बंटवारे के बाद यह फटे हुए हिस्से में चले गए हैं ऐसे में लोथल नगर का सिलसिलेवार और व्यवहार अध्ययन करने से हम हड़प्पा सभ्यता के कई रहस्यों से पर्दा उठा सकते हैं। भारतीय पुरातत्व हॉकी टीम की खुदाई से मिले अवशेष से पता चलता है कि 'लोथल' अपने समय का कोई सामान्य नगर नहीं था। बल्कि वह अपने आप में पूर्ण रूपेण विकसित नगर था। यहाँ के निवासी भी समझदार रहे होंगे। यहाँ के पुरातात्विक उत्खनन से मिली अलग-अलग आकार-प्रकार की मुहरें हड़प्पा सभ्यता के साथ इसके सीधे संबंध की प्रामाणिक संकेत देती हैं। मुहरों के एक ओर विभिन्न पशुओं के चित्र उकेरे हुए हैं, तो उनके दूसरी ओर उनकी विशिष्ट लिपि में कुछ लिखा हुआ है, जिसे आज तक पढ़ा और समझा नहीं जा सका है।

लोथल के उत्खनन से प्राप्त मुहरों पर की गई लिपिकीय अंकन को, इस लिखावट को पढ़ने समझने का प्रयत्न लगातार जारी है।

ऐतिहासिक साक्ष्यों को जानने और समझने के संदर्भ में माना जा रहा है कि यदि इन लिपियों और अक्षरों को पढ़ने के प्रयत्न कामयाब रहे, तो सिंधु नदी घाटी की सभ्यता की सामाजिक, आर्थिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक

व्यवस्था के साथ साथ आर्य सभ्यता के विषय में बहुत कुछ जानना समझना संभव हो पायेगा। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आलोक में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लोथल में हुए उत्खनन कार्य से बंदरगाह होने के अवशेष मिले हैं। यह लोथल नगर के पूर्वी छोर पर स्थित होने की ओर संकेत करता दिखाई देता है। पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त संकेतों और संदर्भों द्वारा यह प्रमाणित होता है कि यह बंदरगाह विश्व का सबसे प्राचीनतम बंदरगाह है। इससे पहले के समय में समकालीन विश्व में इतने पुराने बंदरगाह के अवशेष कहीं से भी नहीं देखे गये हैं। यह इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि भारत के इस क्षेत्र से विश्व के अन्य क्षेत्रों को समुद्री मार्ग से निर्यात और आयात होते रहे हैं। इसके साथ ही साथ यहाँ से बहुत अधिक मात्रा में मोती बनाये जाने के प्रमाण मिलते हैं, जो घोषित करते हैं कि लोथल शहर औद्योगिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण शहर के रूप में अवश्य ही रहा होगा।

तत्कालीन शहर लोथल नगर खंभात की खाड़ी की समुद्री सीमा के समीप अवस्थित था, परंतु समुद्र के तटवर्ती इलाके इस शहर के समीप नहीं थे, जिसके कारण आवागमन में लगाए गए जहाज नगर की सीमा तक नहीं पहुँच पाते थे। इसका समाधान निकालते हुए उस समय के नीति नियंताओं द्वारा एक ऐसी व्यवस्था बनाई गई जिससे कि सरलता से औद्योगिक एवं अन्य उत्पादनों को जहाज तक पहुँचाया एवं उतारा जा सके। इस आशय की पूर्ति के लिए समुद्र से नगर तक के लिए एक लम्बी चौड़ी नहर का निर्माण किया गया, जिसके माध्यम से पानी को नगर तक पहुँचाया जाता था। वहाँ एक बड़े क्षेत्र में पानी को एकत्रित भी किया जाता था।

इस तरह से लोथल नगर के लोग बंदरगाह का निर्माण करने में काफी हद तक सफल रहे। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि लोथर के बंदरगाह को बनाने में ईंटों का प्रयोग किया गया था। नहर के बन जाने के उपरांत बड़ी

# लोथल...

सरलता से कोई भी जहाज अथवा नाव लोथल नगर तक आवागमन कर पाते थे। लोथर नगर के इस मानव निर्मित नहर के एक किनारे पर 12 मीटर चौड़ा प्रवेशद्वार भी बनाया गया था। यह प्रवेशद्वार लकड़ी का बना था, जो इस बंदरगाह के लिए सुरक्षा प्रणाली का काम भी करता था।

लोथल नगर के विकास एवं विस्तार के लिए तत्कालीन समुद्र तटीय नगर लोथल के निर्माण में कुल मिलाकर हर एक उस चीज की व्यवस्था की गयी थी, जिससे किसी भी प्रकार की स्थिति का सामना किया जा सके। विभिन्न तरह की उपयोग में लाई जाने वाली तकनीक का यह अद्भुत प्रयोग इस बात को प्रदर्शित करता है कि उस समय के लोग विज्ञान एवं तकनीकी में कितने योग्य रहे होंगे! लोथल नगर में बंदरगाह के साथ पास में ही सामान को सुरक्षित रखने एवं आवागमन की सुविधा के लिए एक गोदाम भी बनाया गया था। इसमें आयात-निर्यात की वस्तुएं काफी अधिक मात्रा में सुरक्षित एवं संरक्षित की जाती थीं। साथ ही साथ इस बात के पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं कि यहां करीब पांच नाव हमेशा आवागमन की सुविधा के लिए मौजूद रहती थी, ताकि सामान को समय पर जहाज तक पहुंचाया एवं वहां से लाया जा सके जा सके।

अपनी भव्यता एवं सुरक्षा संरक्षा के बावजूद लोथल नगर उस रूप में हमारे सामने नहीं आ पाता जिस रूप में इसकी परिकल्पना एवं निर्माण किया गया था। लोथल की तबाही के कई कारण बताये जा सकते हैं। इस कारणों में सबसे ज्यादा मुख्य कारण बाढ़ एवं बारिस को माना जा सकता है। उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर ऐसा माना जाता है कि सन 1900 ई.पू. के आसपास लोथल नगर में एक तेज विनाशकारी बाढ़ आई थी, जिसने इस नगर की भव्यता को विनाश कर दिया। पुरातात्विक खुदाई के दौरान विभिन्न स्तरीय भूमि से मिली अलग-अलग मिट्टी की परतें इस बात को तथ्यों एवं साक्ष्यों द्वारा प्रमाणित करती हैं। लोथल नगरकी तबाही का दूसरा सबसे बड़ा कारण यहां बनाये गये बंदरगाह को ही माना जा सकता है। साक्ष्यों एवं तथ्यों के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि यहां बनाए गए बंदरगाह और उस की सुविधा के लिए बनाई गई नहर के कारण भारी मात्रा में पानी आ गया था, जिसे समय एवं सुरक्षा से नियंत्रित नहीं किया जा सका। जिसका परिणाम यह हुआ कि पूरा नगर पानी-पानी हो गया।

भूमि के खुदाई के विभिन्न स्तरों का निरीक्षण एवं तथ्य निरूपण करने से यह पता चलता है कि कुछ समय बाद में इस नगर को बसाने तथा बनाने का प्रयास किया गया जिसके अनुसार लोथल नगर को नयी परिकल्पना के साथ कुछ सालों बाद फिर से बसाने की लगातार कोशिश की गई, पर वह पहले जैसा नहीं बस और बन पाया था, जैसा कि उसको बनाने वाले लोगों की अपनी मंशा थी। बाद में कुछ वक्त बाद ही वह पुराने कारणों से अथवा कुछ अज्ञात कारणों से फिर से नष्ट हो गया।

आज भी लोथल नगर में बंदरगाह के अवशेष हमें काफी अच्छी स्थिति में मिलते हैं जो देखने योग्य भी हैं। इसके साथ ही साथ मोती और मोती की कलाकृतियों वाला म्यूजियम भी यहां बनाया गया है। इन सब का वायदों के साथ आज के देखे जाने वाले लोथल नगर के रूप में बस नहर का कोई अस्तित्व नहीं प्राप्त होता है। माना जा रहा है कि एक लम्बा वक्त बीत जाने के कारण और बदले भौगोलिक स्थितियों की वजह से नहर खत्म हो गई होगी।

# तुम्हें याद हो कि न याद हो !



**ग** जल गायिकी की विधा को जिन कुछ फनकारों ने जान, तेवर और हुस्न बख्शी, उनमें अख्त्री बाई फैजाबादी उर्फ बेगम अख्तर सबसे प्रमुख नाम है। एक सबसे अलग अंदाज़, एक सबसेआवाज़। आवाज़ की तासीर ऐसी जैसी आधी रात किसी वीराने से आहिस्ता-आहिस्ता उठती उनींदी-सी कोई पुकार। जैसी मुहब्बत में चोट खाई माशूका की कोई दबी-सी चीख। जैसे फुसफुसा कर बातें करता पलकों का कोई भींगा-सा कोना। सदी के तीसरे दशक में जब उन्होंने संगीत की महफिलों में शिरकत शुरू की, वह दो बेहतरीन गायिकाओं - गौहर जान और जानकी बाई छप्पनछुरी के अवसान और रसूलन बाई के उत्कर्ष का दौर था। अपनी बिकूल अलग-सी आवाज़, शालीनता और मंचों पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति की वजह से बहुत कम वक्त में ही अख्त्री गज़ल, तुमरी और दादरा गायन की लोकप्रिय आवाज़ बन गई। सिर्फ पंद्रह साल की उम्र में ही संगीत कार्यक्रमों से उन्हें देशव्यापी शोहरत मिली तो फिल्मवालों का ध्यान उनकी तरफ गया। उन्होंने अख्त्री बाई फैजाबादी के नाम से 1933 से 1943 तक लगभग आधा दर्जन फिल्मों में अभिनय किया। अपनी फिल्मों में अपने तमाम गाने उन्होंने खुद ही गाए थे। बहुत दिनों तक फिल्मों का माहौल रास नहीं आया तो उन्होंने अभिनय को अलविदा कह खुद को पूरी तरह गायन के प्रति समर्पित कर दिया। अख्त्री बाई के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब 1945 में शादी के बाद पारिवारिक परंपराओं के दबाव में उन्हें गायिकी से तौबा करनी

पड़ी। अपने स्वभाव और शौक के विपरीत जीवन ने उन्हें बीमार कर दिया। बीमारी इस क्रूर बड़ी कि उनके ससुराल वालों को अंततः उन्हें लखनऊ रेडियो स्टेशन में गाने की अनुमति देनी पड़ी। फिर क्या था, बेगम अख्तर के नाम से उनकी आवाज़ का जो सफ़र दुबारा शुरू हुआ, वह देखते-देखते समूचे भारतीय उपमहाद्वीप में आंधी की तरह पहुंच गया। उनकी पुरकशिश आवाज़ से गुज़रकर लोगों ने शायद पहली बार जाना कि दर्द को महसूस ही नहीं किया जाता, सुना भी जा सकता है। बेगम साहिबा की गाई गज़लें और तुमरियां हमारी अनमोल संगीत विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 1974 में अपनी मौत तक बेगम अख्तर ने खुद को गज़ल की सबसे ज़रूरी और सबसे मकबूल आवाज़ के रूप में स्थापित कर लिया था। उनकी आवाज़ देश की कई पीढ़ियों के दर्द और तन्हाई का भरोसेमंद साथी रही हैं। वैसे तो उन्होंने कई क्लासिक शायरों की गज़लों को अपनी आवाज़ बख्शी, लेकिन शकील बदायूनी उनके सबसे प्रिय शायर थे जिनकी 'ए मुहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया', 'मेरे हमनफस मेरे हमनवां मुझे दोस्त बनके दगा न दे' सहित कई गज़लों ने उनकी आवाज़ में लोकप्रियता का शिखर छुआ।

आज मलिका-ए-गज़ल बेगम अख्तर के यौमे पैदाईश पर उन्हें खेराज-ए-अक्रीदत, मेरे एक शेर के साथ -जब भी कम होंगी उम्मीदें, जब भी घबड़ाएगा दिल / आपकी आवाज़ के पहलू में सो जाएंगे हम !

• ध्रुव गुप्त, सेवा निवृत्त आईएसएस, पटना

# बौद्धिक आतंकवाद की पोल खोलती है 'शहरी नक्सलवाद-सच'

कहते हैं हर मनुष्य के भीतर ऊर्जा मौजूद होती है। ऐसे में उस ऊर्जा को सही दिशा में लगाना नितान्त आवश्यक है। खासतौर पर युवाओं को अपनी ऊर्जा को समाज कल्याण के लिए सही दिशा में लगाना बहुत जरूरी है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि, 'ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।' सच पूछिए तो आज हमारे समाज या यूं कहें युवाओं के साथ यही हो रहा है। हमारे युवा पथभ्रमित किए जा रहे हैं और फिर हम कहते हैं कि हमारा देश विश्वगुरु नहीं बन पा रहा है। अब सोचिए जिस देश के युवा नक्सली बन जाएंगे या समाज को विरक्ति की ओर ले जाने की दिशा में बढ़ जाएंगे। फिर समाज तरक्की कैसे कर पाएगा? वहीं दूसरी तरफ शहरी नक्सलवाद आज की युवा पीढ़ी की रगों में जहर बनकर कैसे घूल रहा है। यह कोई बताने की बात नहीं। यह वर्तमान दौर की एक ऐसी सच्चाई बनकर हमारे सामने आया है जिस पर कोई भी युवा खुलकर चर्चा नहीं कर रहा है। इतना ही नहीं इस समस्या के निजात के लिए देश का बौद्धिक तबक्रा भी बहस करने से कतराता है। लेकिन अब इसी बहस को हवा देने का काम एक युवा लेखक दीक्षांत सूर्यवंशी ने की है। लेखक और 'शहरी नक्सलवाद- सच' किताब के संपादक दीक्षांत सूर्यवंशी ने इस पुस्तक के माध्यम से शहरी नक्सलवाद के सच को सबके सामने उजागर करने का प्रयास किया है।

बता दें कि इस किताब में संकलित आलेख एक ऐसी सच्चाई को उजागर कर रहे हैं जो कहीं ना कहीं हमारे समाज में वर्षों से पैठ बना चुके हैं और वह अपने अधिकारों के नाम पर देश को और देश की युवा पीढ़ी को बरगलाने का काम कर रहे हैं। दीक्षांत सूर्यवंशी ने अपनी किताब 'शहरी नक्सलवाद-सच' में देश के प्रतिष्ठित 19 मनीषियों और पत्रकारों के विचारों को संकलित करते हुए यह बता रहे हैं कि कैसे इस शहरी नक्सलवाद से बचा जा सकता है और समाज में युवाओं को एक नई दिशा दी जा सकती है। 'शहरी नक्सलवाद- सच' यह किताब वर्तमान परिदृश्य की सच्चाई को उजागर करने वाली है किस प्रकार वर्तमान पीढ़ी को नक्सलवाद के दलदल में धकेला जा रहा है। उसकी सच्चाई यह किताब शत-प्रतिशत बयां कर रही है। नक्सलवाद ना केवल शिक्षण संस्थानों में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपने पैर पसार रहा है। इसकी इस किताब में खुलकर चर्चा की गई है। जेएनयू, जाधवपुर और उस्मानिया जैसे नामी विश्वविद्यालय में अर्बन-नक्सली खुलकर सामने आए हैं। उनकी सच्चाई जनता तक लाने में यह किताब कहीं ना कहीं सहयोगी है।

इतना ही नहीं नक्सलवाद की शुरुआत से लेकर इसके अलग-अलग चरणों का उल्लेख इस किताब में बखूबी किया गया है। वैसे भी जिस किताब को लिखने में केजी सुरेश, डॉ अमिताभ श्रीवास्तव और डॉ राकेश कुमार योगी जैसे देश के श्रेष्ठ मनीषियों का सानिध्य मिला हो और किताब के मार्गदर्शन मंडल में शामिल हो। वह किताब समाज को नई दिशा और दशा जरूर देने वाली होगी। बता दें कि भारत में नक्सलवाद की शुरुआत 1976 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी गांव से मानी

नेशनल लाइब्रेरी डेवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा शीघ्र प्रकाश्य  
21-वीं शताब्दी के शहरी नक्सलियों की सच्चाई  
किताब की अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवाएं

संपादन एवं संकलन  
दीक्षांत सूर्यवंशी

**मार्गदर्शन मंडल**  
प्रो. के.जी. सुरेश  
कुलपति, माखनलाल विश्वविद्यालय  
डॉ. अमिताभ श्रीवास्तव  
निदेशक, मणिपाल विश्वविद्यालय (जयपुर)  
डॉ. राकेश कुमार योगी  
मीडिया शिक्षक एवं वरिष्ठ पत्रकार

## शहरी नक्सलवाद सच

कॉल या मैसेज करें : +91-8958592000



**NATIONAL LIBRARY  
DEVELOPMENT TRUST**

☎ +91-8375045954    ✉ info.nldt@gmail.com    📱 @Nldt:2020

जाती है उस समय नक्सलवाद का उद्देश्य जमींदारों द्वारा छोटे किसानों पर हो रहे उत्पीड़न पर अंकुश लगाने के लिए किया गया था। जिसमें भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता चारू मजूमदार, कानू सान्याल और कन्हैया चटर्जी शामिल थे। जिसमें जमींदारों को गोरिल्ला युद्ध के माध्यम से सबक सिखाया जाता था। भारत में नक्सलवाद का स्वरूप माओ त्से तुंग के विचार से प्रभावित रहा जिसे माओवादी नाम दिया गया। वक्त के साथ इसमें बदलाव आता गया और इसका मुख्य टारगेट ग्रामीणों को बरगला कर अपने पक्ष में खड़ा करना था और सरकार की नीतियों का विरोध करना भर रह गया। 1976 से 1980 तक का समय नक्सलवाद की शुरुआत का चरण रहा जो

मार्क्सवादी लेनिनवाद, माओवाद पर आधारित था। वही इसका दूसरा चरण 1980 से 2004 का था जिसमें नक्सलवाद का व्यवहारिक विकास हुआ। तीसरे चरण 2004 से वर्तमान तक का रहा जिसमें नक्सलवाद में विदेशी संपर्क को बढ़ावा मिला। जिसका जीता जागता उदाहरण 2018 में पुणे पुलिस द्वारा अर्बन नक्सल का खुलासा करने पर उजागर हुआ। अब सोचिए जिस दौर में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था हो, जमींदारी उन्मूलन कब का हो गया हो। फिर किसी समाज को नक्सलवादी बनने से बचा हासिल हो सकता, लेकिन नहीं राजनीति और सामाजिक फ्रायदा उठाने के लिए कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी आज भी नक्सलवाद की जड़ें मजबूत कर रहे हैं।



जिसका शिकार युवा हो रहें। इसी परत को खोलने का काम यह किताब करती है।

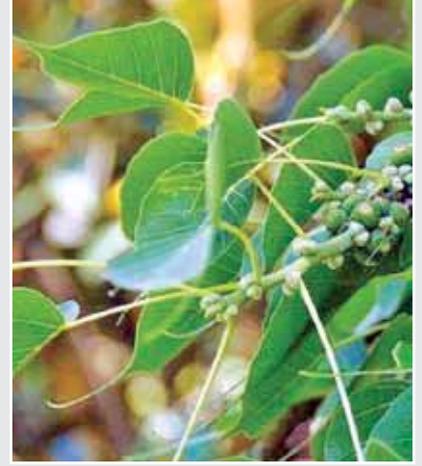
इस किताब के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार फिल्मों के द्वारा नक्सलवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। फिल्मों में डाकू को जनता का मसीहा बताया जाता है। अधिकतर फिल्मों में डकैतों के निजी जीवन को महान और अंत को शहादत भरा बताया जाता है। चंद फिल्में जरूर आईं। जो नक्सलवाद के घोर विरोधी रही लेकिन उनकी संख्या बहुत ही कम थी। अब सोचिए जिस समाज में डकैतों को महान बताया जाएगा। फिर वह लोकतंत्र किस तरफ बढ़ जाएगा। ऐसे में युवाओं को नक्सलवाद के प्रति जागरूक बनाने का काम यह किताब करती है। वही अर्बन नक्सलवाद 2018 चर्चा में आया। इसके साथ ही हमारे युवा कम्युनिज्म, जिहाद कम्युनिस्ट, लेनिनवाद, कामरेड और वामपंथी जैसे शब्द के गिरफ्त में आते चले गए हैं। जिनका मुख्य उद्देश्य देश विरोधी एजेंडा चलाना भर रह गया। फरवरी 2016 में जेएनयू में राष्ट्र विरोधी नारों की गूंज से सभी देशवासी अवगत हैं। भारत तेरे टुकड़े होंगे और कश्मीर मांगे आजादी के नारे यह बताने के लिए काफी थे कि कैसे शिक्षण संस्थानों में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को अंजाम दिया जाने लगा है। यह एजेंडा आज का नहीं बल्कि 100 वर्षों से पुराना माना जाता है। कम्युनिस्टों ने भारत को 17 अलग-अलग रास्तों में तोड़ने का विचार तक रख दिया था पाकिस्तान का निर्माण भी कम्युनिस्टों की ही देन माना जाता है।

गौरतलब हो कि शहरी नक्सलवाद का मुख्य एजेंडा भारतीय संस्कृति को छिन्न-भिन्न करना मात्र रह गया। शहरी नक्सलवाद, नक्सलवाद का परिवर्तित रूप है। 80 के दशक में भले ही इसकी शुरुआत मानी जाती हो पर 2001 आते-आते अपनी गतिविधियों को बदलकर बौद्धिक स्तर पर जंग छेड़ दी गई। जिसमें वकील, लेखक, मानवाधिकार और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। भीमा कोरेगांव हिंसा के पश्चात शहरी नक्सलवाद चर्चा का विषय बना। भीमा कोरेगांव 31 दिसंबर 1818 को अंग्रेज और मराठों के बीच युद्ध था जिसमें मराठों की हार हुई थी और अंग्रेजों को विजय मिली थी। इस शौर्य दिवस

के रूप में मनाने के पीछे की क्या मंशा रही। यह भी सोचने वाली बात है। बीते वर्षों में इस युद्ध को दो शतक पूरे हुए। इस अवसर पर यलगांर परिषद द्वारा रैली भी आयोजित की गई जिसमें शहरी नक्सलियों को कांग्रेसी द्वारा आर्थिक और कानूनी मदद दिलाने के आरोप लगे और साथ ही इसमें जिग्नेश मेवानी, उमर खालिद रोहित वेमुला की मां को आमंत्रित किया गया। जिसके बाद पूरा महाराष्ट्र हिंसा की आग में जल उठा था।

ऐसे में कुल-मिलाकर देखा जाए तो शहरी नक्सलवाद किस तरह हमारे समाज के लिए बड़ा खतरा है। इसे समझने और इससे समाज को बचाने की जरूरत है। जिस दिशा में इस किताब में खुलकर बात की गई है। 'शहरी नक्सलवाद- सच' किताब में कुल 19 लेख संग्रहित हैं। जो देश के प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों और पत्रकारों द्वारा लिखे गए हैं। जिसके माध्यम से शहरी नक्सलवाद के विविध रूपों की विस्तृत चर्चा की गई है। कैसे फिल्म नक्सली विचारों को पुष्पित कर रही। इसकी बात यह किताब करती है। शहरी नक्सलवाद का समाधान क्या है? इस दिशा में बात यह किताब करती है। मीडिया और नक्सलवाद के अन्तर्संबन्धों की बात यह किताब करती है। सत्ता के लिए कैसे नक्सलवाद की जड़ें बोई जा रही हैं। इसपर बात यह किताब करती है। वहीं देश के प्रतिष्ठित लेखक और बुद्धिजीवी विवेक अग्निहोत्री अपनी पुस्तक 'अर्बन नक्सलवाद' लिखते हैं। जिसके बाद कुछ लोग 'शहरी नक्सलवाद' का उदय मानते हैं। इतना ही नहीं युद्ध रणनीतिक विलियम एस लिंड पुस्तक 'फोर्थ जनरेशन वॉरफेयर' में लिखते हैं कि युद्ध की रणनीति समाज में सांस्कृतिक संघर्षों को पल्लवित करने तथा दरार उत्पन्न करने मात्र पर टिकी हुई है। कुल-मिलाकर देखें तो 'शहरी नक्सलवाद-सच' नामक यह किताब नक्सलवाद के विविध रूपों पर विस्तृत पक्षों को समेटे हुए है और इसका समाधान भी बताती है। साथ ही साथ यह किताब यह बताती है कि कैसे शहरी नक्सलवाद लोकतंत्र और भारतीय सांस्कृतिक ताने-बाने पर चोट कर रहा है। ऐसे में यह किताब युवाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहने वाली है और हर युवा को नक्सलवाद और शहरी नक्सलवाद से बचने के लिए यह किताब अवश्य पढ़नी चाहिए।

## पीपल और बरगद का धार्मिक, वैज्ञानिक महत्व



मनुष्य प्रकृति में ही जीवन जीता है। पीढ़ी दर पीढ़ी बहुत शोध, हुए आरोग्य शास्त्र लिखे गए। दुनियां के सभी प्राकृतिक पेड़ों में पीपल बरगद में जीवनदाई अतिविशिष्ट गुण सिद्ध हुए हैं। पीपल, बरगद की जड़, खाल, तना पत्तियां, सब औषधिय है।

पीपल को अंग्रेजी में पिपरी, तथा संस्कृत में अश्वतः कहते हैं। पीपल के पेड़ की ऊंचाई सत्तर अस्सी फीट होती है, एवं मोटाई चार से आठ फिट तक की होती है। पत्ते हृदय के आकार के होकर हरे रंग के खुबसूरत जीवंत होते हैं। इसके पत्तों से दूध निकलता, और एक उम्र के बाद, तनों से ही जड़े फूटने लगती है। पारस पीपल भी पूजनीय होता, उसकी शाखाएं लता सी होती है।

बरगद का पेड़ का बड़ा महत्व है, इसका वैज्ञानिक नाम फाइकस, बेनगोलेसिस तथा, बेनियन ट्री भी है। हिंदी में वट भी कहते हैं।

पेड़ परंपराएं बताते हैं, चाहे राम युग मे या कृष्ण युग। बौद्ध को भी बरगद के पेड़ के नीचे ही दर्शाया गया है। महान धर्म शास्त्र गीता में कृष्ण ने अर्जुन को यही बताया कि वन संपदा में मैं पीपल हूँ। सोमवती अमावस्या में विष्णु, निवास करते हैं। पद्म पुराण में ये बताया गया है, कि पीपल में जल चढ़ाता उसकी उम्र लंबी होती है।

आयुर्वेदिक महत्व यह कि, सर में रूसी या बाल झड़ रहे हैं, तो पीपल का दूध लगाएं। किसी भी प्रकार का चर्म रोग है तो पीपल की छाल जला कर नारियल के तेल में मिलाकर लगाने से रोग खत्म हो जाता है। मुखपाक, पायरिया, अल्सर, मुँह में छाले इसके लिए पीपल के नरम कोपल पत्तों को चबाने से बीमारियां दूर होती है। छाल का काढ़ा बनाकर पीने से शुगर लेवल बराबर हो जाता है। ज्योतिष महत्व एवं अनेकों आयुर्वेद महत्व के अलावा भी, पर्यावरण में भी पीपल बरगद का अभूतपूर्व योगदान है। पीपल ऑक्सीजन छोड़ता वही बरगद लंबी उम्र लिए, सदियों छांव देता। प्राकृतिक खुबसूरती लिए धरती पर अमरता प्राप्त देवत्व रूप लिए पीपल बरगद, ईश्वर का आशीर्वाद है।

‘परिवर्तन का रहस्य अपनी सारी ऊर्जा पुराने से लड़ने पर नहीं, बल्कि नए के निर्माण पर केंद्रित करना है’। -सुकरात

# महामारी में कंपनियों ने अपने कर्मचारियों को कैसे संभाला



**सा** र्वजनिक रूप से आप सभी के साथ अपना अनुभव साझा करने का यह मेरा पहला अवसर है। मैं एक शिक्षित और अनुभवी मानव संसाधन पेशेवर हूँ, मानव संसाधन प्रमुख के रूप में एक प्रौद्योगिकी कंपनी के लिए काम करता हूँ। अपने 16 साल से अधिक के करियर में, मैंने विलय, अधिग्रहण, संसाधनों के अनुकूलन के दौरान बड़े और छोटे दोनों तरह के सेटअप में कई संगठनात्मक सांस्कृतिक परिवर्तनों को देखा और संभाला है। हालाँकि, इस महामारी ने हमारे सोचने के तरीके को बदल दिया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम सभी ने भौतिक रूप से उपस्थिति की आवश्यकता से लेकर आभासी (वर्चुअल) उपलब्धता की स्वीकृति तक संस्कृति में बदलाव को सीखा और अपनाया है।

पिछले साल जब दुनिया और हमारी सरकार ने मार्च '20 के महीने में पूरे देश में पहले लॉक डाउन की घोषणा की थी, तब शुरू में सभी ने केवल एक तिमाही के लिए व्यापार प्रभाव का अनुमान लगाया था जो बाद में पूरे साल जारी रहा। इस अवधि के दौरान हमने कंपनी के रूप में कई कर्मचारियों / लोगों से संबंधित चुनौतियों का सामना किया था, उदाहरण के लिए, अपने कर्मचारियों के साथ जुड़ना, कर्मचारियों को उत्पादक बनाना और लागत पर तनाव को नियंत्रित करना क्योंकि पहले 3-6 महीने में कोई व्यवसाय प्रभावी ढंग से नहीं था और हर कोई केवल ध्यान केंद्रित कर रहा

था। आवश्यक गतिविधियों के लिए।

मानव संसाधन विभाग के रूप में, हमारी सबसे बड़ी चुनौती कर्मचारियों को शामिल करना और टीम को काम करने के लिए तैयार करना और साथ ही लागत को कम करने में कंपनी का समर्थन करना था।

तालाबंदी के कारण कर्मचारी कार्यालय से काम करने में असमर्थ थे और स्थानीय / राज्य स्तर के अधिकारियों द्वारा विभिन्न प्रतिबंध लगाए गए थे। साथ ही, वर्क फ्रॉम होम के दौरान सभी कर्मचारियों के पास पर्याप्त काम और घर पर अच्छा बुनियादी ढांचा नहीं था, इसलिए हमारा पहला ध्यान अपने कर्मचारियों को घर से प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम बनाना था। इसके लिए हमने उपस्थिति के लिए कंपनी की नीतियों में बदलाव किए, काम के लचीले घंटों की शुरुआत की, अच्छी इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिए भत्ते शामिल किए और घर पर बैठने की उचित व्यवस्था की।

एक और बड़ी चुनौती थी, कर्मचारी की उत्पादकता को कैसे ट्रैक किया जाए, और इसलिए, हमने मासिक समीक्षा करने के लिए दैनिक कार्य प्रबंधन, टीम मीटिंग और मानक प्रारूप शुरू किए और पेश किए। शुरुआत में हर कोई अनिच्छुक था और चीजों को आवश्यक प्रारूप में रखने में संघर्ष कर रहा था। धीरे-धीरे और समय के साथ, सभी ने 2-3 महीने की हैडहोलिडिंग के प्रयास से नए सामान्य को अपनाया और सीखा, अब हर कोई सहज है।

हमने इस समय का उपयोग विभिन्न कर्मचारी विकास और प्रशिक्षण शुरू करने के लिए भी किया था। हमने योजना, सुधार, आयोजन और अच्छी आदतों के बुनियादी प्रबंधकीय कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न अनुकूलित और छोटे आभासी मॉड्यूल शुरू किए। इसने वर्चुअल में टीम के साथ प्रभावी ढंग से जुड़ने और उनके कार्य जीवन संतुलन को प्रबंधित करने में मदद की।

इसने वास्तव में हमारी सोच को बदल दिया है कि क्या 'क्या हमें वास्तव में कर्मचारियों को काम के लिए हर दिन कार्यालय में उपस्थित होने की आवश्यकता है'... हमने कर्मचारियों के साथ एक आंतरिक सर्वेक्षण किया और हमने पाया कि हमारे कर्मचारी घर से काम करने में कंपनी के साथ अधिक उत्पादक थे। इसका परिणाम व्यापार में हुआ था जहां उन्होंने न केवल बेहतर प्रदर्शन किया था बल्कि कंपनी के लिए संचालन लागत में भी काफी बचत की थी।

मुझे उम्मीद है, हम में से अधिकांश इससे संबंधित हो सकते हैं। यह न केवल कई लोगों को इस बारे में कुछ जानकारी देगा कि कंपनी ने कोविड 19 महामारी की स्थिति को कैसे संभाला है, बल्कि परिवर्तन पैदा करने की आपकी क्षमता पर भी विश्वास दिलाएगा।

मैं अपने आने वाले लेखों में कर्मचारियों के लिए कंपनियों द्वारा की जा रही संबंधित नई पहलों के लिए और अधिक जानकारी लाने का प्रयास करूंगा।

# मौसम अनुसार आपकी ड्रेसेस

वैसे तो आप सभी बखूबी इस बात को जानते ही हैं कि हमारी ड्रेसेस मौसम या कार्यक्रम अनुसार ही होना चाहिए, लेकिन कभी कभी हम या तो मौसम अनुसार मटेरियल गलत चुन लेते हैं या कार्यक्रम अनुसार कलर और प्रिंट। तो आइए आज हम इसी विषय पर कुछ बातें करते हैं

**मौ**सम अनुसार मटेरियल का सिलेक्शन - त्योहारों का मौसम याने अगस्त से प्रारंभ और नवंबर तक याने मॉडरेट टेंप्रेचर से लेकर तो गुलाबी ठंड का मौसम।।

इस समय आप ट्रेडिशनल ड्रेसेस में चंदेरी माहेश्वरी और सिल्क फैब्रिक को ज्यादा प्रिफर कर सकते हैं साथ ही त्योहारों में एवं इस समय होने वाले विवाह कार्यक्रमों के लिए सिल्क पर विशेष एंब्रॉयडरी वर्क के साथ कुछ अलग खूबसूरती दे सकते हैं। वैवाहिक कार्यक्रम में अब ये आवश्यक नहीं रहा कि साड़ी या सूट्स ही पहने जाएं।। अब फैशन के बदलते दौर में आप इवनिंग गाऊन को या इंडोवेस्टर्न ड्रेसेस को भी प्राथमिकता दे सकते हैं। अगस्त से मार्च तक आप इवनिंग गाऊन के लिए वेलवेट, कॉटन सिल्क मटेरियल को प्राथमिकता दे सकते हैं।

दिसंबर से मार्च तक ठंड के मौसम में सबके साथ एक ही दुविधा की यदि ठंड से बचने जाते हैं तो स्वेटर शाल या कार्डिगन हमरी खूबसूरत ड्रेस को छुपा देते हैं, इसलिए इस मौसम के लिए आप रेयोन, वेलवेट जैसे मटेरियल के साथ जा सकते हैं साथ ही इस मौसम में पहनने हेतु आप अपनी ड्रेसेस में क्रेप या मोटे कॉटन मटेरियल के अस्तर का उपयोग कर सकते हैं।

अप्रैल से जून तक के गर्म मौसम में हम सभी के दिमाग में केवल एक ही मटेरियल होता है। जी हां कॉटन, घर में पहनने के लिए हो या रोज ऑफिस या बाहर पहनने की बात हो कॉटन फैब्रिक के साथ कई सारे प्रयोग आपका बुटीक कर सकता है। गर्मियों में आप कॉटन कुर्ते के साथ यदि लीगिंग्स की जगह प्लाजो जो ग्लेज कॉटन से बना हो पहन सकते हैं, मोटे फिगर पर भी प्लाजो एक खूबसूरत लुक देते हैं बशर्ते उस पर कुर्ते कि डिजाइन महिला के हाइट और कलर के अनुसार सही हो। यदि आप थोड़ा मॉडर्न लुक पर जाना चाहें तो आप एंकर लेंथ पैंट भी ट्राय कर सकते हैं।

बारिश का मौसम प्रारंभ होने के साथ साथ उमस का भी साथ कुछ दिनों तक रहता है इसलिए इस समय विशेष रूप से कॉटन फैब्रिक को ही प्राथमिकता दें क्योंकि सिल्क या हेवी मटेरियल उमस भरे मौसम में ज्यादा परेशान करते हैं।

जब वर्षा ऋतु का मौसम जोरों पर हो और आपको

विशेष कार्यक्रम के लिए कुछ हेवी पहनना हो

तब आपको दो तरह

कि ड्रेसेस को

प्राथमिकता देना

चाहिए जैसे

यदि आपको

आउटडोर

फंक्शन जैसे

बारात के साथ

या आउटडोर

पार्टी हो तो ऐसे

मौसम में आप

सारा, गाउंस या

फालिंग पैटर्न को ना पहने

ये सभी आप इनडोर फंक्शन

में ही पहने। इस मौसम में आउटडोर

फंक्शन के लिए वेस्टर्न स्टाइल पर जा

सकते हैं बाकी एथनिक के लिए इनडोर फंक्शन तो है ही

आज के समय सबसे महत्वपूर्ण बात ये की आप

जब भी अपने बुटीक जाएं सबसे पहले ये याद दिलाएं

कि आपकी ड्रेस अनुसार उसी कपड़े से एक मास्क

अवश्य बनाएं। ये विशेषकर पार्टिवियर ड्रेसेस के

लिए है, क्योंकि ज्यादातर कोई इस बात पर ध्यान नहीं

देता और एक अलग या अलग कलर कॉम्बिनेशन का

मास्क पहन लेते है जो ड्रेस की खूबसूरती को कम

करता है। इस बात का भी विशेष रूप से ध्यान रखना

चाहिए कि हेवी ड्रेसेस के साथ यदि आप मास्क बनवा

रहे हैं तो उसमे मोती, गोटा या गोल्डन सिल्वर वर्क

का उपयोग भी किया जाता है जिसको यदि ठीक तरह

से डिजाइन नहीं किया गया हो तो वह सुंदरता बढ़ाने

की बजाय खराब लुक भी दे सकता है उदाहरण के

लिए यदि मोती या गोटा वर्क को ठीक होंटो पर किया

गया हो तो वह लाइट पड़ने पर दांतों के दिखने जैसा

आभास दे सकते हैं जो आपको उस समय कोई नहीं

बता पायेगा पर जब आप अपने फोटोग्राफ देखेंगे तो वह

अच्छा लुक नहीं देंगे

तो अब हो जाइए तैयार अपने आने वाले त्योहारों

और कार्यक्रमों के लिए।



# पैरालंपिक गेम्स, भारत हुआ गौरवान्वित

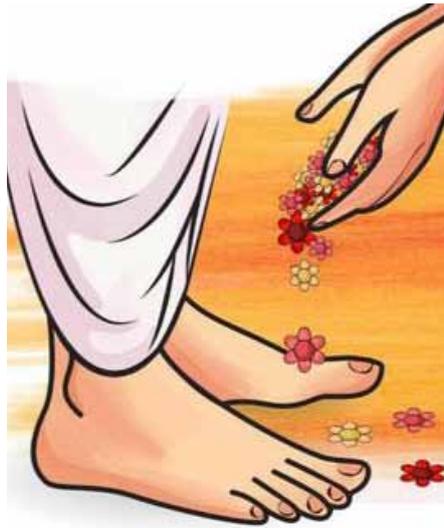
भारत खेलों का देश रहा है। ओलंपिक के बारे में तो सब जानते हैं लेकिन पैरालंपिक गेम के बारे में सबको शायद ही पता हो। पैरालंपिक गेम्स की शुरुआत के बारे में जाना जाए तो, इसकी शुरुआत मुख्यतः द्वितीय विश्व युद्ध के समय में घायल, किसी न किसी इंजरी के शिकार हुए सैनिकों को फिर से प्रोत्साहित करके मुख्यधारा में लाने के लिए हुई थी। सन 1948 में डॉ. गुडमान ने दूसरे अस्पताल के मरीजों के साथ इस तरह की प्रतिस्पर्धा शुरू की थी। 2021 में के पैरालंपिक गेम्स में भारत ने भी कई मेडल जीते और देश को सम्मान दिलाया। खेलों का नाम लिया जाए तो इसके सिलेबस में लगन, जी तोड़ मेहनत, चुनौतियाँ और बेहतरीन प्रदर्शन का जिक्र होता है ओलंपिक की ही तरह कई खेलों की विश्व स्तरीय प्रतियोगिता दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए भी होती है। इसे ही पैरालंपिक कहते हैं। इस तरह के खिलाड़ियों के लिए यह दोहरी लड़ाई लड़ने जैसा है, क्योंकि खिलाड़ियों को समाज से, और उन खिलाड़ियों से प्रतिस्पर्धा होती है, जो कि सामान्य है, और दिव्यांग को सामान्य से अलग ग्रुप में रखते हैं। पैरालंपिक ऐसी दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए है, और भारत में भी ऐसे खिलाड़ियों की टीम की भरमार है। जापान की राजधानी टोक्यो में 2021 के पैरालंपिक गेम्स में भारत में भी अपना योगदान दिया और नई चुनौतियाँ और नई उम्मीद के साथ खिलाड़ियों ने अपना दमखम दिखाया। श्रेष्ठ प्रदर्शन की उम्मीद के साथ भारत की तरफ से 54 खिलाड़ियों ने पैरालंपिक खेलों में भाग लिया, जो कि 25 अगस्त से शुरू होकर 5 सितंबर तक चले थे। पैरालंपिक में भारत को पहला पदक 1972 के हाईडेल वर्ग में जीता था। पुरुषों की 50 मीटर फ्रीस्टाइल में सफलता हासिल की थी। टोक्यो में सिल्वर मेडल जीतने वाली टेबल टेनिस में भविना पहली खिलाड़ी बन गईं हैं। निषाद कुमार ने भी हाई जंप में सिल्वर मेडल जीतकर देश को गौरवान्वित किया।



## सद्गुरु की पहचान

ओ शो कहते हैं गुरु मृत्यु है, इसीलिए गुरु ब्रह्मा है। उससे मृत्यु घट सकती है, इसीलिए महाजीवन का सूत्रपात हो सकता है। पुराने हिंदू शास्त्र कहते हैं 'आचार्यो मृत्यु' आचार्य मृत्यु है, गुरु मृत्यु है। क्या अर्थ है उनका क्या प्रयोजन है। शिष्य जब गुरु के पास आता है, तो जैसा है वैसा उसे मरना होगा और जैसा होना चाहिए वैसा होना होगा। जब शिष्य गुरु के पास आता है, तो बीमारियों का जोड़ है, उपाधियों का जोड़ है। गुरु की औषधि बीमारियों को तो मिटा देगी, लेकिन जैसा शिष्य आता है अहंकार से भरपूर, वह अहंकार तो सिर्फ बीमारियों का बंडल है। जब बीमारियाँ हटती हैं, वह अहंकार भी मर जाता है। वह उनके बिना जी भी नहीं सकता। फिर जो शेष बचता है, वह तो कुछ ऐसा है, जिसका शिष्य को पता ही नहीं था। वह तो मरने के बाद ही पता चलता है।

अहंकार की मृत्यु के बाद ही आत्मा का बोध होता है। शायद शिष्य आता है अपने प्रयोजन से। वह शायद महाजीवन की तलाश में आता है। वह शायद सोचकर आता ही नहीं कि गुरु के पास मरना होगा, मिटना होगा। धीरे-धीरे, इंच-इंच गलना होगा, बिखरना होगा। वह तो किसी लोभ से आया था। वह तो शायद संसार की वासना को ही और थोड़ी गति मिल जाए, और थोड़ी शक्ति मिल जाए, कामना के जगत में और थोड़ा बलशाली हो जाऊँ, जीवन के संघर्ष में और थोड़ा संकल्प मिल जाए इसलिए आया था। मेरे पास लोग आते हैं, वह कहते हैं संकल्प



शक्ति की कमी है। आप कृपा करके संकल्प शक्ति दे दें। मैं पूछता हूँ संकल्प शक्ति का करोगे क्या? संकल्प शक्ति का उपयोग संघर्ष में है, संसार में है, मोक्ष में तो कोई भी नहीं। अशांत होना तो संकल्प शक्ति की जरूरत है। शांत होना हो तो विसर्जित करो। जो थोड़ी-बहुत है भी वह भी विसर्जित करो। उसे भी डाल आओ गंगा में। उससे भी छुटकारा लो। संकल्प

तो बाधा बनेगा, समर्पण मार्ग है। लोग मेरे पास आते हैं, वे कहते हैं कुछ आशीर्वाद दें। जीवन में बड़ी निराशा है, आशा का दीया जला दें। मैं उनसे कहता हूँ तुम गलत जगह आ गए हो। यहां तो आशा के दीये बुझाए जाते हैं।

तुम इसे ध्यान रखना, ये सद्गुरु की पहचान है, जो तुमसे आशा छीन ले, जो तुमसे संकल्प छीन ले। यह सद्गुरु की पहचान है, जो तुम्हें मिटा दे। तुम भला किसी कारण से उसके पास आए हो, वह तुम्हारी चिंता ही न करे। उसके लिए तो आत्यंतिक बात ही महत्त्वपूर्ण है। वह तो तुम्हारे भीतर मोक्ष को लाना चाहता है। और स्वाभवतः तुम कैसे मोक्ष की कामना कर सकते हो। संसार को ही तुमने जाना है। वहां भी सफलता नहीं जानी। किसने जानी सिकंदर भी असफल ही होता है। संसार में असफलता ही हाथ लगती है। तो तुम वही सफलता पाने के लिए आ गए हो अगर, तो केवल असद्गुरु से ही तुम्हारा मेल हो पाएगा, जहां गंडा-ताबीज मिलता हो, मदारीगिरी से भभूत बांटी जाती हो, जहां तुम्हें इस बात का भरोसा मिलता हो कि ठीक, जहां कुछ चमत्कार हो सकता है। जहां तुम्हारा मरता बुझता अहंकार प्रज्वलित हो उठे, जहां कोई तुम्हारी बुझती ज्योति को उकसा दे। वही तो नरक की ज्योति है। वही तो अंधकार है। उसी से बिंधे तो तुम पड़े हो। सद्गुरु उसे खींचेगा। उसके खींचने से ही तुम मरोगे। उसीके बाद तुम्हें पहली दफा उसका दर्शन होता है, जो वस्तुतः तुम हो। -ओशो

# देश में पहनावे की औपनिवेशिक मानसिकता



दिल्ली के एक रेस्तरां में एक महिला को साड़ी पहने होने की वजह से प्रवेश नहीं दिया गया। महिला को मैनेजर ने कहा कि साड़ी स्मार्ट कैजुअल ड्रेस कोड में नहीं आती है। महिला की ओर से एक वीडियो भी वायरल हुआ है, जिसमें यह घटना दर्ज है। महिला होटल के एक कर्मचारी से पूछती है कि क्या साड़ी की अनुमति नहीं है? कर्मचारी जवाब देता है कि साड़ी को स्मार्ट कैजुअल के रूप में नहीं गिना जाता है और रेस्तरां केवल स्मार्ट कैजुअल की अनुमति देता है।

दूसरी ओर, रेस्तरां ने अपने बयान में कहा है कि महिला ने उनके स्टाफ से झगड़ा किया, क्योंकि उन्हें अंदर जाने के लिए इंतजार करने को कहा गया था। उनका पहले से रिजर्वेशन नहीं था। रेस्तरां ने माफी भी मांगी है और कहा है कि मैनेजर ने ऐसा इसलिए कहा ताकि महिला चली जाए और स्थिति को संभाला जा सके। इस पर महिला का जवाब था कि हमारे देश में अगर साड़ी को स्मार्ट आउटफिट नहीं माना जाता, तो यह गंभीर चिंता का विषय है।

यह सिर्फ उनकी लड़ाई नहीं है, बल्कि साड़ी और मानसिकता की लड़ाई है। सोशल मीडिया से इंगित होता है कि इस पर लोगों में भारी नाराजगी है। इसके विरोध में महिलाएं साड़ी पहन कर पोस्ट कर रही हैं। लोग उस रेस्तरां को जीरो रेटिंग दे रहे हैं और बहिष्कार करने को कह रहे हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग ने इस मामले का संज्ञान लेते हुए दिल्ली पुलिस कमिश्नर को एक चिट्ठी लिखा है और रेस्तरां के अधिकारियों को भी तलब किया है। इस घटना के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने प्रदर्शन भी किया।

इसमें तो कोई दो राय नहीं हो सकती है कि हमारे कपड़े ही हमारी पहचान हैं। कम से कम शहरों में महिलाएं अपने पहनावे को लेकर आजाद हैं, लेकिन ड्रेस कोड बनाने और महिलाओं को उनके पहनावे के लिए निशाना बनाये जाने की भी घटनाएं होती रहती हैं। ऐसा नहीं है कि होटल और रेस्तरां में पहनावे को लेकर महिलाओं के साथ भेदभाव किया गया हो। कई बार पुरुषों के भी औपनिवेशिक मानसिकता का शिकार होने की घटनाएं हुई हैं।

अंग्रेज चले गये, लेकिन मानसिक गुलामी के उनके चिह्न आज भी देश में मौजूद हैं, जो ऐसी घटनाओं के रूप में सामने आते रहते हैं। यह एक घटना मात्र नहीं है, बल्कि मानसिकता का मामला है। हम एक ओर अंग्रेजों की गुलामी की प्रथाओं से मुक्त होने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हमारा एक वर्ग अब भी उन्हीं विचारों से जकड़ा हुआ है। कुछ समय पहले जाने-माने युवा लेखक

नीलोत्पल मृगाल को दिल्ली के राजीव गांधी चौक, जो कभी कर्नाट प्लेस कहलाता था, के एक रेस्तरां में जाने से इसलिए रोक दिया गया था कि उनके कंधे पर गमछा था।

साहित्य कला अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित नीलोत्पल मृगाल झारखंड से हैं। इस घटना की सोशल मीडिया पर भारी आलोचना हुई थी। उनके समर्थन में बड़ी संख्या में युवा और साहित्यकार आगे आये थे। दिल्ली का कर्नाट प्लेस का नाम भले ही राजीव चौक कर दिया हो, वह दिल्ली के अभिजात्य वर्ग के खरीदने-टहलने वाला इलाका रहा है। आजादी के 75 वर्ष बीत गये। इस दौरान बदलाव आया है, लेकिन मानसिकता में अब भी कुछ औपनिवेशिक तत्व मौजूद हैं। हम पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाये हैं।

हमारे अनेक विश्वविद्यालयों ने दीक्षांत समारोह में गाउन के स्थान पर भारतीय परिधान कुर्ता-पायजामा, साड़ी आदि का इस्तेमाल शुरू किया है। आइआईटी जैसे संस्थान भी इसे अपना रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी दीक्षांत समारोह में छात्राओं के लिए साड़ी और छात्रों के लिए कुर्ता पहना तय है। पूरे दक्षिण एशिया में साड़ी महिलाओं का परिधान है। चाहे बांग्लादेश हो, श्रीलंका हो अथवा पाकिस्तान, सब जगह साड़ी खूब पहनी जाती है।

मुझे लगभग एक दशक पहले एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल के साथ पाकिस्तान जाने का मौका मिला था। वहां मैंने पाया कि अधिकतर महिलाएं सलवार सूट पहनती हैं, लेकिन वे साड़ी भी पहनती हैं। इस्लामाबाद के जिस पांच सितारा सेरेना होटल में यह प्रतिनिधिमंडल ठहरा हुआ था, वहां कार्यरत महिलाओं के लिए ड्रेस कोड साड़ी था। यह सुखद आश्चर्य की तरह था कि वहां काम रहीं सभी महिलाएं साड़ी पहनी हुई थीं।

हालांकि हाल में पाकिस्तान में एक महिला सांसद जब साड़ी पहन कर संसद पहुंची थीं, तो उस पर आपत्ति की गयी थी। एमक्यूएम सांसद नसरीन जलील संसद में साड़ी पहन कर पहुंची थीं, जिस पर जमियत उलेमा-ए-इस्लाम फजल के एक सांसद ने कड़ी आपत्ति जतायी थी।

हमें यह याद रखना चाहिए कि हम गांधी की परंपरा के देश हैं और हाल में हमने गांधी की 150वीं जन्मशती मनायी है। वे 1888 में कानून के एक छात्र के रूप में इंग्लैंड में सूट पहनते थे, लेकिन भारत में उन्होंने एक-एक कर सभी वस्त्र त्याग दिये और सिर्फ धोती में दिखे। वर्ष 1917 में गांधी जी जब चंपारण पहुंचे, तब वे काठियावाड़ी पोशाक पहने हुए थे। जब उन्होंने सुना कि नील फैक्ट्रियों के मालिक निम्न वर्ग की औरतों और मर्दों को जूते नहीं पहनने देते हैं, तो उन्होंने तुरंत जूते पहनना बंद कर दिया।

दूसरी यात्रा में एक निधन महिला को अपना चोगा सौंप दिया था और इसके बाद उन्होंने चोगा ओढ़ना बंद कर दिया। जब वे 1918 में अहमदाबाद में मजदूरों की लड़ाई में शामिल हुए, तो उन्होंने देखा कि उनकी पगड़ी में जितना कपड़ा लगाता है, उसमें चार लोगों का तन ढका जा सकता है। उसके बाद उन्होंने पगड़ी पहनना छोड़ दिया था। आजादी की लड़ाई के दौर में नेताओं की पहली पसंद धोती-कुर्ता और गांधी टोपी थी और महिलाएं साड़ी पहनती थीं।

बाद में धोती-कुर्ता की जगह पायजामा-कुर्ता ने ले ली, लेकिन महिला नेताओं की पसंद साड़ी बनी रही। अगली पीढ़ी में गांधी टोपी का चलन धीरे-धीरे कम होने लगा। फिलहाल आप, सपा और कांग्रेस सेवा दल जैसे खास दलों व संगठनों को छोड़ कर अन्य दलों के कुछेक नेता ही टोपी पहनते हैं। पिछले पांच-सात साल में पहनावे का ट्रेंड बदला है। राजनीति की नयी पीढ़ी की पसंद अब पैट-शर्ट या सूट-बूट हो गया है, लेकिन अधिकतर महिला नेताओं की पसंद आज भी साड़ी है।

हम देश-काल और परिस्थितियों के अनुसार पहनावे के बारे में निर्णय लें, तो बेहतर होगा। हम आजादी के 75 साल पूरे होने पर अमृत महोत्सव मना रहे हैं। ऐसे में ऐसी घटनाएं चिंता जगाती हैं कि हम अभी तक औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त क्यों नहीं हो पाये हैं। इस पर व्यापक विमर्श की जरूरत है।

# प्राकृतिक आहार और न्यूट्रिशन

• डॉक्टर सुरधि नाईक, पीएचडी ड्यूट्रिशन  
टिथू सॉल्ट एक्सपोर्ट, 9823653511

**ज**ब हम न्यूट्रिशन की बात कहते हैं तब हमारे सामने आज कल बहुत ही अलग प्रकार के खानपान का चित्र दिखाई पड़ता है। न्यूट्रिशन शब्द आज कल काफी चलन में हैं लेकिन उसका सही मतलब समझ लेना जरूरी है। बहुत सारी ऐसी कंपनियां जो पावडर और अलग प्रॉडक्ट्स बनाती हैं जिनकी कारण न्यूट्रिशन का अर्थ ही बदलता दिखाई देता है। यह चलन इतना बदल गया है की प्राकृतिकता छोड़ कर 90 प्रतिशत लोग पावडर का प्रयोग कर वजन को घटाते और बढ़ाते हैं हलाकी वजन कम करना, घटाना, बढ़ाना न्यूट्रिशन नहीं है। डायट सप्लीमेंट की नाम से यह पावडरें बड़ी महंगी दाम उपर बेची और खरीदी जाती हैं। हम में से बहुत लोग इस बोटल पर लिखा हुआ लेबल पढ़ते ही नहीं, मात्र विज्ञापन ऊपर ध्यान देते रहते हैं। ऐसे में शरीर को होने वाले दुष्परिणाम तक हम नहीं जान पाते।

जब तक हम न्यूट्रिशन को सही तरह से समझ नहीं पायेंगे तब तक हम प्राकृतिक आहार के करीब कैसे जा सकते हैं? आज कल हम प्रकृति को भूलते चले जा रहे हैं। हम जितना प्रकृति से दूर जायेंगे उतना ही हम अलग अलग बीमारियों के शिकार बनते जायेंगे यह तो सुनिश्चित ही है। हम सभी प्रकृति का अंग हैं और इसी लिये हमें प्रकृति के साथ ही जाना चाहिए।

प्रकृति के पास जाना मतलब क्या करना है? क्या ऐसे में सही में हमारी इम्युनिटी बढ़ेगी? इम्युनिटी

क्या है? बॉटल की पावडर अगर न्यूट्रिशन नहीं है तो न्यूट्रिशन क्या है? इन सारी बातों को हम धीरे धीरे समझने की कोशिश आनेवाली लेखमालिका में करने वाले हैं। आज का यह लेख एक छोटासा परिचय स्वरूप होगा।

दोस्तो आप सोच रहे होंगे की आज से शुरू होने वाली लेखमालिका वास्तव में किस विषय पर आधारित है। आपके इस सवाल का जवाब देते हुए मैं चाहूंगी की अगर हम सभी लोग थोड़ासा जागृत रहकर अपने आसपास नजर डालते हैं तब हमें प्रकृति की कई ऐसी रचना दिखाई पड़ती है जिसका उपयोग करते हुए हम उचित आहार ले सकते हैं।

दोस्तो बात सिर्फ आहार की नहीं है, बात सिर्फ न्यूट्रिशन की नहीं है, बात है हमारे शरीर व मन को मिलने वाले परिणाम की भिंती है।

उम्मीद है यह परिचय आपको पसंद आया होगा। अगली लेख में न्यूट्रिशन के बारेमें सविस्तर जानकारी लेंगे। न्यूट्रिशन और डायटिंग में क्या फरक है यह भी जाना जरूरी है। डायटिंग है यह तो एक बहुत ही अलग विषय है। हमारे न्यूट्रिशन में योग्य चीजे कौनसी कौनसी होनी चाहिये, क्या खाना योग्य है क्या खाना योग्य है, दिन में कितनी बार खाना चाहिए, पानी कितना पिना चाहिये, और भी कई सारी ऐसी बातें सिखेंगे जो हम नहीं जानते हैं।

पढ़ते रहियेगा और अपने प्रकृति का खयाल रखते रहियेगा



# वजन घट-बढ़ रहा है ? कहीं थायराइड तो नहीं



क्या आपका वजन लगातार बढ़ रहा है या कम हो रहा है? कहीं आप थायराइड की चपेट में तो नहीं हैं? असल में थायराइड की बीमारी आजकल एक महामारी की तरह बढ़ चुकी है। हर घर में किसी न किसी को थायराइड की समस्या है। यह बीमारी ज्यादातर महिलाओं में देखने को मिलती है। हम कई बार बीमारियों को हल्के में लेते हैं और धीरे-धीरे यह बढ़कर कई तरह की गंभीर समस्याओं का रूप धारण कर लेती हैं। थायराइड की वजह से शरीर के हार्मोन्स भी अनियमित हो जाते हैं।

## क्या है थायराइड?

थायराइड एक तितलीनुमा ग्रंथि होती है, जो गले में स्थित होती है। थायराइड हमारे शरीर को संभालने का काम करता है। यह एक ऐसी ग्रंथि है जो मेटाबोलिज्म में मदद करती है। यानी हम जो भोजन ग्रहण करते हैं वह ठीक से पच जाय व स्कैन, किडनी और हार्ट ठीक से काम करें। इन सबको नियंत्रित करने का काम थायराइड करता है। इसका नियंत्रण हमारे दिमाग से होता है। हमारे दिमाग के अंदर हाइपोथैलिमस है। वह टीएसएच को रिलीज करने के लिए पीयूष ग्रंथि को सिग्नल देते हैं। ताकि थायराइड ग्रंथि टी3, टी4 को रिलीज करने में मदद करे। इसे रिलीज करने में जिसकी जरूरत होती है वह आयोडीन और पायरोसिन यानी प्रोटीन और टी4 को टी3 में बदलने के लिए हमें सेलेनियम चाहिए। अगर इन तीन चीजों की कमी होती है तो थायराइड के काम करने में रुकावट आती है। ऐसे में ये ग्रंथियां जरूरत से ज्यादा हार्मोन रिलीज करती हैं जिससे थायराइड की समस्या होने लगती है।

## दो तरह का होता है थायराइड

**हाइपो थायराइड** : इसमें सामान्य भोजन लेने के बाद भी वजन बढ़ता जायेगा, त्वचा में रूखापन, बाल झड़ना, शरीर फूलना, हर समय सुस्ती रहने और भूलने की समस्या आने लगती है। नसों का कमजोर होना और इन्फर्टैलिटी के लक्षण देखने को मिलते हैं।  
**हाइपर थायराइड** : इसमें वजन कम होने लगता है, सोने में कठिनाई, असामान्य तौर पर पसीना आना, छोटी-छोटी बातों में तनाव रहना, कांपना, भूख बहुत लगेगी, कितना भी खायें लेकिन वजन नहीं बढ़ेगा।

## ऐसे पहचानें लक्षण

कंधे में दर्द रहना व मासिक धर्म में समस्या होने लगती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है। थायराइड होने पर व्हाइट ब्लड सेल्स कम होने की आशंका होती है। थायराइड की वजह से कई महिलाओं में बार-बार गर्भपात और अनियमित मासिक धर्म की समस्या होती है। इसी कारण कई महिलाएं मां नहीं बन पाती हैं।



## क्या खायें क्या न खायें

हल्का फुल्का खाना खायें, ताजे फल, हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन अधिक करें। नट्स भिगोकर खायें। नॉनवेज बिल्कुल न लें। दूध और दूध से बने पदार्थों का सेवन कम कर दें। फूलगोभी, पत्तागोभी और ब्रोकली का सेवन थायराइड के मरीजों को बिल्कुल नहीं करना चाहिए। अपने भोजन में हाई फाइबर की मात्रा को बढ़ा दें और कार्बोहाइड्रेट की मात्रा को कम कर दें।  
एक्सरसाइज करें जैसे गर्दन की स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज करें। थायराइड ग्लैंड की हल्के हाथों से मसाज करें। सर्वांगासन, हलासन, प्राणायाम, कपालभाति जैसे योगासन करें।



# ये स्वास्थ्य की बात है...

**पि**छले भाग में हमने एक छोटासा परिचय देखा, जहां कुछ शब्द, जैसे की न्यूट्रीशन डायटिंग के बारे में भी हमने बात की। अब आगे चलते हैं।

अच्छा आहार क्या है, क्या खाना चाहिए, कैसे और कितना खाना चाहिए, ये सारी बातों पर आज थोड़ा विचार करते हैं। अभी कोरोना के चलते थोड़ा बहोत तो हम सभी ने समझ लिया होगा, फिर भी एक बार एक फास्ट रीवीजन कर लेते हैं।

हमारे को जीवन में सारे जीवनसत्वों का संतुलित प्रमाण होना आवश्यक होता है। कोई भी एक पोषकतत्व कम या जादा होने से आहार का संतुलन बिगड़ जाता है। घर में बने हुए सब्जी का उदाहरण लेकर हम समझ सकते हैं कि सब्जी में अगर नमक, शक्कर मिरची, पानी सही नहीं हुआ तो सब्जी में टेस्ट ही नहीं आयेगा, उसी प्रकार यह पोषक तत्व एक साथ मिलकर शरीर की जरूरत तो को पूरा करते हैं।

इनमें मुख्यतः कार्बोहायड्रेट, प्रोटीन, विटामिन्स, फॅट, मिनरल्स और पानी का समावेश होता है। अब बिलकुल ही संक्षिप्त में इन सभी पोषकतत्व का कार्य समझने की कोशिश करते हैं।

कार्बोहायड्रेट्स शरीर को ऊर्जा देने का कार्य करता है। प्रोटीन शरीर के टीशुज को मॅटेन करने का कार्य करता है। जखम भर के निकालने का कार्य प्रोटीन का है। जैसे फटे हुए कपड़ों को सीलाई या रफ्फु करके हम अच्छा बनाते हैं ऐसेही शरीर में अगर कुछ टूट जाता है तो उसे ठीक करने का काम प्रोटीन करता है। अब आते हैं विटामिन और मिनरल पर। विटामिन्स को वायटल पोषक तत्व कहा जाता है। मतलब ऐसा पोषक तत्व जो शरीर के लिये बहुत ही ज्यादा आवश्यक है। हमारा शरीर



छोटे छोटे पेशियों से बना हुआ है। यहाँ पेशिया अगर हेल्दी है तो हमारा शरीर भी हेल्दी रहता है। इन पेशियों को हेल्दी रखने में विटामिन्स बहुत ज्यादा कार्यकारी है। इन विटामिन्स को सही जगह पर पोहोचाना, शरीर में ऑक्सीजन का प्रमाण संतुलित रखना, शरीर के टीशूज में ताकत भरना, एसी छोटी लेकिन बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य में मिनरल्स का ही उपयोग होता है। और इन सभी को एक साथ मिलाकर डायजेस्टिव सिस्टीम में लाना शरीर में संतुलन बनाना, इत्यादी कार्य पानी के द्वारा किया जाता है।

ऐसा आहार जिसमें इन सारी पदार्थों हो का संतुलन हो ऐसी आहार को हम बैलन्स डाइट कहते हैं। यह बैलन्स किस तरह से बनाया जाये यह भी समझना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन उसके लिए यह समझना आवश्यक है की कौनसी खाद्यपदार्थ से हमें कौनसा पोषकतत्व मिलता है। अगर मोटा मोटी समझने की

कोशिश करे तो धान्य या अनाज से हमें कार्बोहाइड्रेट मिलता है, तेल, घी जैसे स्निग्ध पदार्थ से हमें फॅट मिलता है, दाल दूध दुग्धजन्य पदार्थ और नॉनव्हेज से हमें प्रोटीन की प्राप्ति होती है। हरी सब्जी या फल आदी से हमें विटामिन और मिनरल्स मिलते हैं। मिलेट्सस भी मिनरल्स का बहुत ही महत्वपूर्ण सोर्स कहलाया जाता है।

पुराने जमाने में खाये जाने वाले जवार बाजरा कोदो कुटकी आदी तुणधान्य मीलैट्स कहलाते हैं। आज कल हमारा आहार हमारे जीवन शैली के हिसाब से बहुत बदल गया है। हमारी पारंपारिक खाद्य शैली व जीवन शैली दोनों ही आज के जीवन शैली व खाद्य शैली से उच्चश्रेणी की थीं। यही वजह है की आज हमें बहोत से लोगों का सामना करना पड रहा है। हमने शरीर में कार्य करने वाले पोषक तत्व के बारे में समझने की कोशिश की है।

# 75 दिनों का 'विश्वप्रसिद्ध दशहरा'

## ■ कृपेन्द्र तिवारी

**भा** रतीय परिक्षेत्र में दण्डकारण्य भूमि, जिसे आज हम सभी बस्तर के नाम से जानते हैं, प्रभु श्री राम जी के द्वारा सर्वाधिक समय व्यतीत किये गए स्थल के रूप में लब्धप्रतिष्ठित है। वर्तमान का बस्तर निश्चित ही देश में अपनी नक्सल गतिविधियों के कारण चर्चित रहता है, लेकिन हम बस्तर भूमि की समृद्ध जनजातीय एवं साझा सांस्कृतिक विरासत को नजरअंदाज नहीं कर सकते। जनजातीय संस्कृति में मुख्य रूप से विश्वप्रतिष्ठित बस्तर के दशहरा का स्थान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। चूँकि यह भारतीय परिवेश में मनाए जाने वाले दशहरा पर्व से पूर्णतः भिन्न होती है। जिसमें रामायण महाकाव्य के अनुसार, न तो रावण का दहन होता है और न ही प्रभु श्रीराम जी के विजय का उत्सव, बल्कि यह आश्विन मास शुक्लपक्ष दशमी को माँ दुर्गा जी के द्वारा सामान्य जनमानस के रक्षार्थ हेतु किए गए अत्याचारी महिषासुर के शिरोच्छेदन से संबंधित है। बस्तर में दुर्गा माता के रूप में माँ दंतेश्वरी की पूजा की जाती है। बस्तर का दशहरा, सामान्यतः मनाये जाने वाले एक दिन के दशहरे की अपेक्षा 75 दिनों तक चलने वाला पर्व है, जिसमें मनाया जाने वाला रस्म मुख्यतः अनवरत रूप से तेरह दिनों तक चलता है।

इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बस्तर में आरूढ़ 'काकतीय वंश' से जुड़ी हुई है। बस्तर रियासत के राजा 'पुरुषोत्तम देव' के द्वारा पैदल मार्ग से चलकर जगन्नाथ पुरी की यात्रा की गई। यहां पुजारी ने राजा पुरुषोत्तम देव के समर्पण भाव से प्रसन्न होकर उन्हें 'रथपति' की उपाधि से विभूषित किया। जब पुरुषोत्तम देव का वापस बस्तर आगमन हुआ तो धूमधाम से बस्तर का दशहरा उत्सव मनाने की परंपरा प्रारंभ हुई, तभी से 'गौचा' अर्थात् दशहरा में रथचालन की परंपरा प्रारंभ हुई।

छत्तीसगढ़ के अंचल में मनाए जाने वाले प्रकृति पूजन का पर्व 'हरेली', जिसे श्रावण माह की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है, से 75 दिनों तक चलने वाली इस पर्व की शुरुआत 'पाट जात्रा' कार्यक्रम से होता है। आमावस्या को माचकोट जंगल (बस्तर) से लाई गई सात लकड़ियों के गोला की पूजा की जाती है, तत्पश्चात सात 'मांगुर मछलियों' की बलि चढ़ाई जाती है तथा लाई-चना अर्पित किया जाता है। इस लकड़ी से काष्ठकार्य में प्रयुक्त होने वाले औजार के बेंठ (हत्था) बनाकर रथनिर्माण की प्रक्रिया को प्रारंभ किया जाता है। रथ निर्माण का कार्य स्थानीय स्तर पर विशिष्ट ग्राम एवं समुदाय विशेष के व्यक्तियों द्वारा संपन्न किया जाता है। इस कार्य में श्रावण, भाद्रपद और आश्विन माह का प्रथम पक्ष (कृष्णपक्ष) व्यतीत हो जाता है।

आश्विन शुक्ल पक्ष के प्रथम तिथि प्रतिपदा, जिससे नवरात्र प्रारंभ होता है, से प्रथम रस्म 'काछिनगादी' प्रारंभ होती है, जिसमें एक विशिष्ट समुदाय 'महरा' की कन्या को 'काछिनदेवी' बनाकर गद्दी पर बैठाया जाता है, जो गद्दी विशेषतः बेल (बबूल) के कांटों से बनी होती है। आगे इस पर्व के सफलतापूर्वक संचालन एवं इसके निर्विघ्न

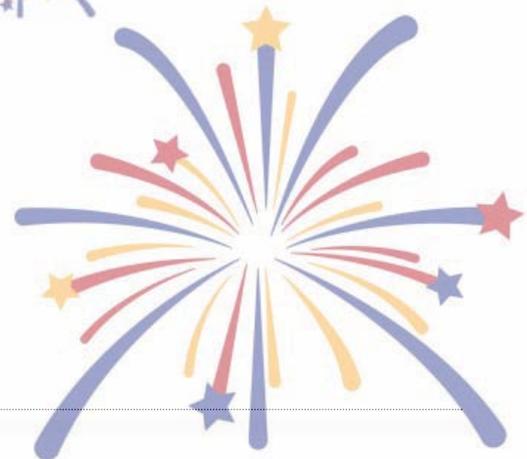


समापन हेतु 'हलबा' जनजाति के एक सदस्य को जोगी बनाकर, उसे 9 दिन का व्रत रखवाकर योग साधना में बैठाया जाता है, जिनके साधना का परिणाम दशहरा पर्व का निष्कंटक पूर्ण होना है।

माता सती के दौट के गिरने के कारण शक्तिपीठ के रूप में ख्याति प्राप्त 'माँ दंतेश्वरी देवी' बस्तर की कुलदेवी है, जो इनकी आराधना का केंद्र बिंदु है। रथयात्रा में माँ दंतेश्वरी के छत्र को रथारूढ़ कर नगर भ्रमण कराया जाता है जिसके चारों ओर 'गौर लोकनृत्य' करते हुए जनजाति समाज आनंदचिंत रहते हैं, इस गौर नृत्य को प्रसिद्ध मानवशास्त्री 'वेरियर एल्विन' ने संसार का सबसे 'सुंदरतम नृत्य' कहा है। इस प्रकार नौ दिन के नवरात्र पर्व के सफलतापूर्वक समापन पर 'जोगी उठाई' कार्यक्रम किया जाता है, जिसमें नौ दिन पूर्व बैठे जोगी को विशेष भेंट अर्पण कर योग साधना से उठाया जाता है और जोगी उठाने के पश्चात दंतेश्वरी में स्थित इष्ट देवी 'मावली माता' को पालकी में बिठाकर बस्तर लाया जाता है जिसे चार माड़िया जाति के व्यक्तियों द्वारा कंधे से उठा कर लाया जाता है। आगे नवरात्र का समापन होता है तथा विजया दशमी तिथि को 'भीतररैनी' अर्थात् रथ को नगर के भीतर

भ्रमण कराया जाता है और रथ को परिक्रमोपरांत प्रथा के अनुसार एक विशेष ग्राम 'कुम्हड़ाकोट' ले जाते हैं, जहां सभी नागरिकों को रूमाल व बीड़ा (पान) देकर सम्मानित किया जाता है। विजयादशमी के पश्चात आश्विन शुक्ल एकादशी को ग्राम के राजा के द्वारा नवोदित अन्न को प्रसाद के रूप में माँ को समर्पित किया जाता है।

पूरे पर्व का समापन समस्त समाज में समन्वय को स्थापित करने वाले बैठक के रूप में 'मुड़िया दरबार' आयोजित किया जाता है, जिसका आयोजन बस्तर अंचल के राजा के द्वारा किया जाता है। जिसमें ग्राम वासियों की सामान्य समस्याओं पर चर्चा कर उसका निराकरण किया जाता है। इस प्रकार इस आयोजन के अंत में दंतेश्वरी से लाई गई 'मावली माता' को पुनः विदाई सम्मान देते हुए दंतेश्वरी ले जाया जाता है जिसे स्थानीय स्तर पर 'ओहाड़ी रस्म' कहते हैं। इस प्रकार विश्वप्रसिद्ध बस्तर के दशहरा उत्सव सम्पन्न होता है।



# ‘‘देवोत्थानी एकादशी’’



कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी ग्यारस अथवा प्रबोधिनी एकादशी (देवोत्थानी एकादशी) का पावन पर्व मनाया जाता है। देवउठनी ग्यारस इस बार रविवार, 14 नवंबर को मनाई जाएगी। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को भगवान विष्णु चार माह के लिए सो जाते हैं और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागते हैं। चार माह की इस अवधि को चतुर्मास कहते हैं। देवउठनी ग्यारस के दिन ही चतुर्मास का अंत हो जाता है और शुभ काम प्रारंभ किए जाते हैं।

स्कंदपुराण के कार्तिक माहात्म्य में भगवान शालिग्राम (भगवान विष्णु) के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। हर साल कार्तिक मास की एकादशी को भक्त और व्रती प्रतीकात्मक रूप से तुलसी और भगवान शालिग्राम का विवाह करवाती हैं। इस बार 14 नवंबर को भगवान शालिग्राम और माता तुलसी का विवाह होगा। उसके बाद ही हिंदू धर्म के अनुयायी विवाह आदि शुभ कार्य प्रारंभ कर सकते हैं।

भगवान शालिग्राम और माता तुलसी के विवाह के पीछे की एक प्रचलित कहानी है। दरअसल, शंखचूड़ नामक दैत्य की पत्नी वृंदा अत्यंत सती थी। शंखचूड़ को परास्त करने के लिए वृंदा के सतीत्व को भंग करना जरूरी था। माना जाता है कि भगवान विष्णु ने छल से रूप बदलकर वृंदा का सतीत्व भंग कर दिया और उसके बाद भगवान शिव ने शंखचूड़ का वध कर दिया। इस छल के लिए वृंदा ने भगवान विष्णु को शिला रूप में परिवर्तित होने का शाप दे दिया। उसके बाद भगवान विष्णु शिला रूप में तब्दील हो गए और उन्हें शालिग्राम कहा जाने लगा। अगले जन्म में वृंदा ने तुलसी के रूप में जन्म लिया था। भगवान विष्णु

ने वृंदा को आशीर्वाद दिया कि बिना तुलसी दल के उनकी पूजा कभी संपूर्ण नहीं होगी।

भगवान शिव के विग्रह के रूप में शिवलिंग की पूजा होती है, उसी तरह भगवान विष्णु के विग्रह के रूप में शालिग्राम की पूजा की जाती है। नेपाल के गण्डकी नदी के तल में पाया जाने वाला गोल काले रंग के पत्थर को शालिग्राम कहते हैं। शालिग्राम में एक छिद्र होता है और उस पर शंख, चक्र, गदा या पद्म खुदे होते हैं।

श्रीमद देवी भागवत के अनुसार, कार्तिक महीने में भगवान विष्णु को तुलसी पत्र अर्पण करने से 10,000 गायों के दान का फल प्राप्त होता है। वहीं शालिग्राम का नित्य पूजन करने से भाग्य बदल जाता है। तुलसीदल, शंख और शिवलिंग के साथ जिस घर में शालिग्राम होता है, वहां पर माता लक्ष्मी का निवास होता है यानी वह घर सुखी-संपन्न होता है। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन देवउठनी एकादशी या देव प्रबोधिनी एकादशी का व्रत किया जाता है।

इस बार यह शुभ तिथि 14 नवंबर दिन रविवार को मनाया जाएगा। एकादशी के व्रत को व्रतराज की उपाधी दी गई है क्योंकि यह सभी व्रतों में सर्वश्रेष्ठ है और इससे सौभाग्य की प्राप्ति होती है। सनातन धर्म में देवउठनी एकादशी का विशेष महत्व है क्योंकि इस दिन भगवान विष्णु चतुर्मास की निद्रा से जागते हैं और अपने भक्तों पर कृपा बरसाते हैं।

भगवान के जागने से सृष्टि के तमान सकारात्मक शक्तियों का संचार होने लगता है। इस दिन भगवान विष्णु के जागने से देवतागण भी व्रत रखकर पूजन करने से कन्या दान के बराबर मिलता है फल। देवउठनी एकादशी को देव प्रबोधिनी और देवोत्थानी एकादशी के नाम से भी जाना

जाता है। इस दिन तुलसी विवाह के साथ मांगलिक कार्य शुरू हो जाते हैं।

मान्यता है कि जो व्यक्ति कन्या सुख से वंचित रहता है, उसको इस दिन तुलसी विवाह जरूर करना चाहिए क्योंकि इससे कन्या दान के बराबर फल मिलता है। इस वर्ष देव उठनी एकादशी पर कई बेहद शुभ संयोग बन रहे हैं।

इस वर्ष देव उठनी एकादशी 14 नवंबर को रहेगी। एकादशी का आरंभ 14 नवंबर की मध्यरात्रि 05 बजकर 448 मिनट से हो रहा है और समापन 15 नवंबर सुबह 06 बजकर 39 मिनट पर हो रहा है। इसके बाद द्वादशी तिथि का आरंभ हो जाएगा, जो 16 नवंबर की सुबह 07 बजकर 47 मिनट तक रहेगी। ऐसे में एकादशी का पूरे दिन 14 नवंबर को रहेगी। एक व्रत से कई लाभ इस एकादशी का पारण 15 नवंबर की सुबह 10 बजे तक किया जा सकता है। एकादशी का व्रत करने वाले द्वादशी तिथि को भी व्रत के कुछ नियमों का पालन करना होता है, जिनमें एक नियम यह भी है कि व्रती को द्वादशी के दिन सोना नहीं चाहिए। अगर आपको नींद आ रही है तो सिरहाने के पास एक तुलसी दल रख लें। मोक्ष के साथ धन लक्ष्मी की कामना करने वाले देव प्रबोधिनी एकादशी के दिन दिवाली की तरह घर की साफ-सफाई करनी चाहिए और इन शुभ योगों के बीच पूरी रात लक्ष्मी नारायण की पूजा करनी चाहिए और अखंड दीपक जलाना चाहिए। दिवाली की तरह इस दिन भी घर के आसपास दीपक जलाना चाहिए।

देवउठनी ग्यारस के दिन व्रती प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर व्रत और पूजा का संकल्प लें। उसके बाद पूजा स्थल पर बैठकर भगवान विष्णु के चरणों में धूप, दीप, नैवेद्य, फल, फूल आदि अर्पित करें।

हिमांशु मिश्रा की कलम से...

# शेरशाह शहीद विक्रम बत्रा को श्रद्धांजलि



12 अगस्त 2021 को अमेज़ॉन प्राइम पर रिलीज़ हुई 'शेरशाह' भारतीय नौजवान सैन्य अधिकारी की वास्तविकता जीवटता और पराक्रम पर आधारित कश्मीर और कारगिल युद्ध के संघर्षों की फिल्म है, जो विष्णुवर्धन द्वारा निर्देशित और संदीप श्रीवास्तव द्वारा लिखी गई है।

जब आपके साथ ही खेला, पढ़ा, बड़ा हुआ साथी बहुत ही बड़ा काम कर अमर हो जाए तो आप गौरवान्वित तो होते ही हैं अपितु अपने को भाग्यशाली भी समझते हैं कि आप के ही एक साथी ने अपने जीवन को सार्थक भी किया और अनेकोनेक नवयुवकों के प्रेरणा स्रोत भी वह रहे। मैंने कभी फिल्म समीक्षा नहीं लिखी, लेकिन जो जिंदगी के बहुत करीब की घटनाएं थीं उन्हें फिल्म में देख कर खुद को रोक नहीं पाया।

सिद्धार्थ मल्होत्रा ने दोहरी अदाकारी में लव यानी विक्रम बत्रा और जुड़वां भाई कुश यानी विशाल बत्रा की भूमिका शिद्द से निभाने के प्रयास किया है, कहीं कहीं तो वास्तविकता के बहुत नजदीक दिखे लेकिन कई जगह विक्रम के महान चरित्र से छेड़छाड़ होती दिखी। विक्रम की प्रेमिका डिंपल चीमा की भूमिका में कायिरा आडवाणी निसन्देह बेहतरीन रही हैं।

हिंदी फिल्म के भांति यह फिल्म भी प्लैश बैक में दर्शायी गयी है, जिसकी शुरुआत में विशाल बत्रा (सिद्धार्थ मल्होत्रा) अपने भाई के जीवन पर प्रेरणा दायिक सम्बोधन दे रहे हैं। विक्रम बत्रा को टेबल टेनिस खेलने का शौक था एक बेहतरीन खिलाड़ी होने के कारण वो नेशनल भी खेले थे। सत्री अमित सूद उनका टेबल टेनिस में जोड़ीदार थे। हम क्रिकेट भी साथ खेलते थे और फिल्म की शुरुआत में ही पालमपुर की गलियों में अन्य बच्चों की भांति विक्रम बत्रा क्रिकेट खेल रहे दर्शाये गए हैं। जब कुछ उम्रदराज बच्चे उसकी गेंद ले जाते हैं। बहुत छोटा होने के बावजूद, विक्रम अपने निडर स्वभाव का खुलासा करते हुए गेंद को छीनने लगते हैं और जिद्द एवम जूनून के कारण गेंद को छीन लेते हैं। इसी जिद्द और जूनून के साथ पूरी फिल्म में उनके चरित्र को उकेरा गया है जो असली जिंदगी में फिल्म के कथानक से कहीं अधिक था।

विक्रम विशाल के पुराने घर को फिल्म में बहुत ही बढ़िया ढंग से दर्शाया गया है। फिल्म देखते देखते उनके जन्म दिनों में शामिल होना, मौज करना सब याद आ गया। आखिर प्रणय नारंग का जन्म दिन 6 सितम्बर को, विक्रम विशाल का 9 सितम्बर को और मेरा 13 सितम्बर को होता था। टीवी श्रृंखला परमवीर चक्र ने उन्हें भारतीय सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

लेफ्टिनेंट विक्रम बत्रा की सोपोर, जम्मू और कश्मीर में तैनाती और डेल्टा कंपनी, 13 वीं बटालियन, जम्मू और कश्मीर राइफल्स (13 JAK RIF) के दिनों की जैसी

चर्चा शहीद विक्रम ने सत्री अमित सूद और मुझ से जॉय रेस्टॉरेंट में कारगिल में जाने से पहली की थी वो फिल्म में पूरी तरह दर्शाई गई है। अपने साथी सैनिकों अफसरों के साथ-साथ स्थानीय लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध विकसित करने की कला के कारण ही अदम्य साहस वीरता और नेतृत्व क्षमता की इबारत विक्रम बत्रा ने लिखी थी। आतंकवाद विरोधी अभियान के दौरान, विक्रम अपने सीओ लेफ्टिनेंट संजीव जामवाल (शिव पंडित) के आदेशों को न मानते हुए भी हमलावर आतंकवादियों पर गोलियां चलाता है। जबकि कंपनी के लोग उसकी बहादुरी की प्रशंसा करते हैं, जमवाल उसे फटकार लगाते हैं। पालमपुर के पास ही मलां के निवासी संजीव जमवाल ओपरेशन में अपनी जान बचाने और विक्रम की हाज़िर जवाबी के कायल हो जाते हैं और दोनों के बीच प्रगाढ़ रिश्ता बन जाता है।

फिल्म में 1995 के कॉलेज के दिनों को भी दर्शाया गया है, जब विक्रम चंडीगढ़ में पढ़ते थे और डिंपल से उनकी मुलाकात हुई थी। वे शादी करने का फैसला करते हैं, हालांकि डिंपल के पिता बत्रा को पंजाबी खत्री होने के लिए स्वीकार करने से इनकार करते हैं जबकि डिंपल एक सिख हैं। अपने पिता को खुश करने के लिए, बत्रा ने अपने सेना के सपने को छोड़ने और मर्चेन्ट नेवी में शामिल होने का फैसला किया, जिसका वेतन अधिक है। हालांकि उसका दोस्त सनी (साहिल वैद) उसे एक लड़की के लिए अपना सपना नहीं छोड़ने के लिए मना लेता है। विक्रम के जिंदगी का यह पहलू मुझे भी मालूम न था और हां न तो कभी खुद विक्रम ने और न ही सत्री, विशाल, प्रणय नारंग ने भी यह चर्चा मुझे से न करी।

कारगिल युद्ध से पहले 13 JAK के हमारे सैनिक हैदर आतंकवादी सरणा के एक गुर्गे को पकड़ लेते हैं। कब्जा करने के प्रतिशोध में, हैदर ने एक योजना बनाई और विक्रम की इकाई 13 जेएके को एक साजिश के तहत इनपुट दिलवाते हैं, जिस के कारण बड़ी संख्या में हथियार बरामद किए गए लेकिन अपने मुख्यालय में वापस लौटने पर, टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया गया और विक्रम के एक आदमी को फिर में गोली लग गयी। अपने साथी की मौत से विक्रम प्रतिशोध की ज्वाला में धधक रहा था, विक्रम का मानना था कि गोली उसको मारी गयी थी, उसने प्रतिज्ञा की कि अब से उसकी कंपनी में कोई भी नहीं मारा जाएगा। अपने आदमियों की मौत का बदला लेने के लिए, विक्रम को एक स्थानीय कश्मीरी लड़के से एक जानकारी मिली। जानकारी के अनुसार एक और ऑपरेशन तय किया गया, विक्रम को इस मिशन का कमांडर बनाया गया। गोलाबारी और आमने-सामने की लड़ाई के बाद, विक्रम कश्मीर के आतंक के आका हैदर की कहानी समाप्त करने में कामयाब हो जाता है। उनकी पूरी बटालियन को उनकी उपलब्धि पर

बहुत गर्व था और उन्हें अपने परिवार से मिलने के लिए एक छोटी छुट्टी दी गई थी। छुट्टी के अंतिम दिन की मुलाकात आज भी याद है, जॉय रेस्टॉरेंट के अंतिम टेबल में विक्रम, सनी और मैं शाम चार बजे से रात 9 बजे तक बैठे रहे थे। तब तक कैप्टन सौरभ कालिया की खबरे छन छन कर आ गयी थी, तब ही तो विक्रम ने हंसते हंसते कहा था या तो तिरंगा लहरा कर आऊंगा या तिरंगे में लिपट कर आऊंगा। हंसते हंसते जिस संजीदगी से विक्रम बोल गया था, मुझे मालूम न था कि राष्ट्र भक्ति की अंदर ही अंदर उसके अंदर बहुत तेज ज्वाला जल रही थी।

विक्रम और उनकी यूनिट घूमरी बेस पर पहुंचते हैं, जहां उनका काम आदत डालना और आगे के आदेशों की प्रतीक्षा करना था। उन पर पाकिस्तानी सेना द्वारा हमला किया जाता है और कैप्टन अजय सिंह जसरोटिया (निकितिन धीर) उर्फ जस्सी की इस प्रक्रिया में मौत हो जाती है, जो विक्रम और संजीव दोनों को तोड़ देता है, लेकिन उन्हें अपना प्रतिशोध लेने के लिए प्रेरित भी करता है। 13 JAKRIF अब एक आरक्षित बल नहीं था जिसका अर्थ है कि वे युद्ध में जा रहे थे और यूनिट के सभी अधिकारियों को कोड नाम दिए गए थे, जिसमें विक्रम का 'शेरशाह' था। उन्हें 17000 फीट पर पाइंट 5140 को पुनः प्राप्त करने का कार्य दिया गया और वे ऐसा करने में सफल रहे। अपने कर्तव्य के प्रति विक्रम की अनुकरणीय भक्ति और फीचर को सफलतापूर्वक पकड़ने के लिए, उन्हें युद्ध भूमि में ही लेफ्टिनेंट से कप्तान के रूप में पदोन्नत किया गया और उनका नाम महावीर चक्र के लिए अनुमोदित किया गया था। विक्रम की यूनिट को अब युद्ध की सबसे कठिन चोटी, पाइंट 4875 पर कब्जा करने का काम दिया गया था और इसे फिर से हासिल करने की लड़ाई के दौरान, उनकी यूनिट का एक सैनिक यशपाल गंधीर रूप से घायल हो गया था। विक्रम उसे बचाने का फैसला करता है। एक अन्य सैनिक को बचाने के दौरान, विक्रम को एक स्नाइपर द्वारा गोली मार दी जाती है लेकिन फिर भी वह लड़ने के लिए खड़ा होता है। उसे कुछ और बार गोली मारी जाती है और नीचे गिर जाता है जबकि भारतीय सैनिक चोटी पर फिर से कब्जा कर लेते हैं और भारतीय ध्वज फहराते हैं। विक्रम देखता है और उसकी मृत्यु को मुस्कराते हुए देखता है और उसे मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया जाता है, जो भारत का सर्वोच्च युद्ध वीरता पुरस्कार है। विक्रम ने मात्र भूमि की रक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके बैकूंट गमन की अंतिम यात्रा में सैन्य अधिकारियों ने परिजनों के साथ मुझे सत्री और अजय सूद को भी पार्थिव देह के साथ गाड़ी में साथ ही थी। तब एक बैनर बनाया था जो आज आपके साथ साझा कर रहा हूँ। 'अब तो अमर तिरंगा ले कर राबलपिंडी जाने दो अब तो खुल कर रण चंडी को अपने जोहर दिखलाने दो।'

# यश ने रानी के पैरंट्स को कमरे में किया कैद



रानी मुखर्जी ने यह किस्सा एक इंटरव्यू में सुनाया था। रानी ने बताया था कि वह 8 महीनों तक घर पर बैठी थीं और फिल्में रिजेक्ट किए जा रही थीं। जब 'साथिया' को उन्होंने मना किया तो यश चोपड़ा ने उनके माता-पिता को कमरे में लॉक कर लिया। ऐक्ट्रेस रानी मुखर्जी ने अपने 25 साल लंबे करियर में दिवंगत फिल्ममेकर यश चोपड़ा की कई फिल्मों में काम किया था। लेकिन एक बार कुछ ऐसा हुआ था कि यश चोपड़ा ने रानी मुखर्जी के माता-पिता को कमरे में कैद कर दिया था। उन्होंने रानी से भी कह दिया था कि वह बहुत बड़ी गलती कर रही हैं।

रानी मुखर्जी ने यह किस्सा न्यूज 18 को दिए एक इंटरव्यू में बताया था। रानी ने बताया था कि फिल्म 'मुझसे दोस्ती करोगे' के बाद वह लगातार फिल्मों को मना किए जा रही थीं और कोई ऑफर स्वीकार नहीं कर रही थीं। उस दौरान उन्हें करीब 8 महीनों तक बिना काम के घर बैठना पड़ा था।

लेकिन तभी उन्हें फिल्म 'साथिया' का ऑफर मिला। चूंकि रानी कोई ऐसी फिल्म करना चाहती थीं जिसमें उनका दिल विश्वास करे।

रानी ने इंटरव्यू में बताया था कि उस दौरान समीक्षकों और पत्रकारों ने उनके बारे में लिखना तक बंद कर दिया था। उन्हें लगने लगा था कि रानी मुखर्जी का करियर अब खत्म हो चुका है। पर रानी ने फैसला कर लिया था कि वह वही फिल्म करेंगी जिसे करने में उनका दिल लगेगा।

रानी ने बताया था कि उनके माता-पिता यश चोपड़ा से मिलने गए थे। वो उन्हें यही बताने गए थे कि रानी इस फिल्म को करने की इच्छुक नहीं हैं। लेकिन यश चोपड़ा ने रानी को फोन किया और कहा कि वह बहुत बड़ी गलती कर रही हैं। यश चोपड़ा ने रानी से यह भी कहा कि वह उनके माता-पिता को उसी कमरे में बंद कर रहे हैं, जिसमें वह हैं। वह कमरा तब तक नहीं खोलेंगे जब तक रानी फिल्म के लिए 'हां' नहीं कह देंगी।

## कंगना रनौत शादी करने वाली हैं

बालीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत से जब समित के दौरान एंकर ने सवाल किया कि वह अपने आपको आने वाले पांच सालों में कहा देखती हैं। जिस पर कंगना रनौत ने जवाब दिया कि वह अपने मां और पत्नी के रूप में देखती हैं।

बालीवुड एक्ट्रेस कंगना रनौत अपने बेबाक बयानों के लिए हमेशा सुर्खियों में बनी रहती हैं। बेबाकी से बयान देने के अलावा कंगना रनौत सिनेमा की दुनिया की शानदार और बेहद टैलेंटेड एक्ट्रेस में से भी एक हैं। कंगना को हाल ही में पद्मश्री अवार्ड से भी नवाजा गया है। सामाजिक मुद्दों पर सोशल मीडिया पर अपनी राय देने वाली कंगना रनौत ने इस बार अपनी निजी जिंदगी को लेकर कुछ खुलाले किए हैं। इन खुलासों के कारण सोशल मीडिया पर कंगना को लेकर एक बार फिर चर्चा हो रही है। दरअसल कंगना रनौत ने खुलासा किया है कि वह प्यार में हैं और आने वाले पांच सालों में वह अपने आपको एक मां और पत्नी के रूप में देखती

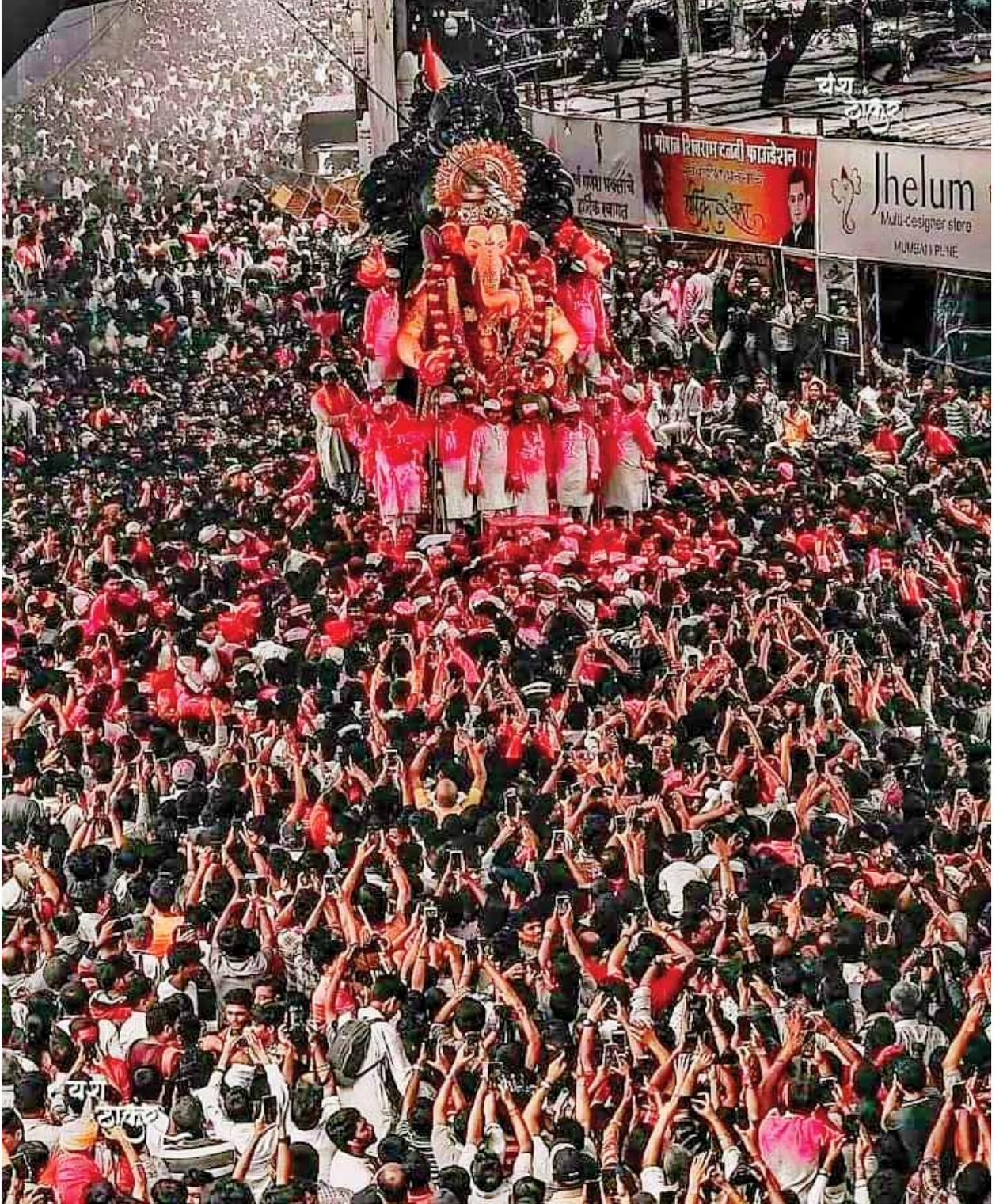
हैं। कंगना ने टाइम्स नाउ को दिए एक इंटरव्यू में कहा, 'मैं निश्चित रूप से शादी करना चाहती हूँ और बच्चे पैदा करना चाहती हूँ। मैं खुद को पांच साल से एक मां के रूप में और एक पत्नी के रूप में देखती हूँ, और निश्चित रूप से एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भी, जो नए भारत के दृष्टिकोण में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है।' कंगना रनौत से जब समित के दौरान एंकर ने सवाल किया कि वह अपने आपको आने वाले पांच सालों में कहा देखती हैं। जिस पर कंगना रनौत ने जवाब दिया कि वह अपने मां और पत्नी के रूप में देखती हैं। उन्होंने कहा कि मैं भी शादी करना चाहती हूँ और हर इंसान की तरह अपना घर बसाकर बच्चे भी करना चाहती हूँ। इसके अलावा मैं अपने आपको बदलते भारत के नये स्वरूप में भाग लेता देखती हूँ। कंगना रनौत के इस खुलासे के बाद एंकर ने कंगना से पूछा कि वह आखिर किससे शादी कर रही हैं।



पांच सालों की  
प्लानिंग का खुद  
किया खुलासा

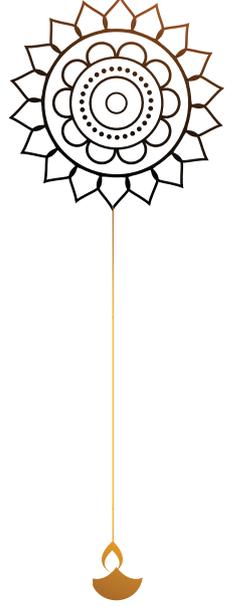
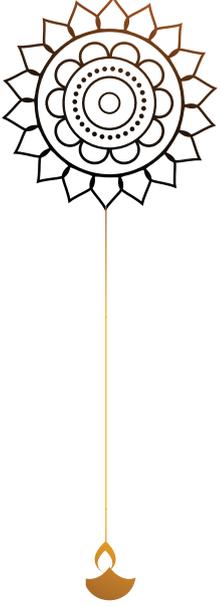
श्री गणेशाय नमः

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।  
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥



**भावार्थ :** विघ्नेश्वर, वर देने वाले, देवताओं को प्रिय, लम्बोदर, कलाओं से परिपूर्ण, जगत् का हित करने वाले, गजके समान मुखवाले और वेद तथा यज्ञ से विभूषित पार्वतीपुत्र को नमस्कार है ; हे गणनाथ ! आपको नमस्कार है ।

# लक्ष्मी मन्त्र का जाप अपनी सुविधनुसार करे...



॥ ॐ श्रीं हीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥

जप समर्पण -

(दाहिने हाथ में जल लेकर मंत्र बोलें एवं जमीन पर छोड़ दें)

॥ ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं,  
सिद्धिर्भवतु मं देवी त्वत् प्रसादान्महेश्वरि ॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि । यत्युजितं मया देवी परिपूर्ण तदस्तु मे ॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः क्षमायाचनां समर्पयाम!!

ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु पूजन का समय

सायं काल 05-43 08-18 तक प्रदोष काल

तथा सायं 06-33 08-20 तक वृषभ लग्न अति उत्तम मुहुर्त है ।